हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जून, 2007 वर्ष 6 अंक 04

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

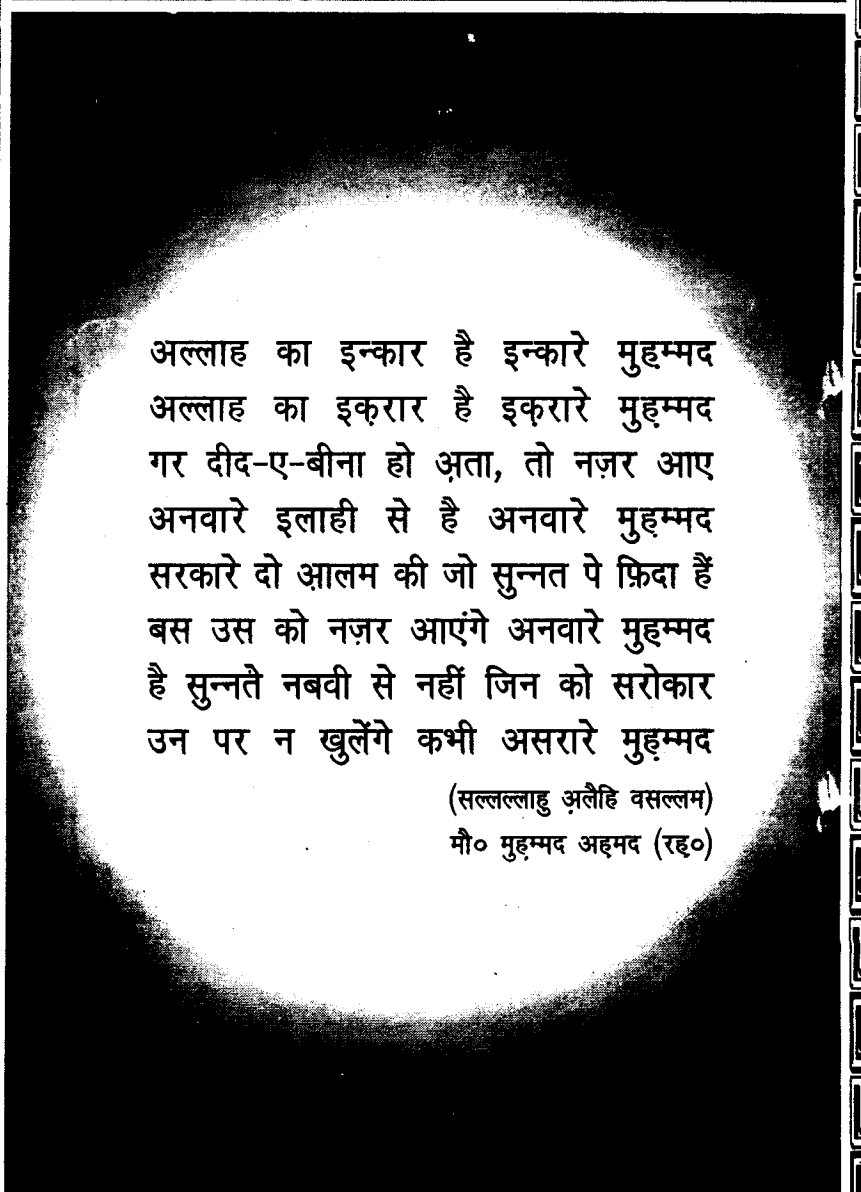

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐ ग़ैर मुस्लिम और इस्लाम	सम्पादकीय	3
❐ कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंज़ूर नोमानी	5
❐ प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
❐ हिन्दोस्तानी उलमा के इल्मी कारनामे	मौ० स० अबुल हसन अली हसनी	8
❐ भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबुल फ़ज़्ल नदवी	9
❐ मय्यित के हुकूक	इदारा	12
❐ सच्चा दीन इस्लाम	अबू मर्गूब	14
❐ एकेश्वरवाद की महत्वा	जमील अहमद खां	16
❐ अल्हम्दुलिल्लाह	इदारा	19
❐ आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	20
❐ नानो टिक्नोलोजी	औसाफ अहमद	22
❐ धूर्वी पर्यावरण पर रिसर्च	मु० हसन अन्सारी	23
❐ लकवा	इदारा	24
❐ दुआ	महरून	25
❐ भारतीय इतिहास	प्रो० नेत्र पाण्डेय	26
❐ मूसा अलैहिस्सलाम और फिरऔन	अबू मर्गूब	29
❐ करैला	शमीमा बानो	32
❐ नअ़त	शहीब अहमद	32
❐ कुछ रेलवे की जानकारी	इदारा	33
❐ उर्दू अल्फ़ाज़ हिन्दी लिपि में	सम्पादक	34
❐ अरबी मदरसों में अध्यापकों का प्रशिक्षण	डा. एस. नसीम आजमी	36
❐ नबी (सल्ल०) के आखिरी हज का खुत्बा	हबीबुल्लाह आजमी	38
❐ टेलीविजन (पद्य)	शमीम बहराइची	39
❐ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी	40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

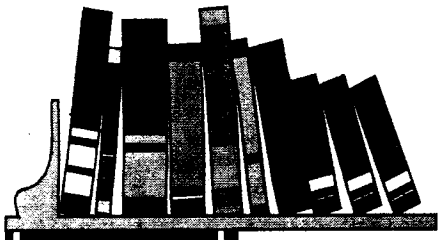

ग़ैर मुस्लिमीन और इस्लाम

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

अख़बारों में पढ़ते और आने जाने वालों से सुनते कि अमरीका और यूरोपियन मुल्कों में जब से इस्लाम दुश्मनी की लहर चली है वहां का पढ़ा लिखा तब्क़ा इस्लामी मअ़लूमात बल्कि क़ुर्आनी तअ़लीमात जानने की तरफ़ मुतवज्जेह है और क़ुर्आने शरीफ़ के तर्जमों की मांग बहुत बढ़ चुकी है। मैं समझता था कहीं यह प्रोपैगन्डा तो न हो, लेकिन अब तो ख़ुद से साबिक़ा है।

एक गैर मुस्लिम डाक्टर ने मुझ से सुवाल किया :

क्या आप के क़ुर्आन में यह लिखा है कि हिन्दू काफ़िरों को जहां पाओ क़त्ल कर दो इन को क़त्ल करने के लिए घात लगा कर इन के रास्तों में बैठो।

मैंने जवाब दिया कि इस ग़लत फ़हमी को हमारा रब ज़रूर दूर करेगा हमारी कोई कोशिश काम न आएगी, इस लिए कि शैतान ने बड़ी होशियारी से यह ग़लत फ़हमी पैदा की है और बड़ी होशियारी से इस का प्रोपैगन्डा कर रहा है।

डाक्टर साहिब के सुवाल पर मैंने बताया कि शैतान एक जिन्नी ताक़त है जो हमारी आखों से ओझल है, वह भी अल्लाह की मख़लूक़ है। अल्लाह तआ़ला ने मस्लहतन उस को छूट दे रखी है, उस की पहुंच दिल तक है, दिल में जब बुरा ख़याल आये तो समझ लेना चाहिए कि शैतानी कोशिशों से है।

डाक्टर साहिब : अच्छा तो यह बताइये उस ने क्या ग़लत फ़हमी पैदा की है?

मैं : क़ुर्आन मजीद अल्लाह का कलाम है, अल्लाह तआ़ला ने उसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा ख़ुद लिया है इस लिए अगर सारी दुन्या के इन्सान मिल कर उसे मिटा देना चाहें या बदल डालना चाहें तो न मिटा सकते हैं न बदल सकते हैं, मिटाने वाले ख़ुद मिट जाएगें बदलने वाले ख़ुद बदल जाएंगे क़ुर्आने मजीद का एक एक हरफ़ बल्कि उस के ज़बर ज़ेर, पेश और नुक़ते भी न बदले जा सकेंगे हम बदलने की कोशिश करेंगे तो हम उससे महरूम (वंचित) कर दिये जाएंगे अल्लाह के दूसरे बन्दे उसे सीने से लगाएंगे यह अल्लाह का इन्तिज़ाम है।

क़ुर्आने मजीद में जहां मुशरिकीन की घात में बैठने और उन को क़त्ल करने का हुक्म है वह वह मुशरिकीन हैं जिन्होंने मुसलमानों पर अपने मज़ालिम की हद कर दी थी, ज़रा सोचिए हज़रत बिलाल को रस्सी में बांध कर अरब की सख़्त धूप में पथरीली रेतीली जमीन पर घसीटना फिर सीने पर भारी पत्थर रख देना, हज़रत ख़ब्बाब को दहकते कोयलों पर लिटा देना, हज़रत सुमय्या (स्त्री) की शर्मगाह में बर्छा मार कर शहीद कर देना, ख़ुद अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल के इरादे से घर घेर लेना मअ़मूली ज़ुल्म है, डाक्टर साहिब आप खुद बताएं ऐसे ज़ालिमों के बारे में आप की क्या राए है। क़ुर्आन मजीद का जो हुक्म आप ने सुना है वह उन्हीं जैसे ज़ालिम मुशरिकों के लिए था, ऐसे अहकाम (आदेश) क़ुर्आन मजीद में जहां भी है वह उन्हीं जैसे जालिमों के लिये हैं और क़ुर्आन मजीद में इस लिए महफ़ूज हैं ताकि आइन्दा भी ऐसे ज़ालिमों से साबिका पड़े और ताक़त हो तो हुक्म मौजूद है। यह हुक्म हिन्दू भाइयों बल्कि

दोसरे ग़ैर मुस्लिमों के लिये हरगिज़ नहीं है, लेकिन शैतान के चेले सिर्फ़ जिन्नात में ही नहीं हैं, इन्सानों में भी हैं, जिन्होंने यह ग़लत फ़हमी पैदा कर के एड़ी चोटी से प्रोपैगन्डे में लगे हुए हैं लेकिन अगर हम अपना तअ़ल्लुक़ अपने रब से क़ाइम रखेंगे तो शैतान मुंह की खाएगा उसकी और उसके चेलों की सारी मेहनत बेकार जाएगी। फिर डाक्टर साहिब! आप ने सोचा कि उस वक़्त के मुसलमानों का क्या क़ुसूर था और आज के मुसलमानों का क्या क़ुसूर है? सिर्फ़ यह कि हम मुसलमान कहते हैं कि इस संसार का बनाने वाला सिर्फ़ एक है और वही इबादत (पूजा) के लाइक़ है दूसरा और कोई नहीं और यह सच्ची और पक्की बात हम को उस के दूत (रसूल) हज़रत मुहम्मद साहिब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से मअ़लूम हुई है। डाक्टर साहिब! इस सत्य में ऐसी कशिश (आकर्षण) और ताक़त है कि इसे स्वीकार करते ही इन्सान की दुन्या बदल जाती है फिर वह इन्सान आग में जलना, तल्वार से कटना, गोली से भुनना बर्दाश्त कर लेता है लेकिन "अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं और मुहम्मद उस के अन्तिम रसूल (दूत) हैं।" सत्य प्रण और सत्य बचन से नहीं फिरता, डाक्टर साहिब ! ऐसा भी नहीं कि यह धर्म उस के बाप दादा से मिला है इस लिए वह इस में स्टिक है। आप देखिये फ़िरऔन के जादूगर जब मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके रब पर ईमान लाए थे तो फ़ौरन उनके हाथ पांव काट कर फांसी का हुक्म हुआ था, लेकिन वह नव मुस्लिम हक़ पर जम गये जान देकर शहीद हो गये पर हक़ से न डिगे, आप ने देखा हज़रत बिलाल, हज़रत ख़ब्बाब, हज़रत सुमय्या और हज़रते यासिर का ख़ान्दान यह सब नव मुस्लिम थे अल्लाह ने इन की कैसी मदद फ़रमाई और कैसे जमे रहे।

डाक्टर साहिब मेरी यह बातें सुन कर कुछ सोच में पड़ गये फिर उन्होंने सुवाल किया।

सुना है जो शख़्स मुसलमान होना चाहता है तो आप के मौलाना लोग उसको भैंसे का गोश्त खिलाते हैं और उसका ख़त्ना करवाते हैं। क्या यह सहीह है?

मैं : बिल्कुल ग़लत है और कहीं अगर इस तरह की बात हुई है तो वह निरी जिहालत है इस्लाम से इस का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। पहली बात तो यह कि जिन मौलाना लोगों का इस्लामी इल्म (ज्ञान) पक्का है वह किसी को मुसलमान नहीं करते वह इस्लाम का सहीह परिचय देते हैं और इस्लामी अख़लाक़ और इस्लामी मुआशरत का नमूना पेश करते हैं इस लिए कि उन को तो क़ुर्आन हुक्म ही दे रहा है।

क़ुलिल्हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम फ़मन् शाअ फ़ल्यूमिन व मन शाअ फ़ल्यक्फ़ुर" (अपने रब की ओर से सत्य पहुंचा दे फिर जिस का जी चाहे माने जिस का जी चाहे इन्कार करे" बस जिस की समझ में "लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि" का सत्य आ गया उस के मन ने इस को मान लिया वह मुसलमान है, मौलवी लोगों का इस में क्या दख़्ल? रहा भैंसे का गोश्त तो अल्लाह ने अपने दूत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) द्वारा उसे हलाल किया है पस उस को हलाल जानना ज़रूरी है, उसे हराम न कहे, लेकिन उस की तबीअ़त नहीं चाहती तो वह जिन्दगी भर न खाए उस के इस्लाम में कोई फ़र्क़ नहीं आता। रही बात ख़त्ने की तो वह तो मुसलमानों को हुक्म दिया गया है कि वह अपने बच्चों का ख़त्ना कराएं यह नहीं कहा कि जो बड़ा इस्लाम लाए अब वह ख़त्ना कराए, फिर ख़त्ने के फ़ाइदे तो आज कल डाक्टर लोग ख़ुद ही बयान कर रहे हैं।

डाक्टर साहिब ने मअ़लूम किया कि क़ुर्आन शरीफ़ की जिन आयतों पर एअतिराज़ किया जा रहा है उन को समझने के लिए किन किताबों से मदद ली जाए ? मैंने कहा :

अस्ल में क़ुर्आन शरीफ़ की तफ़्सीरें (टीकाएं) अरबी में हैं, कुछ उर्दू में भी हैं, हिन्दी या

(शेष पृष्ठ ७ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

दोजख का हाल :

तर्जमा : ऐ ईमान वालो ! तुम अपने को और अपने घर वालों को दोजख की उस (खौफ नाक और तबाह कुन) आग से बचाओ जिस का ईधन आदमी और पत्थर हैं, जिस पर कठोर और तेज़ मिज़ाज फरिश्ते मुकर्रर हैं जो अल्लाह के दिये हुए हुक्म की ज़रा ना फर्मानी नहीं करते और उनको जो हुक्म दिया जाता है बिल्कुल वही करते हैं (इसलिए उन से इस की बिल्कुल ही उम्मीद नहीं कि वे अल्लाह के किसी मुजरिम के साथ उस के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई रिआयत या नर्मी करेंगे) (६६:६)

और सूरए–कहफ में इर्शाद है :

तर्जमा : और ऐ रसूल ! आप कह दीजिए कि यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से, पस जिस का जी चाहे माने और ईमान लाये और जिस का जी चाहे न माने और कुफ्र व इन्कार पर ही जमा रहे यकीन रखो हम ने ऐसे जालिमों के लिए दोजख की आग तैयार कर रखी है उसकी कनातें उन्हें घेरे हुए हैं। और अब वे उसमें पड़कर प्यास की फर्याद करेंगे तो उस के जवाब में उन को ऐसा पानी दिया जायेगा जो (अपनी बदसूरती और घिनावने पन में) तेल की गाद (तलछट) जैसा होगा और ऐसा जलता खौलता होगा कि भून डालेगा चेहरों को क्या ही बुरा पानी होगा, और बड़ी बुरी "कियाम–गाह है दोजख। (१८:२६)

और सूरए मुहम्मद में दोजखियों के बारे में इर्शाद है कि :

तर्जमा : उन को पीने को दिया जायेगा खौलता पानी, पस वह टुकड़े–टुकड़े कर देगा उन की अंतड़ियों को।

और सूरए मुअमिन में इर्शाद है :

तर्जमा : जिन लोगों ने झुटलाया हमारी किताब को और हमारे उन हुक्मों को जिन को लेकर हमने अपने रसूल भेजे, उन को जल्द ही (नतीजा) मालूम हो जायेगा जब तौक उनकी गर्दनों में होंगे, और जंजीरें उन तौकों में जकड़ी होंगी जिन से वे घसीटे जायेंगे, खौलते पानी में ले जाये जायेंगे, फिर दहकती आग में झोंक दिये जायेंगे। (४० : ७० – ७२)

और सूरए–हज्ज में इर्शाद है :–

तर्जमा : जिन लोगों ने कुफ्र किया उन के लिये आग के कपड़े कतरे जाएंगे और उन के सिर के ऊपर से तेज गर्म पानी छोड़ा जायेगा। इससे उनकी खालें और पेट के अन्दर की चीजें भी सब गल जायेंगी और उनकी पिटाई के लिए लोहे के गुर्ज होंगे। वहां की तकलीफ और सख्ती की वजह से वे जब उस से निकलने का इरादा करेंगे तो फिर उसी में ढकेल दिये जायेंगे, और कहा जायेगा कि यहीं जलने का अजाब चखते रहो। (अल–हज्ज : १६–२२)

और सूरए–दुखान में "जक्कूम" को दोजखियों की खूराक बतलाते हुए उस की शक्ल और कैफियत इस तरह बयान की गयी है –

तर्जमा : बेशक जक्कूम का दरख्त पापियों (काफिरों मुशरिकों) का खाना होगा जो अपनी बदसूरती और घिनावने पन में तेल की तलछट की तरह होगा और वह पेटों में जाकर ऐसे खौलेगा जेसे तेज गरम पानी खौलता है, और फरिश्तों को हुक्म होगा कि उस को पकड़ो फिर घसीटते हुए दोजख के बीचो–बीच तक ले जाओ फिर उस के सिर पर बहुत ही तकलीफ देने वाला जलता हुआ पानी छोड़ दो। (दुखान : ४३–४८)

और सूरए–इब्राहीम में जहन्नम में जाने वाले सरकश मुजरिमों के बारे में इर्शाद फरमाया गया है।

तर्जमा : और पीने को दिया जायेगा ऐसा पानी जो अस्ल में (जहन्नमियों का) लहू–पीप होगा जिस को वह घूंट–घूंट करके पियेगा, और गले से उसको आसानी से न उतार सकेगा, और हर तरफ से उस पर मौत की यूरिश (हमला) होगी और वह (कम्बख्ती का मारा) मरेगा भी नहीं और उस को सख्त अजाब का सामना होगा। और सूरए–फातिर में इर्शाद है :

तर्जमा : और जिन लोगों ने कुफ्र की राह इखतियार की उन के

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

मुसलमानों की मदद की फ़ज़ीलत और नफा

हज़रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुसलमान भाई–भाई हैं। न उन पर जुल्म करे और न बे यार व मददगार छोड़े। और जो अपने भाई की हाजत पूरी करेगा अल्लाह उसकी हाजत पूरी करेगा। और जो किसी मुसलमान की तकलीफ को दूर करेगा अल्लाह तआला कियामत के दिन उसकी तकलीफों में से एक तकलीफ को दूर फरमायेगा। और जो किसी मुसलमान की सत्रपोशी करेगा अल्लाह तआला कियामत के दिन उसकी सत्रपोशी फरमायेगा। (बुखारी–मुस्लिम)

हजरत अबू हुसरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया जो किसी मोमिन की दुनयावी मुसीबतों में से एक मुसीबत को दूर करेगा अल्लाह तआला उसकी आखिरत की मुसीबतों में से एक मुसीबत को दूर करेगा। और जो किसी मुश्किल वाले की मुश्किल आसान करेगा अल्लाह तआला उसकी मुश्किल दुनिया और आखारित में आसान करेगा और जो किसी मुसलमान की सत्रपोशी करेगा अल्लाह तआला दुनिया और आखिरत में उसकी सत्रपोशी फरमायेगा। और जो अपने भाई की मदद में होगा अल्लाह उसकी मदद में होगा। और जो अिल्म की तलाश में रास्ता तै करेगा अल्लाह उसके लिए जन्नत का रास्ता आसान फरमायेगा। और जो लोग अल्लाह के घरों में से किसी घर यानी मस्जिद में जमा होंगे और अल्लाह की किताब पढ़ेंगे और आपस में सुनायेंगे तो उनके दिलों पर तस्कीन उतरेगी। और रहमत उनको ढांप लेगी। और फिरिश्ते उनको घेर लेंगें और अल्लाह तआला अपने पास वालों में उनका जिक्र फरमायेगा। और जो अपने अमल में सुस्ती करेगा तो उसको उसका नसब नहीं बढ़ा सकता। (मुस्लिम)

सिफारिश की तर्गीब

हजरत अबू मूसा अशअरी (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जब कोई हाजतमंद आता तो आप अपने हमनशीनों से फरमाते कि सिफारिश करो। इसका अज्र मिलेगा। और फैसला अल्लाह तआला अपने नबी की जबान पर जैसा चाहे करेगा। (बुखारी व मुस्लिम)

सिफारिश का कबूल करना जरूरी नहीं

हजरत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बरीरः (र०) से फरमाया, अपने शौहर की तरफ पलट जाओ। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! क्या हमको हुक्म देते हैं? आप ने फरमाया, नहीं, मैं तो सिफारिश करता हूं। बोलीं मुझे इसकी हाजत नहीं। (बुखारी)

सदकः की किस्में

हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, लोगों के हर जोड़ पर सदकः है। दो आदमियों के दर्मियान अद्ल करना सदकः है। आदमी की मदद जानवर के बारे में करो। उसको सवार कर दो या उसके सामान को उसकी सवारी पर लाद दो, सदकः है। अच्छी बात कहो सदकः है। हर कदम जो नमाज के लिए उठाओ सदकः है। और रास्ता से कांटा वगैरह हटा दो सदकः है। (बुखारी–मुस्लिम)

लोगों के दर्मियान मुसालहत कराने में झूठ नहीं होता

हजरत उम्मे कुल्सूम (र०) बिन्त उकबः से रिवायत है कि मैंने नबी (स०) से फरमाते हुए सुना है कि वह झूठा नहीं है जो लोगों के दर्मियान सुलह कायम करने के लिए झूठ बोले। उसको भली बात पहुंचाये और उससे भली बात करे। (बुखारी–मुस्लिम)

एक मकरूज का कर्ज कम कराना

हज़रत आयशः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरवाजे पर झगड़ा करने वालों की आवाज सुनी। उनकी आवाजें तेज थीं। उनमें से एक अपने कर्ज को कम कराता था और नर्मी चाहता था और दूसरा कहता था खुदा की कसम मैं कम न करूंगा। आप निकले और फरमाया, कहां है अल्लाह पर कसम खाने वाला कि मैं नेकी न करूंगा। उसने कहा मैं हूं या रसूलुल्लाह जो

यह चाहे वह इसके लिए है। (बुखारी–मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक कबीले में मुसालहत कराने के लिए तशरीफ ले जाना

हजरत सह्ल (र०) बिन सअद से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खबर पहुंची कि बनी अम्र बिन औफ के दर्मियान झगड़ा है, तो आप उन लोगों के दर्मियान सुलह कराने के इरादे से तशरीफ लाये। और आपके साथ कुछ और भी लोग थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे थे कि नमाज का वक्त आ गया। हजरत बिलाल (र०) हजरत अबुबक्र (र०) के पास आये और कहा ऐ अबूबक्र (र०) क्या तुम लोगों की इमामत कर सकते हो? अबू बक्र (र०) ने फरमाया हां। हजरत बिलाल (र०) खड़े हो गये हजरत अबूबक्र (र०) ने आगे बढ़ कर तक्बीर कही, फिर लोगों ने भी कही। इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ लाये और सफ में खड़े हो गये। लोग तालियां बजाने लगे। हजरत अबूबक्र (र०) नमाज की हालत में दूसरी तरफ मुतवज्जिः नहीं होते थे। लोगों ने जब जियादाः तालियां बजायीं तब मुतवज्जिः हुए तो देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा हैं। आपने हजरत अबूबक्र (र०) को नमाज कायम रखने का इशारा किया। हजरत अबू बक्र (र०) ने अपने हाथ बलन्द किये, अल्लाह की तारीफ की और पीछे पलट के सफ में खड़े हो गये। रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आगे आये और लोगों को नमाज पढ़ाई। जब फारिग हुए तो लोगों की तरफ मुतवज्जिह हुए और फरमाया ऐ लोगो। तुम को क्या हुआ जब कोई नयी चीज नमाज में पेश आयी तुम तालियां बजाने लगे। तालियां तो औरतों के लिए हैं। कोई चीज अगर नमाज में हारिज हो तो सुब्हानल्लाह कहो। जब सुब्हानल्लाह कहोगे जो सुनेगा मुतवज्जिः हो जायेगा। और ऐ अबूबक्र (र०) तुमने नमाज क्यों न पढ़ाई। जबकि हमने तुम्हारी तरफ इशारः भी किया। उन्होंने कहा कि अबू कुहाफः के बेटे को रवा नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने नमाज पढ़ाये। (बुखारी–मुस्लिम)

(पृष्ठ ५ का शेष)

लिए दोजख की आग है, न तो उनकी कजा (मौत) ही आयेगी कि मर ही जायें और न दोजख का अजाब ही उन से हलका किया जायेगां हम हर काफिर को ऐसी ही सजा देते हैं और वे इस में पड़े चिल्लायेंगे कि ऐ हमारे पर्वर्दिगार! हम को इस दोजख से निकाल दे, हम अच्छे काम करेंगे, इस के खिलाफ कि जो (अपनी शामत से) पहले करते थे। (उन की इस चीख पुकार का जवाब मिलेगा कि) क्या हम ने तुम को इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिस को समझना होता वह समझ सकता और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुंचा था पस अब मजा चखो कि ऐसे जालिमों का कोई मददगार नहीं। (फातिर : ३६,३७)

(पृष्ठ ४ का शेष)

अंग्रेज़ी में अभी कोई ऐसी तफ़्सीर नहीं लिखी जा सकी है जिस में आप अपने सुवालों के इतमीनान बख़्श जवाब पा सकें, अल्बत्ता इस सिलसिले में जब एअ़तिराज़ात उठे तो कुछ आ़लिमों ने इस ग़लत फ़हमी को दूर करने के लिए किताब्चे लिखे उम्र से आप को फ़ाइदा पहुंच सकता है, नागपुर के मौलाना अ़ब्दुल करीम पारीख ने भी लिखा है, हम ने सच्चा राही में भी जवाबात दिये हैं, वैसे आप को जिस आयत पर इश्काल हो सच्चा राही के आफ़िस में लिख भेजें आप को जवाब तो दिया ही जाएगा मुतमइन भी किया जाएगा। डाक्टर साहि़ब ने पूछा कि इस्लाम के शुद्ध परिचय के लिये कौन सी किताब देखी जाए? मैंने कहा आप मौलाना अ़ब्दुल्लाह ह़सनी की संकलित "इस्लाम एक परिचय" और मौलाना मुह़म्मद मंजूर नोमानी की "इस्लाम क्या है" पढ़िये दोनों किताबें हिन्दी में उपलब्ध हैं। डाक्टर साहि़ब मेरी बात चीत से बहुत ख़ुश हुए और शुक्रिया अदा किया। यह तो एक डाक्टर की बात मैंनें नक़्ल की कई डाक्टरों इंजीनियरों तथा अध्यापकों से इस तरह की बात चीत हो चुकी है और यह सिलसिला जारी है।

जो ह़ज़रात क़ुर्आनी आयात पर या इस्लाम पर एअ़तिराज़ात करें और उन की बात चीत से लगे कि वह समझना चाहते हैं उलझना उलझाना मक़्सद नहीं है उन के सुवालात सच्चा राही में भिजवाएं सच्चा राही के पृष्ठों पर उनको संतुष्ट किया जाएगा।

हिन्दुस्तानी उलमा के इल्मी कारनामे

मुसलमानें की नाजुक और दोहरी ज़िम्मेदारी

मौ० अबुल हसन अली हसनी

हिन्दुस्तानी मुसलमानों ने वतने अज़ीज़ (प्यारी जन्म भूमि) के साथ हमेशा गहरी दिलचस्पी और मुखलिसाना वाबस्तगी (निःस्वार्थ लगाव) का सुबूत दिया उसकी इल्मी खिदमत, सनअती व सक़ाफ़ती तरक़्क़ी (शिल्पकारी, संस्कृति उन्नत) में कोई कसर नहीं छोड़ी इसी के साथ अपने मजहब और इस्लामी व अरबी तहज़ीब (कल्चर) से भी उनकी वफ़ादारी बरक़रार रही, इस्लामी दुन्या से उनका रिश्ता कभी कटा नही बल्कि इस्लामी इतिहास के कुछ कालों में उनकी हैसियत सालारे कारवां (नायक यात्रि दल) की रही है।

दो तरह की तहजीबों (सभ्यताओं) के बीच हम आहंगी (एकरंगी) पैदा करना और मुखतलिफ (माददी और रूहानी) वतनों से यकसां वफादारी निबाहना बड़ा मुश्किल काम है, मिल्लते इस्लामिया में हिन्दुस्तानी मुसलमानों की तरह कामयाबी के साथ इस नाजुक और दुहरी जिम्मेदारी से निटपने वाली कोई दूसरी कौम नजर नहीं आती।

हिन्दुस्तानी उलमा की तस्नीफी कोशिशें –

इस्लामी उलूम के भारतीय मुसलमानों की तसानीफ (किताबें) अनगिनत हैं, हाजी खलीफा की लिखी हुई किताब ''कशफुज–जुनून'' है, जिसका तअल्लुक पूरी इस्लामी दुनिया से है, हिन्दुस्तानी उलमा के तजकिरे से खाली नहीं, मौलाना अब्दुल हई हसनी (रह०) की अरबी किताब ''इस्लामी सकाफत हिन्दुस्तान में'' के सरसरी जाइजे से हिन्दुस्तान के इलमी मकाम और हिन्दुस्तानी उलमा व मुहक़्क़िक़ीन (अन्वेषक) की तसनीफी कोशिशों का अच्छी तरह अन्दाजा हो सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय शुहरत (ख्यात) की मालिक हिन्दुस्तानी किताबें –

मैं उन बड़ी किताबों का तजकिरा करूंगा जिनकी शुहरत भारत की सीमा से बाहर निकल कर दुनिया के दूसरे देशों में पहुंच चुकी है। और अरब के उलमा ने भी उन्हें सम्मान और बड़ाई की निगाहों से देखा है।

इस सिलसिले में सबसे पहले सातवीं सदी हिजरी (तेरहवीं सदी ईसवी) के मशहूर मुसन्निफ (लेखक) इमामे लुगत व हदीस हसन बिन मुहम्मद सगानी लाहोरी की किताब ''अल उबाबुज्जाखिर का तजकिरह मुनासिब (उचित) होगा, यह किताब अरबी जबान के मुस्तनद, (प्रमाणित) और बेश कीमत (बहुमूल्य) माखिज (ग्रहणा स्थान) में शुमार होती है, उलमा–ए–लुगत (शब्द कोष के विद्वान) ने हर जमाने में उस से फाइदा उठाया है और उसके लेखक की योग्यता, उसकी बारीक और गहरी नजर की प्रशंसा की है, अल्लामा सिवती ने लेखक हसन बिन मुहम्मद के बारे में लिखा है कि वह फन्ने लुगत (शब्द कोष विद्या) के इमाम थे, इमामे जहवी उन्हें इल्म लुगत (शब्द कोष विद्या) के मरजअ व मुनतहा (शरणास्थल और पराकाष्ठा) करार देते हैं, अल दुमयाती के नजदीक वह लुगते हदीस और फ़िक़्ह के इमाम थे, प्रशंसित इमाम की दूसरी किताब ''मशरिकुल–अनवार'' भी फन्ने हदीस में इस दरजे की किताब मानी जाती है। कि बहुत दिनों तक दाखिले दर्स (पाठ) में रही और आलमे इस्लाम (इस्लामी जगत) में मशहूर व मकबूल (प्रसिद्ध एवं माननीय) है।

इन्हीं किताबों में दसवीं सदी हिजरी (सोलहवीं ईसवी) के मशहूर मुहद्दिस शेख अली बिन हुसामुद्दीन अल–मुत्तकी बुरहान पूरी (शेख अली मुत्तकी गुजराती) की किताब ''कनजुल–उम्माल'' है, जो अल्लामा सिवती की किताब ''जमउल–जवामे'' की तरतीब (अनुक्रम) है, ''कनजुल उम्माल'' हदीस की उन किताबों में से है जिन से उलमा–ए–हदीस ने बड़ा फाइदा उठाया और किताब के मुसन्निफ (रचयता) के इल्म, फज्ल और एहसान का एतिराफ (स्वीकृत) किया है जिसने उन्हें अनगिनत मसादिर व मराजे (रिफ्रेन्स बुक) के पन्नों के उलटने से बचालिया, शेख अबुल हसन अली बिकरी शाफई जो दसवीं सदी हिजरी में हिजाज (सऊदी अरब) के बड़े उलमा में थे फरमाते हैं ''पूरी इल्मी दुनिया (विधा जगत) पर अल्लामा सिवती का एहसान है लेकिन खुद सिवती शेख़ अली मुत्तक़ी के ममनूने एहसान (आभारी) है।

अल्लामा मुहम्मद ताहिर पटनी की ''मजमउ–विहारूल अनवार फी

(शेष पृष्ठ ११ पर)

पहली किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबुल फ़ज़ल नदवी

सन् ७०५ (८६ हि०) में जब वलीद बिन अब्दुल मलिक दमिश्क में बादशाह हुआ, तो हज्जा बिन यूसुफ इराक का हाकिम था, जिसके अधीन बिलोचिस्तान, मकरान और सिन्ध के सीमावर्ती इलाके भी थे। उस समय इस्लाम की हुकूमत एशिया, यूरोप और अफरीका में फैली हुई थी। इसलिए बादशाहे इस्लाम के दरबार में हर देश के बादशाह उपहार के साथ अपने दूत भेजते रहते। लंका के राजा भी उन्हीं में से था जो दरबारे खलाफ़त से राजनीतिक व समाजिक सम्बन्ध बढ़ाना चाहता था।

चुनानचिः आकस्मिक तौर पर उसको इसका औसर मिल गया अर्थात लंका में जो अरब व्यापारी रहते थे उनके मरजाने पर राजा ने उन की औरतों को अपने उपहारों के साथ हज्जाबिन यूसुफ की दर्मियांगी से खलीफा के पास वापस भेजा। इन जहाजों को सिन्धियों ने देवल के पास रोक लिया। जब इसकी सूचना हज्जाज को मिली तो सिन्ध के राजा दाहिर का ध्यान इस ओर दिलाया और शरीफ अरब महिलाओं की वापसी की मांग की। राजा दाहिर ने जवाब दिया कि यह काम समुद्री डाकुओं का है और वह मेरी पहुंच से बाहर हैं।

हज्जाज ने सरहद के हाकिम अब्दुल्लाह को लिखा कि देवल का समुद्री मार्ग चूंकि मुसलमानों के लिए खतरनाक है, इसलिए फौज ले जाकर शान्ति स्थापित कर दो। अब्दुल्लाह युद्ध में मारे गये उनकी जगह बदील बिजली को मुकर्रर किया गया लेकिन वह भी घोड़े के ठोकर खाकर गिर जाने से मर गये। तब हज्जाज ने मुहम्मद बिन क़ासिम को पूरी तैयारी के साथ शीराज़ के रास्ते से रवाना किया।

मुहम्मद बिन कासिम सन् ७११ ई० (६३ हि०) शुक्रवार के दिन देबल पहुंचा। समुद्री मार्ग से भी लड़ाई का सामान आ गया। उसी में वह मिंज़ीक भी थी जिसका नाम "अलउरूस" था जिस को पुराने युग की तोप समझना चाहिए। वह पांच सौ आदमियों की ताकत से चलाई जाती थी। सबसे पहले मुहम्मद बिन कासिम ने इस मिंजीक द्वारा देबल के किले पर विजय प्राप्त की फिर आगे बढ़ कर नीरूं पर विजय का झण्डा लहराया। इसके बाद धीरे–धीरे उस ने सिन्ध पर कब्जा करना शुरू कर दिया। तीन वर्ष के अन्दर कश्मीर की सीमा से लेकर "कच्छ" तक और अरब सागर से राजस्थान की सीमा, मालवा, मारवाड़ और रावी नदी के किनारे तक विजय प्राप्त करने के बाद कन्नौज (सिन्ध की एक छोटा राज्य) की ओर बढ़ा। उस समय उस के पास पचास हजार फौज थी जिस में अधिक संख्या हिन्दुस्तानियों की थी।

सन् ७१४ ई० (६६ हि०) में खलीफा वलीद का स्वर्गवास हो गया और सुलैमान उस की जगह तख्त पर बैठा। उस समय हज्जाज तो मर चुका था जो पूर्वी क्षेत्रों का अधिकारी था परन्तु उस का अधीनस्थ (मातह) सिन्ध का गवर्नर मुहम्मद बिन कासिम, कतबिया बिन मुस्लिम तुर्किस्तान का हाकिम, अफरीका का हाकिम मूसा आदि जीवित थे और यही वह लोग थे जो सुलैमान को खलीफा बनाने के खिलाफ थे।

सुलैमान के खलीफा होकर इन सब से बदला लिया। अतएव उसके आदेश से मुहम्मद बिन क़ासिम सन् ७१४ ई० (६६ हि०) में निलम्बित कर के वापस बुलाया गया और अपने पूरे कुटुम्ब के साथ "वास्त" (कूफा) के जेल में बहुत दिनों तक कैद रह कर खलीफा के खिलाफ साजिश के जुर्म में कत्ल किया गया। इस से मालूम हुआ कि राजा दाहिर की दो बेटियों की जो कहानी अन्य भारती इतिहासों में लिखी गई है वह सरासर झूठ है।

मुहम्मद बिन कासिम के बाद एक के बाद दूसरे सिन्ध के गवर्नर मुकर्रर होते रहे उन में जुनैद मुख्य कर बयान करने के योग्य है। यह सन् ७२५ ई० (१०७ हि०) में सिन्ध का गवर्नर रहा। यह बड़ा बहादुर और अच्छा प्रबन्धक था। सिन्ध का उचित प्रबन्ध कर के सारहदी मामिलों के आखिरी फैसले के लिए गूजरों के देश की तरफ बढ़ा। सिन्ध से पहले माड़वार आया और यहां से मांडल (वीरगाम) के पास और फिर धंज (पटन के पास) पहुंचा और वहां से भरोच बन्दरगाह गया और उसके एक अफसर हबीब नामी ने उज्जैन (मालवा) पर धावा किया वहां से महरीमद (माड़वार सीमा) और फिर

भीलमान (गूजरों की राजधानी) को फतह करते हुए मालेग़नीमत (परिहार) लेकर सिन्ध वापस आ गया। इसी काल में चंपायत का राज्य उसके अधीन हुआ।

जुनैद के बाद तमीम और फिर हकम बिन अ़वाना कल्बी सिन्ध के हाकिम हो कर आए। हकम ने यहां एक नया नगर "महफूजः" बसाया। कुछ दिनों के बाद उमर बिन मुहम्मद कासिम ने दूसरा शहर "मंसूरा" आबाद किया जो सदियों सिन्ध की राजधानी रहा।

हकम के बाद मुहम्मद बिन क़ासिम का लड़का उमर मुहम्मद और फिर यज़ीद अ़रार सिन्ध के हाकिम हुए। उसी जमाने में एक शख्स मंसूर बिन जमहूर बागी होकर सिन्ध पर काबिज़ हो गया।

सन् ७४६ ई० (१३२ हि०) में उमय्या के खानदान की जगह हजरत अब्बास (रज़ि०) का खानदान शासक बना और उन्होंने इराक में बुगदाद को अपनी राजधानी बनाया। इस काल में सबसे पहले मुगलिस को सिन्ध भेजा गया जो जल्द मारा गया। फिर मूसा बिन कआ़ब तमीमी आया जिस ने बागी मंसूर बिन जमहूर को प्राजित किया और सिन्ध पर कब्जा बहाल किया। तमीमी के बाद ईनः और फिर उमर बिन हफ्स यहां का हाकिम हुआ। चूंकि यह सादात का बड़ा समर्थक था, इसलिए सिन्ध में भी उन का प्रभाव काइम हो गया और शीयत की बुनियाद उसी समय से सिन्ध में पड़ी।

सन् ७५७ ई० (१४० हि०) में मंसूर अब्बासी के आदेश से हश्शम हाकिम होकर आया जिस ने उमर बिन जमाल को जहाजों के बेड़े का अफसर बना कर गुजरात के बन्दरगाहों पर हमला करने के लिए रवाना किया। वह लूटमार कर वापस आया। हश्शाम को इस से संतोष न हुआ। वह खुद एक बेड़ा लेकर गन्धार बन्दरगाह पर हमलावर हुआ और अपनी विजय की यादगार में यहां एक मस्जिद बनवाई यह गुजरात में मुसलमानों की पहली मस्जिद है। वापस आकर उसने कशमीर का सीमावर्ती इलाका भी फतह कर लिय। खलीफा ने इस की विशेष योग्यता देख कर किरमान का प्रांत भी उस के सुपुर्द कर दिया।

सन् ७७५ ई० (१५६ हि०) में खलीफा मेहदी के आदेश से गुजरात पर अब्दुल मलिक ने हमला किया और ७७६ ई० (१६१ हि०) में कई हाकिमों के बाद मुसब्बह बिन उमर तगलबी सिन्ध का हाकिम मुकर्रर हुआ। उसी के काल में यमनी और हिजाज़ी का झगड़ा शुरू हुआ जिस से सिन्ध की इस्लामी हुकूमत को बहुत हानि पहुंची। सन् ७८०ई० (१६४ हि०) में लेस सिन्ध के हाकिम को दो वर्ष तक जाटों ने बहुत सताया। सन् ७८१ (१६५ हि०) में ताजा दम अरब फौज जब बसरा से आई तो फसाद समाप्त हुआ।

सन् ७८६ ई० (१७० हि०) में हारून रशीद के जमाने में तयफूर हमीरी हाकिम होकर आया। उस के काल में हिजाजियों और यमनियों का झगड़ा बहुत बढ़ गया। इस लिए उस को हटा कर के कई हाकिम बराबर भेजे गये परन्तु किसी से सिन्ध का उचित प्रबन्ध न हो सका। आखिर सन् ८०० ई० (१८४ हि०) में दाऊद मुहल्लबी को इलाका सुपुर्द किया गया। पहले तो उसका भाई मुगीरा आया मगर सिन्धी अरबों ने उसकी दाल गलने न दी मजबूरन वह खुद सिन्ध पहुंचा और उस ने पूरे सिन्ध का उचित प्रबन्ध किया। उस ने हिजाज़ियों की ताकत तोड़ी और देश भर में उन को जगह जगह बसा दिया।

उसी जमाने में हारून रशीद की मांग पर हिन्दुस्तान से ८०८ ई० (१६३ हि०) में एक वैद्य (तबीब) गंगा नामी बगदाद गया था और एक और वैद्य मनका नामी था जिस के उपचार से खलीफा बीमारी से अच्छा हुआ था।

सन् ८२० ई० (२०५ हि०) में बीस वर्ष हुकूमत करके बड़ी नेक नामी के साथ दाऊद बिन यज़ीद बिन हातिम मुहल्लबी संसार से सिधार गया। खलीफा मामून रशीद ने उस के लड़के बशर को बाप की जगह पर बहाल रखा। चन्द साल के बाद उस ने बागियाना नीति अपनाई। इस लिए हाजिब बिन सालह को रवाना किया गया जो असफल वापस आया।

आखिर मामून ने ग़स्सान तग़लबी को सिन्ध भेजा। वह ८२८ ई० (२१३ हि०) में मन सूरा पहुंचा बशर ने प्राधीनता स्वीकार करली। ग़स्सान ने तमाम समस्याओं का समाधान करके मूसा बरमकी को खलीफा के आदेश के अनुसार सिन्ध सपुर्द कर दिया और इराक चला गया। सन् ८३५ (२२१ हि०) में मूसा मर गया और उसका लड़का इमरान बिन मूसा सिन्ध का हाकिम मुकर्रर हुआ।

इमरान बाप की जगह मुकर्रर हो कर बड़ी तत्परता से प्रबन्ध करने लगा। कैकान के जाट जो बागी हो गये थे उन को प्रास्त किया और उन की सरकशी (उदण्डता) रोकने के लिए एक छावनी स्थापित की। उसका नाम "बैज़ा" रखा। क़ंदाबील के सरकशों को परास्त किया। उसके बाद जाटों की खबर ली और कठोर दण्ड देकर भेद की तरफ चला। इस सरकश कौम को प्रास्त करने में लगा हुआ था कि फिर हिजाज़ी और यमनी झगड़ा शुरू

हुआ। हिजाज़ियों का एक सरदार उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हबारी अचानक उस पर आ पड़ा और इमरान मारा गया। उस के मरने पर ८५० ई० (२३६ हि०) में अनबसा बिन इसहाक जबी हाकिम हुआ लेकिन उस का सारा समय इन बाग़ियों से लड़ने में व्यतीत हुआ जो इमरान के कत्ल से सूबे दबा बैठे थे। उस ने अपने अन्तिम काल में एक बड़ा जेल तैयार किया और देबल की फसील (सुरक्षा दीवार) सड़क और मकानात को ठीक कराने में बड़ी दिलचस्पी से समय गुजारा।

सन् ८४६ ई० (२३५ हि०) में हारून सिन्ध का हाकिम हुआ परन्तु उस ने हिजाज़ियों और यमनियों में सन्तुलन काईम नहीं रखा। उसका खतरनाक नतीजा यह निकला कि ८५४ ई० (२४० हि०) में हिजाज़ियों के सरदार उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हबारी ने उसको कत्ल कर दिया और शहर पर कब्जा करके खलीफा मुतवक्किल से निवेदन किया कि सिन्ध का प्रान्त उस को सुपुर्द हो तो वह उसका बेहतरीन इन्तजाम करेगा। अतएव खलीफा मुतवक्किल ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ १२ का शेष)

वसल्लम की बात सब की बातों पर ऊंची रखना चाहता हो वह क़ब्र पर अज़ान न कहे किसी सहाबी (र०) ने किसी की क़ब्र पर अज़ान नहीं कही।

सवाब पहुंचाना

दफ़न के बअ़द क़ब्र पर थोड़ी देर तक ठहर कर कुछ पढ़ कर मय्यित को सवाब बख़्शें और मय्यित के लिये मग़फ़िरत की दुआ करें।

फिर घर आकर अल्लाह तआ़ला जब भी तौफ़ीक़ दे किसी रस्म की पाबन्दी के बग़ैर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर या कलमा पढ़ कर या ग़रीबों को खिला पिला कर या खाना कपड़ा या नक़्द ग़रीबों को दे कर या कोई भी नेक काम, नफ़्ली ईबादत करने के बअ़द हाथ उठा कर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करें कि ऐ अल्लाह मेरे इस अ़मल को क़ुबूल फ़रमा और इस का सवाब फ़ुलां की रूह को बख़्श दे फिर दुरूद पढ़कर हाथ मुंह पर फेर लें यही सवाब पहुंचाना है, और यही फ़ातिहः है, वफ़ात पाने वाले को फ़ाइदः पहुंचाने और उससे तअ़ल्लुक बाक़ी रखने का शरीअ़त के मुताबिक़ यह बेहतरीन तरीक़ा है बुज़ुर्गों की फ़ातिहः का भी यही तरीक़ा है।

(पृष्ठ ८ का शेष)

गराइबुत–तनजील व लताइफुल अखबार'' इसी फेहरिस्त (सूची) में शामिल है, मौलाना अब्दुल हई (रह०) ''नुज़हतुल–खवातिर में फ़रमाते हैं ''इस किताब में मुअल्लिफ़ (संग्रहकर्ता) ने अहादीस के मुफ़रदात व अलफ़ाज़ की शरह (व्याख्य) की है, और उनसे मुतअल्लिक (संबंधित) मुहददिसीन के अकवाल को जमा (एकत्रित) कर दिया है, इसलिए इसकी हैसियत सिहा–हे–सित्ता (हदीस के छः बड़े संग्रह) की शरह (व्याख्या) हो गई है, यह किताब शुरू (प्रारंभ) ही से अहले इल्म में मकबूल (स्वीकृत) मुत्तफक अलैह (निर्विवाद) रही है, इस किताब को लिख कर मुसन्निफ (लेखक) ने अहले इल्म पर बड़ा एहसान किया है।

अल्लामा मुहम्मद ताहिर की किताब ''तजकिरातुल मौजूआत भी मौजू अहादीस (गढ़ी हुई हदीसें) के मौजू (विषय) पर मुतादाविल व मशहूर (प्रचलित और प्रसिद्ध) किताब है।

इस फेहरिस्त (सूची) में ''फतावे–ए–हिन्दिया'' भी है जो आमतौर पर फतावे–ए–आलमगीरी के नाम से मशहूर है, फिकह के मसायल में यह किताब एक अहम हवाले की हैसियत रखती है, बहुत से इस्लामी देशों में जिनका अमल और अदालत का कानून फिक्ह हनफी है, इस किताब पर बड़ा ऐतिबार किया जाता है ''अस्सकाफतुल इस्लामिया'' के मुसन्निफ (लेखक) फरमाते हैं –

''फतावे–ए–हिन्दिया कहा जाता है मसाएल की कसरत, सहल तर्ज निगारिश, (आसान लेखन शैली) और पेचीदा गुत्थियों को सुलझाने के लिए निहायत मुफीद किताब है मिस्र शाम (सीरिया) और अरबदेशों में यह ''फता–व–ए–हिन्दिया के नाम से मशहूर है, इस की छः बड़ी जिल्दें (प्रतियां) हैं जिन्हें ''हिदायह'' (एक बड़ी इस्लामिक ला बुक) की तरतीब के लिहाज से मुरत्तब (संपादित) किया गया है। .... ''फुकहा–ए–अहनाफ'' की मदद से जमअ व तदवीन (एकत्र एवं संपादन) का काम सुल्तान औरंगजेब आलमगीर ने अपने प्रारंभिक शासन काल में शेख बुरहानुद्दीन के सुपुर्द किया था और दो लाख रूपये इस पर खर्च किये थे, मुअल्लिफ मजकूर (उपर्युक्त लेखक) ने चौबीस मुमताज (प्रतिष्ठित) हिन्दुस्तानी उलमा के नाम गिनाए हैं जिन्होंने फतावए–आलमगीरी की तदवीन संग्रह में हिस्सा लिया उनमें से चार उलमा यह हैं, काजी मुहम्मद अली अकबर हुसैनी, असदुल्लाह हसनी, शेख हामिद बिन अबू हामिद जबलपूरी और मुफती मुहम्मद अकरम हनफी लाहौरी, इन चारों उलमा ने मिलकर तदवीन (संग्रह) के काम की निगरानी की।''

मय्यित के हुक़ूक़

आख़िरी वक़्त की तलक़ीन

इदारा

जब हालात से लगे कि किसी मुसलमान का वक़्त क़रीब है, तो मुम्किन हो तो उस को क़िबलः रूख़ कर दीजिए और उस के पास आवाज़ से कलमः पढ़ये उससे पढ़ने को न कहिये, उस के पास यासीन शरीफ़ पढ़िये, जब रूह निकल जाये तो दोनों हाथ बराबर में रख दीजिए, सीने पर मत रखिये, मुंह बन्द कर दीजिए, और एक कपड़े से ठोड़ी के नीचे से सर के ऊपर बांध दीजिए, ताकि मुंह खुला न रहे, बिस्मिल्लाहि व अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि (स०) कहते हुए आंखें बन्द कर दीजिए। दोनों पैरों के अंगूठे मिलाकर बांध दीजिए और ऊपर से चादर डाल दीजिए पास में लोबान या अगर बत्तियां सुलगा दीजिए।

नहलाना

मैयत को जिस तख़्ते पर नहलाना हो उसे पाक कर के ताक बार लोबान या अगरबत्ती की धूनी दे लीजिए, नहलाने की जगह से पानी निकलने या किसी गड्ढे में जम्अ़ करने का इन्तिज़ाम कर लीजिए ताकि उस पानी से तकलीफ़ न हो, तख़्ता सरहाने की तरफ़ ज़रा ऊंचा रखें, मुर्दे को तख़्ते पर लिटा कर ढोंढ़ी से घुटनों तक पाक कपड़ा डाल कर पहने हुए कपड़े आहिस्ता से उतार लीजिए, फिर बायें हाथ में दस्तानः पहनकर पहले ताक ढेलों से फिर पानी से अच्छी तरह इस्तिंजा कराइये, फिर वुज़ू कराइये, वुज़ू में पहले मुंह धुलाइये, फिर कुहनियों समेत हाथ, फिर सर का मसह़, फिर दोनों पैर धोइये, कुल्ली न कराइये न नाक में पानी पहुंचाइये, अलबत्ता अगर ग़ुस्ल की ह़ाजत रही हो तो यह भी कीजिए वरनः पाक रूई से दांत और नाक साफ़ करके मुंह और नाक रूई से बन्द कर दीजिए ताकि अन्दर पानी न जाय, फिर सर और दाढ़ी गुलख़ैरू या अच्छे साबुन से साफ़ कीजिए, फिर बांई करवट लिटा कर हल्का गर्म पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये, अब आप कोई अच्छा साबुन लगा कर या बिना साबुन आहिस्ता आहिस्ता मल कर मैल निकाल दीजिए, फिर दाहिनी करवट लिटा कर बेरी की पत्ती डाल कर गर्म किया गया पानी जो ठन्डा कर लिया गया हो और हल्का गर्म हो सर से पैर तक ठीक से बहाइये यह दो ग़ुस्ल हो गये अब सर की तरफ़ से लाश को ज़रा उठा कर आहिस्ता आहिस्ता पेट मलिये और अगर कुछ निकले तो चीथड़े या ढेले से पोंछ कर बायें हाथ में दस्ताना पहन कर ठीक से धो दीजिए। कुछ गंदगी निकलने पर वुज़ू और पहले वाले ग़ुस्ल दुहराने की ज़रूरत नहीं, अब मय्यित को बाईं करवट लिटा कर काफ़ूर पड़ा गुनगुना पानी सर से पैर तक ठीक से बहाइये मुर्दे का ग़ुस्ल पूरा हो गया।

अगर गर्म पानी, बेरी की पत्ती और काफ़ूर वग़ैरह का किसी मजबूरी से इन्तिज़ाम न हो सके तो सादे पानी से इसी तरह ग़ुस्ल दीजिए और अगर कोई मजबूरी हो तो मुर्दे को सिर्फ़ एक बार ग़ुस्ल दे देने से ग़ुस्ल हो जायेगा। औरत का ग़ुस्ल भी इसी तरह होगा।

ग़ुस्ल पूरा हो जाने के बाद कोई पाक कपड़ा नाफ़ से घुटनों तक डाल कर गीला कपड़ा अलग कर लीजिए और पाक कपड़े से बदन पोंछ कर कफ़न पहनाइये।

कफ़न

कफ़न का कपड़ा ज़ियादा मंहगा न हो और सफ़ेद होना बेहतर है। आमतौर से कफ़न छालटीन (लट्ठे) से बनाते हैं जिसकी चौड़ाई ८० या ६० सेन्टी मीटर होती है ऐसा कपड़ा मर्द के कफन के लिए १७ मीटर और औरत के कफन के लिए २१ मीटर लेना चाहिए।

(१) लिफ़ाफ़ा :

५ हाथ, क़द छोटा हो तो अन्दाज़े से इतना लें कि सिर और पैर के दोनों ओर आधा हाथ बांधने के लिए निकला रहे। चौड़ाई अगर कम है तो पट्टी जोड़ कर सवा मीटर कर ली जाय।

(२) तहबन्द :

पांच हाथ, इस की चौड़ाई भी सवा मीटर हो कम हो तो पट्टी जोड़ें, लम्बाई सर से पैर तक होना चाहिए छोटा क़द हो तो अन्दाज़ा कर के कम कर लें।

(३) कुरता :

पांच हाथ एक बालिश्त, इस को दुहरा करके मोड़ की तरफ़ सिर डालने के लिए थोड़ा हिस्सा बीच में फाड़ लें। (इस की दुहरी लम्बाई कन्धों से पिन्डलियों तक हो)

यह मर्द का कफ़न हुआ औरत के कफ़न में दो कपड़े और हैं।

(४) ओढ़नी :

तीन हाथ, इसी की चौड़ाई से दो दस्ताने काट लें ओढ़नी की चौड़ाई एक हाथ से कुछ जियादा हो।

(५) सीना बन्द :

दो हाथ एक बालिश्त (बग़ल के नीचे से रानों तक)

कफ़न से अलग कपड़े

१. ऊपर ओढ़ाने वाली चादर : छ हाथ एक बालिश्त चौड़ाई कम हो तो पट्टी जोड़ें। (ज़रूरी नहीं)

२. नहलाने वाला कपड़ा दो हाथ से कुछ बड़ा।

३. नहलाने के पश्चात कफ़न पर लाने वाला कपड़ा : दो हाथ से कुछ बड़ा।

५. बदन पोंछने वाला कपड़ा : एक हाथ।

६. दो दस्ताने जो ओढ़नी से निकाले जायें या अलग बनायें जायें।

कफ़न बिछाना :

कफ़न को पहले ताक़ बार लोबान या अगरबस्ती वग़ैरह धूनी दे लें फिर चार पाई या जिस पर जनाज़ः ले जाना है नहलाने की जगह के क़रीब रख कर कफ़न इस तरह बिछायें :

पहले बीच वाली पट्टी बिछायें, फिर लिफ़ाफ़ः, फिर तहबन्द; फिर कुरता इस तरह बिछायें कि नीचे वाला हिस्सा बिछा रहे और ऊपर वाला हिस्सा समेट कर सर की तरफ़ रख दें औरत के कफ़न में लिफ़ाफ़े पर तहबन्द से पहले सीनः बन्द इस तरह बिछायें कि बग़ल के नीचे से रानों तक रहे, सीनः बन्द पर उस के ऊपर कुरता जैसे बताया गया बिछा दें।

कफ़नाना

मय्यित को कफ़न पर लिटा कर कुरते का ऊपर वाला हिस्सा सर से निकाल कर जिस्म पर उढ़ा दीजिए, और जो कपड़ा, गीला कपड़ा हटाने और इरदे के लिए डाला था उसे निकाल लीजि', अब सर और दाढ़ी में इत्र लगाइ पेशानी हथेलियों और घुटनों पर क. ,ूर मलये, फिर तहबन्द पहले बायें तरफ़ से पलटये, फिर दायें तरफ़ से, इसी तरह चादर पहले बाईं तरफ़ से फिर दाहेनी तरफ़ से पलटिये।

औरत को कफ़नाने में इत्र और काफ़ूर लगाकर उस के बालों के दो हिस्से कर के आधे दाहिने तरफ़ और आधे बाईं तरफ़ सीने पर कुरते के ऊपर रख दीजिए और दोपट्टा सर से उढ़ा कर आंचल दोनों तरफ़ बालों पर डाल दीजिए। और अब पहले की तरह यअ़नी पहले बायें तरफ़ से फिर दाहिनी तरफ़ से तहबन्द, फिर सीनः बन्द और आख़िर में लिफाफाः पलट दीजिए, अब बीच की पट्टी बांध दीजिए, और सर के बाहर और पैरों के बाहर भी कपड़ा चुन कर पट्टियां बांध दीजिए।

मर्द के कफन में यही तीन कपड़े और औरत के कफ़न में यही पांच कपड़े देने अल्लाह के रसूल से साबित हैं और फ़िक़्ह की किताबों में लिखे हैं, अगर हम को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बात को सब से ऊपर रखना है तो हम अपनी तरफ़ से इससे ज़ियादः कपड़े न दें। यअ़नी साफ़ा या पैजामा वग़ैरह न दें।

जनाज़े की नमाज़

किसी साफ़ जगह पर सिरहाना उत्तर को करके जनाज़ा रखें, इमाम साहिब जनाज़े के सीने के सामने क़िबले की तरफ़ मुंह कर के खड़े हों और नीयत कर के नमाज़ पढ़ायें।

मुक़्तदी लोग इमाम के पीछे ताक सफें बना लें, किसी मुक़्तदी को जनाज़े की नमाज़ की दुआयें याद न हों तो वह चुप चाप खड़ा रहे इमाम की तकबीरों के साथ चारों बार अल्लाहु अकबर कहे और इमाम के सलाम फेरने पर सलाम फेर दे।

दफ़नाना

जनाज़ें को क़ब्र में क़िबले की तरफ़ से बिस्मिल्लाहि व अ... मेल्लति रसूलिल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) कह कर उतारें मय्यित अगर औरत हो तो चादर तान कर परदः कर लें, गैर महरमों को मुंह फेर लेना चाहिए और औरत का जनाज़ः उसके महरम उतारें, महरम न हों तो कोई उतारे दूसरे ग़ैर महरमों के मुक़ाबले में शौहर को उतारना चाहिए।

मय्यित को दाहिनी करवट लिटा कर क़िबलः रूख़ कर दें और बन्द खोल दें अब लकड़ी या पटरे वग़ैरह रख कर मिट्टी डालें, इत्र और काफ़ूर वग़ैरह ख़ुशबू लगा चुके हैं अब क़ब्र में क्योड़ा डाल कर कीचड़ न करें कि यह साबित भी नहीं है, बअ़ज़ जगह मिट्टी डालने से पहले पढ़े हुए ढेले रखे जाते हैं हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह भी नहीं सिखाया है।

मिट्टी डालते वक़्त पहली बार मिन्हा ख़लक़्नाकुम दूसरी बार, व फ़ीहानुअ़ीदुकुम और तीसरी बार व मिनहा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा, पढ़ें, क़ब्र ज़ियादाः ऊंची न करें बीच का हिस्सा उभरा रखें, क़ब्र बराबर करके उस पर पानी छिड़क दें, बअ़ज जगह क़ब्र दुरुस्त करने के बअ़द उस पर अज़ान कहते हैं, क़ब्र पर अज़ान कहना हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व अ़ला आलिही व सल्लम ने अपनी उम्मत को नहीं सिखाया लिहाज़ा जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सच्ची महब्बत हो और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि

(शेष पृष्ठ १० पर)

सच्चा दीन इस्लाम

अबू मग़्रूब

हमारी अ़क़्ल यह मानने पर मजबूर है कि इस ख़िल्क़त का कोई ख़ालिक़ है, इस सृष्टि का कोई सृष्टिकर्ता है, जब एक घड़ी किसी के बनाए बिना नहीं बन सकती, एक क़लम किसी के बनाए बिना नहीं बन सकता तो यह सूरज जो लाखों साल से एक ज़ाब्ते (नियम) से निकलता डूबता है, यह चान्द एक नियम से घटता बढ़ता, छुपता और चमकता है, यह ज़मीन यह आसमान यह सब ख़ुद से कैसे बन सकते हैं ज़रूर इन का कोई बनाने वाला है, लेकिन इस के आगे हमारी अ़क्ल और कुछ न बता सकी कि इस सृष्टि का बनाने वाला कौन है? कहां है? और उस ने यह सृष्टि क्यों बनाई है?

अ़रब देश के मक्का नगर में पैदा होने वाले एक शख़्स (व्यक्ति) जिन का नाम मुह़म्मद था उन्होंने बताया था कि मैं अल्लाह का रसूल (सृष्टिकर्ता का सन्देष्टा) हूं। इस ख़िल्क़त का जो ख़ालिक़ है उस का अस्ल नाम अल्लाह है, वैसे उस की सिफ़ात (गुणों) के लिहाज़ से उस के बहुत से अच्छे–अच्छे नाम हैं। इबादत के लाइक़ (पूजा योग्य) सिर्फ वही है, उस ने मुझ को अपना अन्तिम रसूल (सन्देष्टता) बना कर भेजा है। मेरे बअ़द (पश्चात) अब कोई और रसूल या नबी न आए गा, (रसूल को नबी भी कहते हैं) अब रहती दुन्या तक के इन्सानों के लिए ज़रूरी है कि वह मेरे बताए गए तरीक़े से ज़िन्दगी गुज़ारें तभी उन को नजात (सफलता) मिल सकती है। हमारी अ़क़्ल ने मुह़म्मद साहिब की इस बात को मान लिया और हमारी अ़क़्ल को ह़क़ीक़ी इल्म (सत्य ज्ञान) मिल गया जिस से वह मुतमइन (सन्तुष्ट) हो गई।

ह़ज़रत मुह़म्मद साहिब ने अल्लाह की तरफ़ से जो बातें बताई हैं वही इस्लाम है और उन सभी बातों को जो मान ले वही मुस्लिम या मुसलमान है। इस को अ़रबी के दो छोटे जुम्लों में इस तरह़ कहा जाता है।

ला इलाह इल्लल्लाहु, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि, अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

यह बात सिर्फ़ ज़बान न कहे बल्कि दिल इस की गवाही भी दे, मन इस का साक्षी बने जिस को अ़रबी भाषा में यों बताया :

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु, व अश्हदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाहि। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं। यहां यह ज़रूरी बात भी याद रखना है कि जो शख़्स मुह़म्मद साहिब की बात मान ले और मुसलमान हो जाए वह जब आप का नाम ले तो शुरूअ़ में ह़ज़रत लगाए और आख़िर में आप के लिये अल्लाह से कृपा मांगे उस के लिए अ़रबी शब्द सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम (आप पर अल्लाह की रह़मत और सलामती हो) कहे। लिखने में कभी इस वाक्य के संकेत के लिए केवल (सल्ल० या स०) लिख दिया जाता है परन्तु ज़बान से पूरा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कहना चाहिए।

जो शख़्स इस्लाम स्वीकार करे अब वह ह़ज़रत मुह़म्मद (स०) के बताए हुए तरीक़े से जीवन बिताए सब से पहला काम तो उस के लिए यह है कि वह पाखाने के पश्चात तो पानी से धो कर सफ़ाई करता ही था, अब पेशाब के पश्चात भी पानी से धोकर सफ़ाई करे पानी ना मिले तो मिट्टी के ढेले या टवाइलेट पेपर से साफ़ करे जिस्म या कपड़े में पेशाब न लगने पाए, यह सीखे कि इस्लाम में नहाना कब ज़रूरी होता है और कैसे नहाया जाता है? वुज़ू करना सीखे और यह कि वज़ू करना कब ज़रूरी होता है? और वुज़ू कब टूट जाता है। कपड़े से जिस्म के किन किन हिस्सों को छुपाना ज़रूरी होता है। फिर नमाज़ पढ़ना सीखे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े।

ह़ज़रत मुह़म्मद (स०) ने बताया कि जो इस्लाम लाए वह कहे : अश्हदु ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुह़म्मदर्रसूलुल्लाहि (स०)

दूसरी बात आपने बताई कि नमाज़ की पाबन्दी करे (अर्थात पांचों वक़्त की नमाज़ अदा करे)

तीसरी बात आप ने बताइ कि मुस्लिम के पास माल आ जाए जो कम से कम ६१२ ग्राम चांदी हो या ६१२ ग्राम चान्दी ख़रीदने भर के पैसे हों, और उस माल पर साल बीत जाए तो उस सारे माल का चालीसवां भाग अर्थात

अढ़ाई प्रतिशत निकाल कर अपने ग़रीब मुसलमान भाई को दे दे, इस को ज़कात देना कहते हैं, यह ज़कात फ़र्ज़ है, जब तक ६१२ ग्राम चान्दी के बराबर पैसे या चान्दी रहेगी। हर साल ज़कात देना होगी।

चौथी बात आप (सल्ल०) ने बताई कि रमज़ान के महीने के रोज़े रखने होंगे, यह मअ़लूम किया जाए कि रोज़ा कैसे रखा जाता है और रोज़े में क्या क्या मना है।

पांचवीं बात आप (सल्ल०) ने बताई कि जब माल इतना हो जाए कि मक्के आने जाने के ख़र्चे भर का हो जब कि घर का ज़रूरी ख़र्च चलता रहे और मक्का आने जाने में कोई रूकावट न हो तो उ़म्र में एक बार मक्का जाकर ज़िल्हिज्ज की मुकर्ररः (नियुक्ति) तारीख़ों में ह़ज करे।

आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने बताया कि अल्लाह को माने अर्थात अल्लाह पर ईमान लाए, अल्लाह के फ़िरिश्तों को माने फ़िरिश्ते अल्लाह की नूरी मख़्लूक़ हैं जिन को हमारी आंखें देख नहीं पातीं यह मानना ज़रूरी है कि वह हैं उन के बारे में तफ़सील (विस्तार) के लिए आ़लिम लोगों से तअ़ल्लुक़ (सम्पर्क) करें। या किताबों में पढ़ें। यह भी मानें कि अल्लाह ने अपने बन्दों की हिदायत (पथ प्रदर्शन) के लिए अपने रसूलों पर किताबें भी उतारी हैं जैसे तौरात, जबूर और इन्जील और सब के अन्त में पवित्र क़ुर्आन, यह भी मानना ज़रूरी है कि क़ुर्आन मजीद के अतिरिक्त आसमानी जो किताबें थीं वह अपने ज़माने के लिए थीं अब केवल क़ुर्आन मजीद ही मानव जाति का रहनुमा (पथ प्रदर्शक) है। आप (स०) ने यह भी बताया कि मानव जाति की हिदायत के लिए समय–समय पर अल्लाह अपने नबी, रसूल (सन्देष्टा) भेजता रहा है उन सब को रसूल मानना उन का आदर करना ज़रूरी है लेकिन अन्तिम रसूल मैं (मुह़म्मद) हूं अब अल्लाह को राज़ी करने और नजात पाने के लिए मेरी पैरवी (अनुकरण) ज़रूरी है। आप ने बताया कि इस दुन्या का एक दिन अन्त होगा सूर फूंका जाएगा क़ियामत आएगी और सारी सृष्टि ख़त्म हो जाएगी फिर अल्लाह के हुक्म से दोबारा सूर फूंका जाएगा तो सारे इन्सान जी उठेंगे एक मैदान में इकटठा होंगे, अल्लाह तआ़ला का दरबार लगेगा वह अपने तमाम बन्दों का हिसाब लेगा जो इस दुन्या में अपने ज़माने के पैग़म्बर पर ईमान ले आया होगा और अपनी ज़िन्दगी पैग़म्बर के बताए तरीक़े पर बिताई होगी उस के लिए जन्नत होगी जहां हर तरह का सुख और चैन होगा, वह जन्नत से कभी निकाला न जाएगा और जो अपने ज़माने के रसूल पर ईमान न लाया होगा न उस की पैरवी की होगी उस के लिए जहन्नम का फ़ैसला होगा। जो आग और तरह तरह के अ़ज़ाबों का घर है। इस सब के साथ यह मानना भी ज़रूरी है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने इ़ल्म से हर एक की तक़दीर लिख रखी है। जिस के ख़िलाफ़ कुछ नहीं हो सकता, लेकिन कोई भी अपनी तक़दीर के बारे में कुछ नहीं जानता हर एक को अल्लाह के रसूल के द्वारा मिले हुए हुक्म पर चलना चाहिए और यह मानना चाहिए कि होगा वही जो तक़दीर में लिखा है, तक़्दीर के बारे में ज़ियादा कुरेद करने से रोका भी गया है।

जिस को अल्लाह तआ़ला इस्लाम की तौफ़ीक़ दे उस के लिए यह ज़रूरी बातें लिख दी गईं लेकिन अब उसको पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैरवी में गुज़ारना है शादी, ग़मी, व्यापार, खेती, लेन देन, खान, पान पहनावा, व्यवहार सब में अल्लाह के रसूल का पथ प्रदर्शन मौजूद है, किताबों द्वारा या आ़लिमों द्वारा मालूम करके उसी के अनुसार ज़िन्दगी बिताएं।

परवर दिगार ऐ आली जाह

अमतुल अ़ज़ीज़

परवरदिगार ऐ आ़लीजाह
मुह़ताज तेरे महरो माह
सारे गदा वो बादशाह
हर एक पर है तेरी निगाह
तू है मुसव्विर और बसीर
सत्तार व वह्हाब और ख़बीर
तूने मुझे पैदा किया
नादान थी दाना किया
पस्ती में थी बाला किया
अब भी है तेरा आसरा
तू ह़य्युं क़य्यूम व अह़द
तू वाजिदो माजिद समद
सर पर है मेरे बारेगिरां
मजबूर व बेकस नातवां
ऐ रब्बे रहीमे बे कसां
अपनी अ़ता कर तू अमां
तुझ को तो सब आसान है
तू कादिरे जीशान है।

यासीन व ताहा और अमीन
हैं आप ख़ल्मुल मुर्सलीन
और रह़मतुल्लिल आ़लमीन
और हैं शफ़ीउ़ल मुज़नबीं
अह़मद मुह़म्मद पाक नाम
उन पर हों मेरे लाखों सलाम

एकेश्वरवाद की महत्ता

जमील अहमद खां रायबरेली

प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सम्पूर्ण सृष्टि का 'रब' है, अत्यन्त करुणामय और दया करने वाला है, बदले के दिन का मालिक है। (कुरआन, १:१–३)

अर्थात, वह स्वामी है, वही सृष्टा है। जमीन और आसमान में जो कुछ है सब उसी का है।

लोक तथा परलोक में उसी का हुक्म चलता है। उसके आदेश के बिना कोई पत्ता भी नहीं हिलता। उसी के आदेश से हवा चलती है। बादल पानी बरसाता है। सूर्य प्रकाश देता है और रात अंधेरे की चादर ओढ़ा कर लोगों को स्वप्न लोक की सैर कराती है। सब कुछ उसी के अधीन है। इसीलिए प्रशंसा के योग्य वही है। वही वन्दना का अधिकारी है। वही पूजा योग्य है। वही और केवल वही अल्लाह है। उसी की इबादत की जानी चाहिए। जो कुछ मांगना हो उसी से मांगना चाहिए। उसी के सामने सर को झुकाना चाहिए। वह मारना चाहे तो कोई बचा नहीं सकता और बचाना चाहे तो कोई बाल बांका नहीं कर सकता। इसीलिए उसी की शरण में जाना चाहिए। वही सबसे सुरक्षित शरणस्थली है।

हरे–भरे जंगल, बर्फ से ढकी सफेद पहाड़ियां, आकाश में उमड़ते–घुमड़ते सफेद काले बादल, चहचहाते पक्षी, रंग–बिरंगे फूल सब उसी की कला के प्रदर्शन हैं। जिधर नजर उठाएं प्रकृति की सुन्दर रचनाएं देखने को मिलती हैं। मनुष्य उसकी सर्वोत्तम कृति है, सर्वश्रेष्ठ प्राणी समस्त योनियों में सर्वोत्तम है, यहां तक कि आसमानी मख्लूक (फरिश्तों) से भी इसका स्थान ऊंचा है।

फिर केवल उसने पैदा ही नहीं किया है बल्कि मनुष्य को अनगिनत नेमतों (लाभ्य पदार्थों) से भी नवाजा है। आंखें दीं जिससे वह देखता है। कानों से सुनता है। नाक से खुशबू–बदबू की अनुभूति करता है दिमाग से अच्छे बुरे का ज्ञान होता है। दिल बिना रूके धड़कता रहता है। यदि हृदय एक क्षण के लिए भी धड़कना छोड़ दे। सांस शरीर के भीतर न जाए तो मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह उस सर्वशक्तिमान का शुक्र अदा करे जिसने उसे असंख्य नेमतों से नवाजा है।

किन्तु कुछ लोग उस सर्वशक्तिमान अल्लाह को छोड़कर उसकी ही किसी रचना के आगे माथा नवाने लगते हैं। उसी की पूजा करने लगते हैं। अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उससे याचना करने लगते हैं। मनुष्य को अल्लाह ने सामर्थ्यवान बनाया है लेकिन वह अपने से छोटे, तुच्छ एवं सामर्थ्यहीन वस्तु के सामने झुक जाता है। इस तरह मनुष्य अपने स्तर से बहुत गिर जाता हैं। मनुष्य का यह कर्म उसका पतन ही नहीं जघन्य पाप भी है।

खाते हैं उस मालिक की पैदा की हुई चीजें, रहते हैं उसी की बनाई हुई धरती पर सांस लेते हैं उसी की दी हुई हवा में और उसी के दिए हुए जल को ग्रहण करते हैं। लेकिन गुणगान करते हैं बूसरों का जिन्होंने कुछ पैदा नहीं किया बल्कि स्वयं पैदा किए गये हैं।

अल्लाह तो समस्त सृष्टि का रचनाकार है। वह रहमान और रहीम है। हमारी तमाम कमियों, कोताहियों गलतियों एवं अवज्ञाओं के बावजूद धरती पर किसी वस्तु की कमी नहीं होने देता।

हमें याद रखना चाहिए कि जीवन एक परीक्षा है। अच्छे कर्म करने वाला ही सफल होगा और बुरे कर्म करने वाला विफल। अच्छे कर्मों के लिए बेहतरीन पारितोषिक का वादा है और बुरे कर्मों के लिए भयंकर सजा निश्चित है।

धर्म और अधर्म, पाप और पुण्य एक निश्चित मापदण्ड है जो धर्म (दीन) के रूप में ईशप्रदत्त है। अल्लाह का भेजा हुआ है, मानवकृत नहीं है। मनुष्य तो अल्लाह के भेजे हुए उस मापदण्ड में अपनी मनमानी बिगाड़ पैदा करने की कोशिश करता है ताकि अपना जीवन मनमाने ढंग से व्यतीत कर सके। अपने हितों को धर्म में सुरक्षित करा सके। ऊंच–नीच, भेदभाव, असमानता, दान–दक्षिणा आदि जाति विशेष के लिए सुरक्षित कर लेना, आदि–आदि धर्म में ग्लानि पैदा करना ही है।

कभी–कभी धर्म में इतना अधिक बिगाड़ आ जाता है कि उसका असली चेहरा ही बदल जाता है। ऐसी स्थिति में धर्म की पुर्नस्थापना हेतु अल्लाह द्वारा पैगम्बर (सन्देष्टा) भेजने का प्रावधान था। ईश्वर के ये संदेष्टा

विभिन्न समस्या में विभिन्न कौमों में भेजे गये, जिन्होंने दुनिया की कौमों को अल्लाह का संदेश दिया। समाज में आये बिगाड़ को दूर किया और लोगों को जिन्दगी बिताने का ऐसा तरीका बताया, जिससे अल्लाह प्रसन्न हो। यह तरीका स्वनिर्मित नहीं, बल्कि ईशनिर्मित है।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आखिरी पैगम्बर हैं। आप (सल्ल०) के बाद अब कोई पैगंम्बर नहीं आएगा। आपका दीन (धर्म) सारे संसार के लिए है।

चूंकि आपका दीन आखिरी ईश्वरीय संदेश है जो कुरआन मजीद के रूप में उपलब्ध व सुरक्षित है। अल्लाह ने इसे बड़े ही वैज्ञानिक विधि से लाखों इन्सानों के दिमाग में सुरक्षित कर दिया है ताकि इसमें एक शब्द या मात्रा की भी घट–बढ़ न हो सके। कोई अपनी मनमानी न कर सके। अल्लाह का यह अंतिम विधान अपरिवर्तनीय है।

सारे मनुष्य एक ही माता–पिता की संतान हैं। सब भाई–भाई हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं है। जातिभेद, रंगभेद, भाषा व संस्कृति का भेद समाप्त करके सभी मनुष्यों को एक रिश्ते में बांधा गया है। वसुधैव कुटुम्बकम् का खोखला नारा ही नहीं दिया गया है बल्कि इसको अमलीजामा भी पहनाया गया है। "हज्ज" के अवसर पर पूरी दुनिया बिना किसी भेदभाव के एक जगह इकट्ठा हो जाती है और किसी प्रकार का कोई बिगाड़ पैदा नहीं होता। यह क्रम सदियों से लगातार जारी है।

इस्लाम के सभी नियम कानून तो उसके शरीर के समान हैं किन्तु एकेश्वरवाद यानी अल्लाह को एक मानना इस्लाम की आत्मा है। यदि कोई मुसलमान अल्लाह को एक मानने से इन्कार कर देता है तो इस्लाम से खारिज हों जाता है। जिस प्रकारा शरीर से आत्मा निकल जाए तो शरीर मिट्टी का हो जाता है, उसी प्रकार इस्लाम के सभी नियम कानून कोई महत्व नहीं रखते जब तक उसमें अल्लाह के एक होने की धारणा शामिल न हो। अल्लाह की सत्ता में किसी को भागीदार बनाना या मूर्तियों को पूजना आदि इस्लाम में शिर्क है, जघन्य पाप है। इसलिए मुसलमान कुछ भी हो सकता है, अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराने वाला कभी नहीं हो सकता है। अल्लाह की सत्ता में किसी को भागीदार नहीं बना सकता। मूर्तिपूजक नहीं हो सकता।

इस्लाम और एकेश्वरवाद के इस अटूट संबंध के बारे में जान लेने के बाद हम देश के उन नागरिकों को सम्बोधित करना चाहते हैं जो आर. एस.एस. की विचारधारा से प्रभावित हैं। यह बात तो पूरी तरह स्पष्ट हो चुकी है कि एक अल्लाह में ही पूर्ण आस्था रखना वहदानियत है। अल्लाह ही सृष्टि का रचयिता है। पृथ्वी सृष्टि का एक छोटा सा हिस्सा है। हमारा देश भारत पृथ्वी का एक भू–भाग है। हम भारतवासियों का यह कर्तव्य है कि देश की खुशहाली के लिए सदैव तत्पर रहें। भुखमरी, बेरोजगारी आदि को दूर करने के लिए अनथक प्रयास करें। शांति व्यवस्था व न्याय व्यवस्था में सहयोग करें।

किन्तु खेद का विषय है कि कुछ मुठ्ठी भर लोगों को भारत की अनेकता मं एकता फूटी आंख नहीं भाती। वे इस देश को एक विशेष रंग में रंगना चाहते हैं। विभिन्न मतावलम्बियों की आस्थाओं को समाप्त कर अपनी आस्था से जोड़ना चाहते हैं। उनके इस काम से भारत कितना भी अशान्ति हो इसकी उनको परवाह नहीं। वे तो भारत को हर मूल्य पर भगवा रंग में रंग देना चाहते हैं। लेकिन ७५ वर्षों के अपने प्रयासों के बाद भी वे मुट्ठी भर ही हैं। भारत का जन समुदाय उनके साथ नहीं है। इसी लिए वे अभी तक अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो पाए हैं। वे भारत को हजारों वर्ष पीछे ढकेलना चाहते हैं। उन्हीं के प्रयासों से देश में दंगा–संस्कृति का जन्म हुआ है। परन्तु भारत की आत्मा धर्मनिरपेक्ष रही है। आज की तिथि में यह भी एक सच्चाई है कि भारत में जहां भी अशांति है उसके कारणों में एक कारण आर. एस.एस. की विचारधारा है।

मुसलमानों की आस्था एक अल्लाह में है क्योंकि इस्लाम धर्म की यही आस्था है। सहज बात है कि जिन लोगों का हर काम मूर्तिपूजा से शुरू होता है और मूर्तिपूजा पर ही समाप्त होता है, उन्हें एकेश्वरवाद की यह आस्था जल्दी समझ में ही नहीं आती। एक मुसलमान अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत कर ही नहीं सकता।

आर.एस.एस. वालों का यह कथन है कि क्या मुसलमान सरस्वती वन्दना भी नहीं कर सकते? भारत माता की पूजा भी नहीं कर सकते? और इन बातों को देश की वफादारी से जोड़ना अत्यन्त भ्रामक है। ऐसी बातों पर जोर देना ही अशांति का करण बनता है और दंगा–संस्कृति को जन्म देता है, क्योकि किसी को आस्था के विपरीत

आचरण के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।

आइये, तनिक इन लोगों के आचरण पर भी थोड़ा विचार कर लें। विश्व स्तर पर भ्रष्टाचार में भारत का स्थान ७९वां है। ६–७ देशों को छोड़ कर भारत सबसे निर्धनतम देश है। २६ जनवरी और १५ अगस्त को 'भारत माता की जय' कहा। 'वन्दे मातरम्' दोहराय। भारत माता की मनगढ़ंत तस्वीर की पूजा की, माल्यार्पण किया और बस देश भक्ति की इतिश्री हो गयी। देशभक्ति का प्रमाण–पत्र मिल गया। अब इनसे बड़ा देश का वफादारा कौन है?

इसके बाद शुरू होता है भ्रष्टाचार, अत्याचार, अनाचार, घपले, घोटाले, गबन शोषण, केवल अपना और अपने परिवार का भरण पोषण, दहेज की आग में लड़कियों की आहुति, भ्रूण हत्याएं, लूटमार और हत्या, दंगा–फसाद आदि। क्या यही देश भक्ति है ?

किसी देश की पूजा व वन्दना से उस देश की वफादारी को जोड़ना सरासर गलत और अन्याय है। क्या अमेरिका के नागरिक अमेरिकी माता की पूजा करते हैं? यदि नहीं तो क्या उनकी देशभक्ति पर कोई सन्देह है? क्या कोई ब्रिटिश निवासी 'ब्रिटिश माता' की पूजा करते हैं? यदि नहीं तो देश के प्रति उसकी वफादारी भारतवासियों की वफादारी से किसी स्तर में कम है? ऐसा कदापि नहीं है। प्रत्येक देश का नागरिक अपने देश के प्रति पूरी तरह वफादार होता है। भारत का इतिहास भी इसका साक्षी है। टीपू सुल्तान से लेकर १८५७ की क्रान्ति तक हजारो मुसलमानों ने अपने प्रणों की कुर्बानी दी।

स्वतंत्रता संग्राम से मुसलमानों का योगदान किसी से कम नहीं है। १९४७ के बाद चीन और पाकिस्तान से होने वाले युद्धों में मुसलमानों ने देश प्रेस की ज्वलंत मिसालों पेश की हैं। तथाकथित देशभक्तों से भारतीय मुसलमान कई गुना अधिक देशभक्त हैं। जब भी देश पर कोई विपदा या प्राकृतिक विपदा आयी, देश के मुसलमान तन–मन–धन से सबसे आगे नजर आए। मुस्लिम शासकों ने इस देश का धन इसी देश में लगाया। जबकि कथित देशभक्त अनुचित ढंग से की गयी कमाई को विदेशों में जमा करते हैं।

नीचे कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं। ये सुझाव वैसे तो सभी धर्मों के लिए हितकर हैं लेकिन यदि आर.एस.एस. विचार धारा वाले भी सुझावों पर अमल करें तो इससे उनका भी हित होगा –

१. ऊंच–नीच को समाप्त करने का खोखला नारा ही न दें बल्कि इसके लिए वास्तविक प्रयास करें और आपस में शादी–विवाह का सम्बन्ध स्थापित करें।

२. दहेज प्रथा को समाप्त कराने का भरसक प्रयत्न करें। आज दहेज लोभियों के कारण हजारों अबलाओं की हत्याएं और हजारों कन्याओं की भ्रूण हत्याएं हो रही हैं।

३. शराब व नशे की दूसरी चीजों पर रोक लगे, तभी बुराइयों को रोकना संभव है। भाजपा सरकारें इसे और बढ़ावा दे रही हैं।

४. त्योहारों को सदाचार, शिष्टाचार एवं शालीनता के दायरे में मनाने का प्रयास करें।

५. सद्भावना, शिष्टाचार प्रेम भाव आदि के लिए अथक प्रयास किया जाना चाहिए जिससे देश का सर्वांगीण विकास हो सके।

नमाज़ के बीच मोबाइल की घंटी

कोई व्यक्ति मोबाइल बन्द करना भूल जाए और नमाज के बीच घंटी बजने लगे तो फौरन उसे बन्द करने की कोशिश करनी चाहिए। जेब में हाथ डालकर या मोबाइल बाहर निकाल कर, जिस्म की थोड़ी सी हरकत के साथ उसे आसानी से बन्द किया जा सकता है।

कुछ लोग समझते हैं कि नमाज के अरकान की अदायगी में जिस्म की जो हरकत होती है, उसके अलावा मामूली–सी हरकत से भी नमाज खराब हो जाती है। हालाके यह बात सही नहीं है। कई हदीसें हैं, जिनसे मालूम होता है कि नमाज के बीच जरूरत पड़ने पर थोड़ी–सी हरकत से नमाज खराब नहीं होती। इस सिलसिले में फुक्हा इस बात पर सहमति है कि अमले कसीर (कोई बड़ी हरकत) से नमाज खराब हो जाती है, अमले कलील (छोटी हरकत) से नहीं। उनके अनुसार अमले कसीर वह है कि कोई व्यक्ति नमाज के बीच कोई ऐसा काम करे कि उसे देखने वाले को लगे कि वह व्यक्ति नमाज नहीं पढ़ रहा है।

अल्हम्दु लिल्लाहि

इदारा

प्रश्नः अल्लाह तआ़ला के बारे में क्या अ़क़ीदा रखना चाहिए?

उत्तर : तमाम आ़लम (समस्त सृष्टि) पहले मौजूद न थी अल्लाह तआ़ला के पैदा करने से वजूद में आई। अल्लाह सबका ख़ालिक़ (सृष्टिकर्ता) है। ● अल्लाह एक है उस जैसा कोई नहीं है। ● वह किसी का मुहताज (आश्रित) नहीं सब उसके मुहताज हैं। ● वह किसी से जना नहीं गया वह खुद से है। ● उस ने किसी को जना नहीं अपनी क़ुदरत (शक्ति) से पैदा किया है। ● न उस की कोई बीबी है न औलाद, सब उसकी मख़्लूक़ (सृष्टि) हैं। ● कोई भी उस के बराबर का नहीं है। ● वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। ● कोई चीज़ उस जैसी नहीं वह सब से निराला है। वह ज़िन्दा है। ● हर चीज़ पर उस को क़ुदरत (सामर्थ्य) है। ● कोई चीज़ उसके इ़ल्म (जानकारी) से बाहर नहीं। ● वह सब कुछ देखता है। ● वह सब कुछ सुनता है। ● वह बोलता बात करता है अर्थात कलाम करता है लेकिन उस का कलाम हमारे कलाम से अलग है। ● वह जो चाहे करता है कोई उस को रोक टोक करने वाला नहीं। ● पूजने के लाइक़ वही है। ● उस का कोई साझी नहीं। ● वह अपने बन्दों पर मेहरबान (दयावान) है। ● वह बादशाह (जनपति) है। ● वह सारे ऐबों (दोषों) से पाक है। ● वही अपने बन्दों को सब आफ़तों से बचाता है। ● वही इ़ज़्ज़त वाला है। ● वही बड़ाई वाला है। ● उस ने सब को बनाया उस को किसी ने नहीं बनाया। ● वह गुनाहों (पापों) को बख़्शने (क्षमा करने) वाला है। ज़बरदस्त (प्रभुत्व प्राप्त) है। ● बहुत देने वाला है। ● रोज़ी (आजीविका) देने वाला है। ● वह जिस की रोज़ी चाहे तंग कर दे और जिसकी चाहे ज़ियादा कर दे। ● वह जिस को चाहे नीचा कर दे जिस को चाहे ऊंचा उठा दे। ● जिस को चाहे इ़ज़्ज़त (मानमर्यादा) दे जिस को चाहे ज़िल्लत (तिरस्कार) दे। ● वह इन्साफ़ वाला है। ● वह तह़म्मुल वाला (धैर्यवान) है। ● वह इबादत की क़द्र करने वाला है। ● दुआ़ओं को क़बूल करने वाला है। ● वह वुसअ़त समाई वाला है। ● वह सब पर ह़ाकिम है उस पर कोई ह़ाकिम नहीं। ● उस का कोई काम ह़िकमत से खाली (ज्ञान रहित) नहीं। ● वह सब का कार साज़ (काम बनाने वाला) है। ● उसी ने सब को पहली बार पैदा किया है वही क़ियामत में सब को दोबारा पैदा करेगा। ● वही जिलाता है, वही मारता है। ● उसको उसकी निशानियां और सिफ़तों (गुणों) से लोग पहचानते हैं। ● उसकी ज़ात की बारीकी को कोई नहीं जान सकता। वह गुनहगारों (पापियों) की तौबा क़बूल करता है। ● जो सज़ा के क़ाबिल (योग्य) हैं उन को वह सज़ा देता है। वही हिदायत देता है अर्थात सत्य मार्ग दिखाता है। ● जहाँ में (जगत में) जो कुछ होता है उसी के ह़ुक्म से होता है। ● बे उसके ह़ुक्म के एक पत्ता नहीं हिल सकता। ● वह न सोता है, न ऊंघता है। ● वह तमाम आ़लम समस्त सृष्टि की ह़िफ़ाज़त (सुरक्षा) से थकता नहीं। ● वही पूरे आ़लम (समस्त सृष्टि) को थामे हुए है। सभी कमाल की सिफ़तें (अच्छे गुण) उस को ह़ासिल (प्राप्त) हैं। ● उस में कोई भी नुक़्सान की सिफ़त (अवगुण) नहीं है वह ऐबों से पाक (दोष रहित) है। ● उस की सारी सिफ़तें (गुण) हमेशा से हैं और हमेशा रहेंगी।

टीचर बनना

पढ़ाई के दौरान अक्सर ऐसे भी स्टूडेंट्स होते हैं जो कुछ कठिन कंसेप्ट को अपने दोस्तों को समझाते हुए देखे जा सकते हैं। अगर ये स्टूडेंट्स अपने साथियों को कुछ समझा पा रहे हैं, तो इसके पीछे कारण इनकी ज्यादा नॉलेज तो होती ही है। साथ ही, टीचिंग के प्रति इनका रूजहान भी इस काम में इनकी मदद करता है।

अगर आप एक सफल टीचर बनना चाहते हैं, तो आपको केवल उस सब्जेक्ट की गहन जानकारी ही नहीं होनी चाहिए, बल्कि आपको यह भी पता होना चाहिए कि उस नॉलेज को अपने स्टूडेंट्स तक कैसे पहुंचाएं। टीचिंग का क्षेत्र काफी विस्तृत है और ऐसे कई क्षेत्र हैं, जिनमें विशेषज्ञता की जरूरत होती है। टीचिंग के हर लेवल पर अलग तरह की योग्यता होनी चाहिए। अगर आपको बच्चों के बीच रहना पसंद है, तो स्कूल लेवल पर टीचिंग करना अच्छा ऑप्शन है और अगर आप यंग स्टूडेंट्स के साथ रहना चाहते है। तो आपको ऊंची शिक्षा के इन्सटीट्यूट की ओर देखना चाहिए।

आपके प्रश्नों के उत्तर?

इदारा

प्रश्न : एक मुसलमान पर ग़ुस्ल कब फ़र्ज़ होता है?

उत्तर : ग़ुस्ल के मसाइल शर्म से तअ़ल्लुक़ रखते हैं। बालिग़ मर्द बालिग़ मर्द को और बालिग़ औरत, बालिग औरत को **बताए, इस** में भी बाप बेटे को, भाई भाई **को, बहन** बहन को, मां बेटी को बताने में इह्तियात करे ताकि बेहयायी न फैले, बेहतर है कि किताबों और तहरीरों से यह मसाइल समझाए जाएं, यहां संक्षेप में लिखा जा रहा है। मुजामअ़त (मैथुन क्रिया) यअ़नी हम बिस्तरी, इह्तिलाम (स्वप्नदोष) औरतों के लिए हैज़ (मासिक धर्म) निफ़ास (प्रसव रक्त) से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है। बिना ग़ुस्ल न मस्जिद में दाख़िल हो सकते हैं, न नमाज़ पढ़ सकते हैं, न क़ुर्आन छू सकते हैं। न क़ुर्आन पढ़ सकते हैं।

प्रश्न : ग़ुस्ल किस तरह किया जाता है?

उत्तर : पाक होने की नियत से, पहले जिस्म या पहने हुए कपड़े में जहां नजासत (गन्दगी) लगी हुई है उस को धो कर पाक करें। फिर वुज़ू करें, नाक के नथनों में पानी पहुंचाएं, मुंह में कुल्ली लेकर ग़रारा करें फिर पूरे बदन पर पानी बहाकर धोएं। नाक में पानी पहुंचाना, ग़रारा करना और पूरे बदन पर पानी बहाना इन तीनों चीज़ों में से कोई बात रह जाएगी तो ग़ुस्ल न होगा। अलबत्ता रोज़े की हालत में रोज़े के वक्तों में ग़रारा मुआ़फ़ है।

प्रश्न : ग़ुस्ल करने (नहाने) और धोने में क्या फ़र्क़ है ?

उत्तर : बदन या कपड़े में जहां कहीं नजासत लगी हो पाक होने के लिए उसका धोना ज़रूरी है, जैसे कोई नजासत के गढ़े में उतर गया और उस के बदन में जगह जगह नजासत लग गई तो उस के बदन पर जहां जहां नजासत लगी है धो डाले पाक हो जाएगा लेकिन जब ग़ुस्ल फ़र्ज़ होगा तो पूरे बदन पर पानी बहाना नाक के नथनों में पानी पहुंचाना, ग़रारे के साथ कुल्ली करना भी ज़रूरी होगा।

प्रश्न : वुज़ू कब और कैसे किय जाता है?

उत्तर, नमाज़ पढ़ने और क़ुर्आने मजीद की तिलावत करने के लिये वुज़ू किया जाता है, बे वुज़ू नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती। जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो ग़ुस्ल किये बिना उसका वुज़ू नहीं हो सकता और जब उस ने ग़ुस्ल कर लिया तो उस का वुज़ू भी हो गया।

वुज़ू का तरीक़ा : पाकी हासिल करने के इरादे से, बिस्मिल्लाह पढ़ कर पाक पानी से पहले गट्टों तक हाथ धोए, कुल्ली करे, मिस्वाक करके दान्त साफ़ करे, फिर पूरा चेहरा पेशानी के बालों से ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक ठीक से धोए, दोनों हाथ कुहनियों समेत धोए, फिर भीगा हाथ सर पर फेरे, फिर पहले दाहना पैर टखनों समेत धोए फिर बायां पैर टखनों समेत धोए वुजू हो गया।

प्रश्न : अगर ग़ुस्ल के लिए या वुजू के लिए पानी ना मिले, या किसी बीमारी के सबब पानी नुक़्सान करे तो पाकी हासिल करने के लिये क्या क़रें?

उत्तर : इस उम्मते मुह्म्मदिया (अ़ला साहिबिहा अस्सलाम व स्सलात) अल्लाह का ख़ास करम है कि हुक्मी नजासत दूर करके पाकी हासिल करने के लिए पानी न मिलने या पानी नुक़्सान करने की सूरत में पाक मिट्टी से पाकी हासिल करने की इजाज़त दे दी यअ़नी तयम्मुम की निअ़मत से नवाज़ दिया यअ़नी जब किसी को पानी न मिले या पानी नुक़्सान करे तो वह इस तरह तयम्मुम करे कि पाकी हासिल करने की नीयत से बिस्मिल्लाह पढ़ के दोनों हथेलियां पाक मिट्टी पर मारे फिर पूरे चेहरे पर हथेलियां मल ले दोबारा पाक मिट्टी पर हाथ मार कर दोनों हाथ कुहनियों समेत मल ले बाएं हाथ से दाहने हाथ को मले और दाहने हाथ को बाएं हाथ से मल लें ग़ुस्ल या वुज़ू की पाकी हासिल हो जाएगी, अलबत्ता ग़ुस्ल के तयम्मुम में जिस्म या कपड़े पर ज़ाहिरी नजासत लगी हो तो उसे धोकर पाक करना चाहिए।

प्रश्न : वुज़ू या तयम्मुम कब टूटता है?

उत्तर : पाख़ाना पेशाब करने या इन रास्तों से किसी चीज़ जैसे हवा वग़ैरह निकलने से, टेक लगा कर सोने से वुज़ू टूट जाता है। हनफ़ी मसलक में जिस्म के किसी भी हिस्से से ख़ून या पीप निकलने से वुज़ू टूट जाता है, जिन बातें से वुज़ू टूटता है उन ही बातों से तयम्मुम भी टूटता है, जिस

उज़्र से तयम्मुम किया था वह उज़्र ख़त्म होते ही तयम्मुम टूट जाएगा, मसलन पानी नहीं मिल रहा था पानी मिल गया तो तयम्मुम टूट गया ऐसे ही किसी बीमारी के सबब पानी नुक़्सान कर रहा था अब बीमारी दूर हो गई पानी नुक़सान न करेगा तो तयम्मुम ख़त्म हो गया, ग़ुस्ल का तयम्मुम किया था तो ग़ुस्ल करे वुज़ू का तयम्मुम किया था तो अब वुज़ू करे।

प्रश्न : ज़कात का माल किन लोगों को न देना चाहिए ?

उत्तर : जिस के पास निसाब भर का माल हो उस को ज़कात नहीं दे सकते (अर्थात जिसके पास ६१२ ग्राम चान्दी हो या ६१२ ग्राम चांदी ख़रीदने भर के पैसे हों उस को ज़कात देंगे तो अदा न होगी।) जो लोग अपने को सय्यिद कहते हैं जैसे ह़सनी, ह़ुसैनी, अ़लवी वग़ैरह उन को भी ज़कात न दी जाएगी अपने उसूल यअ़नी बाप, दादा, पर दादा ऊपर तक, नाना, पर नाना ऊपर तक इसी तरह़ दादी पर दादी, नानी, पर नानी वग़ैरह को ज़कात नहीं दी जा सकती। अपने फ़ुरूअ़ यअ़नी औलाद बेटा, बेटी, नवासा, नवासी, पोता, पोती वग़ैरह को ज़कात न दी जाएगी यह ह़ज़रात ग़रीब हों और आप को अल्लाह ने माल दे रखा हो तो ज़कात के अ़लावा दूसरे माल से उनकी मदद करें सवाब मिलेगा। शौहर अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को, यह एक दूसरे को ज़कात नहीं दे सकते। ग़ैर मुस्लिम को ज़कात का माल नहीं दिया जा सकता। मालदार आदमी की नाबालिग़ औलाद को भी ज़कात नहीं दे सकते। मस्जिद व मदरसे की तअ़मीर और मुर्दे के गोर व कफ़न पर भी ज़कात की रक़म ख़र्च नहीं कर सकते।

प्रश्न : ज़कात पाने के अस्ल ह़क़दार कौन लोग हैं ?

उत्तर : ज़कात पाने के सबसे ज़ियादा ह़क़दार अपने उसूल व फ़ुरूअ़ छोड़ कर क़रीबी रिश्तेदार हैं, जैसे, भाई, भतीजे, भतीजियां, बहन, बहनोई, भांजे, भांजियां, चाचा, चची, ख़ाला, ख़ालू, फूफी,फूफा, मामूं, ममानी, सास, ससुर, साले, दामाद, सौतेला बाप, सौतेली मां वग़ैरह इन के अ़लावा कोई और क़रीबी अ़ज़ीज़ हो तो उस को ज़कात देने में दुहरा सवाब है। हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ज़ीज़ों को ज़कात देने में दुहरा सवाब मिलेगा, एक ज़कात देने का दूसरा सिल–ए–रह़िमी और अ़ज़ीज़ों से अच्छे बरताव का। इन के बअ़द दोस्तों और पड़ोसियों में जो मुस्तह़िक़्के ज़कात हों उन को देना चाहिए। फिर जिन लोगों से दीनी नफ़्अ़ ज़ियादा हो जैसे मुस्तह़िक़ तालिबे इल्म, दीन की तअ़लीम देने वाले, दीन के दाअ़ी और मुबल्लिग़ वग़ैरह। फ़सादात में मुसलमानों के घर तबाह हो गये, सैलाब या तूफ़ान में गांव के गांव उजड़ गये ऐसी जगहों पर ज़कात की रक़म से घर बना कर ग़रीब मुसलमानों को दिये जा सकते हैं। इसी तरह़ ज़कात की रक़म से उन के कपड़े वग़ैरह तैयार किये जा सकते हैं। बल्कि ऐसी मुसीबत पर उन की मदद करना ज़रूरी है।

प्रश्न : क्या औलियाउल्लाह में सबसे बड़ा दर्जा सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी का है?

उत्तर : सारी मख़लूक़ में सब से बड़ा दर्जा अल्लाह के आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का है। आप के बारे में कहा गया :

"बअ़द अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर"

(मुख़्तसर बात यह है कि ख़ुदा के बअ़द सबसे बड़े आप हैं)

फिर सारे अंबिया (अ़लैहिमुस्सलाम) का दर्जा है। फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के सह़ाबा का दर्जा है। उन में भी तर्तीब से अबू बक्र, उ़मर, उ़समान व अ़ली (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) सब से अफ़ज़ल हैं। याद रहे कि रसूल हों, नबी हो सह़ाबी हों सब अल्लाह के वली भी हैं। बेशक सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी का शुमार बड़े बुज़ुर्गों में है, उन को बड़े पीर कहना भी सह़ीह़ है लेकिन वह सह़ाबी न थे लिहाज़ा वह किसी सह़ाबी के बराबर नहीं हो सकते रहे सह़ाबा के बअ़द के औलियाउल्लाह उन में छोटे बड़े की दर्जा बन्दी करना हम लोगों को न चाहिए। उनके दरजात का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला ही को है।

प्रश्न : शराब का ठेका लेना और उस की तिजारत करना कैसा है?

उत्तर : शराब बनाना, शराब बेचना, शराब का ठेका लेना, शराब पीना, शराब पिलाना, शराब के कारोबार में मदद करना इस्लामी नक़्तु–ए–नज़र से यह सारे काम ह़राम हैं।

प्रश्न : कोई छोटा सा दुरूद लिखिये जो याद करने में आसान हो और उसमें सलाम भी हो।

उत्तर : अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव्व अ़ला अलिही व अस्ह़ाबिही व बारिक व सल्लिम।

नानो टेकनोलाजी

औसाफ अहमद

नानो टेकनोलाजी का सम्बन्ध बहुत ही छोटी मशीन की इन्जीनियरिंग से है। आधुनिक विज्ञान में नानो का शब्द बहुत ही छोटे साइज को जाहिर करने के लिए बोला जाता है। नानो का मतलब है एक मीटर का एक ख़रबवां हिस्सा। यूं समझलीजिए कि नानो एक मिलीमीटर का करोड़वां हिस्सा होता है। और जो टेक्नोलाजी इस तरह की चीजें तैयार करती हैं उसे नानो टेकनोलाजी कहते हैं।

नानो टेकनोलाजी के प्रयोग ने हमारी औद्योगिक जिन्दगी की तस्वीर को एक दम बदल कर रख दिया है। जिन कम्प्यूटरों को रखने के लिए बीसवीं सदी की सातवीं दहाई में बड़े–बड़े कमरों की जरूरत पड़ती थी अब वही कम्प्यूटर एक लैप टाप में समा जाते हैं, मोबाइल फोन, मोबाइल कैमरे, डिजिटल कैमरे, पेनड्राइव यह सब नानोटेकनोलाजी का सबसे बड़ी **Miniaturizaion** (छोटी तस्वीरकशी) है।

नोनो टेकनोलाजी का प्रयोग अब स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में मुम्किन होने लगा है। अब कुछ एक वर्षों में ही एक ऐसी मशीन का रिवाज हो जाये जो मधुमेह (डायबिटीज़) के मरीजों के बदन में दाखिल कर दी जाये। यह मशीन अपने आप खून में शकर की मात्रा का अन्दाजा लगायेगी अपने आप खून में शुगर की अधिकता पायेगी तो इन्सोलीन की एक निश्चित मात्रा इस मशीन से खारिज होकर लबलबा (**Pancreas**) में पहुंच जायेगी। इस का साइज पेसमेकर के बराबर ही होगा।

साइंस की रिसर्च में एक बड़ा कारनामा जो पिछले दिनों अंजाम पाया वह **HUMAN GENOME Project** का पूरा होना है जिस में दुनिया भर के हजारों वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया और जिस के जरिये पूरे मानव शरीर की कोशिकामय (सेल्यूलर) और लैंगिक (सेक्स) ढांचा का अध्ययन किया गया। यह भी इस लिये मुम्किन हो सका कि इस से पहले सुपर कम्प्यूटर ईजाद हो चुके थे। इस प्रोजेक्ट के तहत पूरे इन्सानी शरीर के सेल्स का अध्ययन और उस के डीएनए का जानना मुम्किन हो गया। अनेक बीमारियों जैसे हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर जैसे रोगों में जीन्स का बहुत बड़ा रोल होता है। दो व्यक्ति जिन को एक जैसी बीमारी हो एक जैसे इलाज की प्रतिक्रिया अलग अलग दी गयी हों तो इस का कारण सिर्फ उन के जीन्स होते हैं।

विशेषज्ञों का विचार है कि केवल दस साल या इस से भी कम अवधि में यह मुम्किन हो सकेगा कि एक हजार डालर या इस से भी कम लागत पर किसी मरीज के पूरे शरीर का जिनोम स्ट्रक्चर तैयार किया जा सके। जब भी ऐसा हो सका तो उपचार व निदान की दुनिया में एक महान क्रान्ति बर्पा हो जायेगी। क्योंकि अगर किसी व्यक्ति को डायबेटीज है और उस का लबलबा काफी मात्रा में इन्सोलीन नहीं निकलता तो उस रोगी के डीएनए का अध्ययन करने के बाद डाक्टर यह मालूम कर सकेगा कि लबलबा में क्या खराबी आ गयी है। और वह दवाओं के जरिये रोगी के डीएनए सिस्टम में ऐसे परिवर्तन ला सकेगा कि अगर ऐसा हो सकेगा कि लबलबा पहले से ज्यादा इन्सोलीन खारिज करने लगे। अगर ऐसा हो सका कि कोशिकामय और लैंगिक व्यवस्था को दुरूस्त किया जा सके तो सम्भवतः ऐसी बीमारियों का इलाज मुम्किन हो सकेगा जिन को अभी तक लाइलाज समझा जाता है जैसे कैंसर आदि।

इस सन्दर्भ में कुछ विशेषज्ञों का विचार यह भी है कि २१वीं सदी हिन्दुस्तानी सदी होगी। अगर भारतीय नीति निर्माताओं ने सही और मुनासिब पालीसियां बनाईं तो सम्भव है कि २०२० तक भारत दुनिया में उद्योगज्ञान का सब से बड़ा मालिक हो। भारत के मुकाबले अकसर चीन की मिसाल दी जाती है लेकिन अगर दीर्घ कालीन दृष्टिकोण से देखें तो भारत को तीन डी की वजह से अपने हिमालय पार पड़ोस पर प्रधानता (फौकियत) हासिल है अर्थात डेमो क्रेसी और डेमाग्राफी (इल्मे आबादी) जिसके अनुसार भारत की जनसंख्या का ५५ प्रतिशत तीस साल से नीचे है। और डाइवर्सिटी अर्थात अनेकता संस्कृति की। यह तीनों विशेषतायें दीर्घकालीन दृष्टिकोण से आबादी की रचनात्मक उपज को बढ़ावा

देने वाली हैं।

गत कई वर्षों से भारत में साइंस और टेक्नालोजी पर खर्च की जाने वाली धनराशि में निरन्तर बढोत्तरी हो रही है। विशेषज्ञों के अन्दाजे के अनुसार यह बढोत्तरी पन्द्रह प्रतिशत प्रति वर्ष है और भारत का साइंसी बजट छः बिलियन डालर तक पहुंच गया है।

विशेषज्ञों का यह भी अन्दाजा है कि आधुनिक तथा प्राचीन औषधि विज्ञान और आधुनिक साइंस को मिलाकर भारत इन्टरनेशनल मेडिकल बाजार में एक ऐसी शक्ति बनना चाहता है जिस की कोई नजीर न हो। भारतीय मुसलमान सोचें कि इस आने वाले कल के हिन्दुस्तान में उनका क्या हिस्सा होगा? हकीम अजमल खां एक ऐसे ही त्रिकोणीय प्रयास के पक्षधर थे।

(प्रस्तुतिः एम हसन अंसारी)
(मिल्ली इत्तेहाद, देहली मार्च २००७ से साभार)

इत्तिहाद

"इख़्तलाफात और मफादात को पसे पुश्त डालकर एकजा हो जायें और अपनी एकता की ताकत पर मुसलमानों के खिलाफ होने वाली साजिशों को नाकाम बनायें, यही वक्त की जरूरत है और ज़िल्लत की ज़िन्दगी से खुद को महफूज रखने का तरीकः भी। जो कौम ज़िल्लत की ज़िन्दगी पर इज्ज़त की मौत को तर्जीह (प्राथमिकता) देती आयी हो उसे अपने असलाफ़ (पूर्वजों) के अकवाल पर सख्ती से कारबन्द होना चाहिए।" माजिद रमन

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

ध्रुवीय पर्यावरण पर रिसर्च

प्रस्तुति : एम० हसन अन्सा ?

ध्रुवीय पर्यावरण से लेकर अंटारकटिक में बर्फ के नीचे की पर्तो और तलों पर सूरज की किरणों के प्रभाव का रिसर्च एक टीम करेगी। इस टीम में तिरसठ देशों के पचास हजार से अधिक वैज्ञानिक हैं। यह टीम पहली मार्च 2007 से अपना काम शुरू कर चुकी है। इसकी कार्य अवधि तीन साल अर्थात 2009 तक है। पर्यावरण और वातावरण में होने वाले परिवर्तनों के प्रभाव के अध्ययन के लिए बर्फ काटने वाली मशीनों, सेटेलाइटों, और गोता खोर जहाजों के अलावा आधुनिकतम यन्त्रों की मदद ली जायेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय ध्रुवी वर्ष में भूतल के ध्रुवी क्षेत्र के पर्यावरण के अध्ययन और विश्व के तापक्रम का पता लगाने के लिए 228 प्रोजेक्टों को एक ही अभियान के अन्तर्गत प्रारम्भ किया जा रहा है। गत पचास वर्षो में सबसे बड़े इस अन्तर्राष्ट्रीय रिसर्च प्रोग्राम के दौरान दोनों ध्रुवों में पूरी गर्मियों और जाड़ों में यह अध्ययन जारी रहेगा। ब्रिटेन के चीफ साइंटिफिक एडवाइज़र डेविड किंग के अनुसार "विश्व का तापक्रम हमारी सभ्यता के सामने सब से कठिन चुनौती है।" इस रिसर्च के संयुक्त राष्ट्र संघ की विश्व संस्था जो मौसम से सम्बन्धित है और अन्तर्राष्ट्रीय साइंस कौंसिल के तत्वावधान में चलाया जायेगा। इसके लिए विभिन्न शोध एजेंसियों ने डेढ़ अरब अमरीकी डालर का प्रोजेक्ट तैयार किया है। लेकिन अधिकतर ध नराशि पहले के ध्रुवी रिसर्च बजट से व्यय की जायेगी।

पर्यावरण की साफ सफाई तथा इसे दूषित होने से बचाने के लिए प्रत्येक नागरिक को अपना यथा सम्भव योगदान देना चाहिए। यह मानव जाति की जिन्दगी और मौत का सवाल है। कहीं का भी पर्यावरण दूषित हो असर सारी दुनिया पर पड़ेगा, और इसके कुप्रभाव से कोई बचेगा नहीं।

लकवा

लकवा दिमाग से जुड़ी एक बीमारी है शरीर के अन्य भागों की तरह दिमाग में भी २ नलियां हैं, एक वह जो हृदय से मस्तिष्क की ओर खून लाती है और दूसरी वह जो मस्तिष्क से खून को लौटा कर हृदय की ओर ले जाती है। जो नलियां खून लाती हैं उन्हें धमनी कहते हैं और जो लौटा कर ले जाती हैं उन्हें शिरा। यों तो लकवा किसी भी दिमागी खराबी से हो सकता है लेकिन ज्यादातर लोगों को यह धमनी में खराबी आने से होता है। धमनी में मुख्यतः २ तरह की खराबी होती है। पहली, मस्तिष्क के अन्दर की हेमरेज है और दूसरी, मस्तिष्क के बाहर की।

अक्सर खून धमनी के बाहर आते ही जम जाता है। जैसे–जैसे खून की मात्रा बढ़ती जाती है खून के थक्के का आकार भी बढ़ता जाता है और शीघ्र ही यह खून जख्म को बंद कर देता है जिससे खून निकलना बन्द हो जाता है। लेकिन तब तक इतना खून निकल चुका होता है कि इस के कारण सिर के अन्दर दबाव काफी बढ़ जाता है और इससे दिमाग काम करना बन्द कर देता है। सिरदर्द, उलटी आदि इसी दबाव की निशानी हैं और एक सीमा से ज्यादा होने पर बढ़ता दबाव बेहोशी, लकवा, दम घुटने आदि का कारण बनता है।

ब्रेन हेमरेज में खून का थक्का खून की नली के बाहर होता है लेकिन बहुत बार यह थक्का नली के अन्दर या दिल में बनता है जो मस्तिष्क की नलियों में खून के प्रवाह को बन्द कर देता है। इस से मस्तिष्क में रक्त की कमी हो जाती है और मस्तिष्क को नुकसान पहुंचता है। खून की यह कमी 'स्ट्रोक' का मुख्य कारण है।

लकवा के लक्षण :

दिमाग की नसों का फटना हो या खून का कम पहुंचना, दोनों स्थिति में मस्तिष्क का प्रभावित हिस्सा काम करना बन्द कर देता है। इस से हाथ पैर चलने बंद हो सकते हैं। खाना निगलने, आंख से देखने, बोलने, बात समझने आदि में भी परेशानी हो सकती है। अपने लोगों को भी मरीज पहचान नहीं पाता, सब कुछ भूल जाता है। यदि मस्तिष्क का बड़ा हिस्सा प्रभावित हुआ है तो इस में बेहोशी और सांस की परेशानी जैसे प्राणघातक प्रभाव भी हो सकती है। डॉ० अचल श्रीवास्तव का कहना है कि लकवे के यदि १०० मरीज महिलाएं होती हैं तो १३० पुरूष।

ध्यान देने की बात है कि लकवा में जो भी होता है अचानक होता है। कई बार तो मरीज ठीक ठाक सोने जाता है और सुबह उठने पर पता चलता है कि एक हाथ पांव चल नहीं रहा। खड़े होने की कोशिश करता है लेकिन गिर पड़ता है। यही नहीं कई बार दिन में काम करते समय खड़े खड़े या बैठे–बैठे अचानक लकवा मार जाता है। ब्रेन हैमरेज अकसर तेज सिरदर्द और उलटी से शुरू होता है। फिर शरीर का कोई एक हिस्सा काम करना बन्द कर देता है या बेहोशी आने लगती है। ध्यान रहे कि हार्ट अटैक से ज्यादा ब्रेन अटैक के मरीज होते हैं लेकिन जानकारी के अभाव में लोग इसे पहचान ही नहीं पाते। वैसे लकवा को कोई अन्य नाम से भी जाना जाता है, जैसे अधरंग, पैरालिसिस, पक्षाघात, ब्रेन स्ट्रोक आदि।

लकवा किसे हो सकता है

वैसे तो लकवा किसी को भी हो सकता है लेकिन आमतौर पर जिन कारणों से इस के होने का खतरा अधिक बढ़ जाता है वे निम्न हैं :–

उच्च रक्तचाप लकवा में खास भूमिका निभाता है।

खून में शुगर की बहुत अधिक मात्रा तंबाकू व शराब का अधिक सेवन।

हाई ब्लड कोलेस्ट्राल यानी खून में चर्बी का ज्यादा होना।

हृदय रोग और मोटापा :

इस के अलावा बुढ़ापा और परिवार में किसी को लकवा होना ऐसे कुछ लक्षण हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता।

एक बार यदि स्ट्रोक हो चुका है तो दोबारा होने की आशंका मरीज में बहुत अधिक हो जाती है।

लकवे के खतरे को कम किया जा सकता है–

१५–२० साल की उम्र से ही सावधानियां बरतें।

यदि हृदय रोग से पीड़ित हैं तो उस की उचित जांच व इलाज कराएं।

यदि ब्लड प्रेशर की कोई दवा ले रहे हैं तो नियमित रूप से उसे लेना न भूलें। यहां तक कि ब्लड प्रेशर ठीक हो जाने के बाद भी डाक्टर की सलाह

के बिना दवा लेना बंद न करें।

३५–४० की उम्र के बाद साल में एक बार खून में चीनी (ब्लड शूगर) और खून में चर्बी (ब्लड लिपिड) की जांच जरूर कराएं। यदि ये बढ़े पाए जाएं तो खाने पीने में परहेज कर के या डाक्टर की सलाह से दवा ले कर इसे नियंत्रित करें। इस के अलावा अल्ट्रासाउंड भी करा लेना चाहिए।

धूम्रपान व अत्यधिक मदिरापान न करें।

नियंत्रित रूप से व्यायाम करें। कम से कम ३–४ किलोमीटर प्रतिदिन टहलें।

अपना वजन सीमित रखें। एक सीमा से ज्यादा वजन न बढ़ने दें। जानकारी रखें कि आप की लम्बाई के मुताबिक सही वजन क्या होना चाहिए।

यदि कोई रोग न हो तब भी ४० की उम्र के बाद ज्यादा नमक व चर्बी की चीजों को खाने से नियंत्रण रखें।

क्या करें यदि लकवा हो जाए

आप को या आपके सगे संबंधियों को अचानक हाथपैर चलाने में, आंख से देखने में, बोलने में, बात समझने में दिक्कत हो या अचानक ऐसा तेज सिरदर्द हो जैसा जीवन में कभी नहीं हुआ हो तो जल्दी से जल्दी उस को अस्पताल पहुंचाना चाहिए।

अगर खून की नली के अंदर का क्लाट खून के प्रवाह को रोक रहा है तो उसे खोलने की दवा तकलीफ शुरू होने के ३ घंटे के अंदर प्रारंभ हो जानी चाहिए। इस के पहले कई जांच भी करनी होती है इस लिए समय का खास ध्यान रखें।

अगर मरीज बेहोश हो जाए तो उसे एक करवट लिटा देना चाहिए ताकि मुंह की लार फेफड़े में न चली जाए और जल्दी से जल्दी अस्पताल पहुंचाना चाहिए।

दूर करें भ्रांतियां

लकवा खुदबखुद ठीक नहीं होता। यदि कभी ऐसा हो भी जाए तो आगे और भी घातक अटैक न हो इस के लिए जांच और इलाज जरूरी है।

लकवा के मरीजों के लिए सुखद बात यह है कि आज की स्थिति पहले जैसी नहीं है बल्कि समय पर इलाज मिलने से मरीज ठीक होकर अपने काम पर भी जा सकते हैं। इस के लिए जरूरी है कि रोगी को जल्द से जल्द अस्पताल पहुंचाया जाए। साथ ही दूसरी बार स्ट्रोक न हो इस के लिए डाक्टर की सलाह से आजीवन सावधानी बरती जाए।

वैसे तो लकवा के मरीज का इलाज ७–८ दिन तक चलता है। लेकिन चूंकि इस में ठीक होने की संभावना २ साल तक होती है इस लिए २ से ढाई साल तक भी इस का इलाज चलाया जाता है।

माइग्रेन के मरीजों में लकवा होने की आशंका ५० प्रतिशत तक होती है।

कम उम्र के लोगों में भी लकवा हो सकता है।

●●●

दुआ

परवरदिगार

मेरे परवर दिगारे आलम तेरी ऊंची जात है
है क्या खुशी और क्या गम सब तेरे हाथ है
किसी को तूने मंजिले और ठिकाने अता किए
किसी को भटकना और वीराने अता किए
तो किसी को सिर्फ गम के फसाने अता किए
मिलता है किस को क्या ये किसमत की बात है
पर नसीब लिखना भी अल्ला तेरे ही हाथ है
किसी को तो इस जहान में ऊंचाइयां मिलीं
तो किसी को हयात में रुसवाइयां मिलीं
तो किसी को सिर्फ दर्द और तन्हाइयां मिलीं
और मेरे हिस्से में आई मुकद्दर से मात है
ऐ मेरे अल्ला क्या मेरी बस यही औकात है
क्यों मेरे हसीन ख्वाबों की ताबीर नहीं है
क्या मेरी अपनी कोई तकदीर नहीं है
मेरी दुआओं में कोई तासीर नहीं है
क्यों मेरी जिन्दिगानी एक काली रात है
अल्ला सहर कर दे सब तेरे हाथ है

आमीन महरून

भारतीय इतिहास

प्रो० नेत्र पाण्डेय

मौर्य साम्राज्य

मौर्य कौन थे ? ब्राह्मण–ग्रन्थों के अनुसार मौर्य शब्द व्यक्ति–वाचक संज्ञा 'मुरा' से बना है जो नन्द–राज की नाइन जाति की शूद्र पत्नी थी। चूंकि मौर्य–साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त इसी मुरा के पेट से उत्पन्न हुआ था अतएव वह तथा उसके वंशज मौर्य कहलाये। इस व्याख्या के अनुसार मौर्य लोग शूद्र तथा निम्न कुल के ठहरते हैं। परन्तु इस मत को स्वीकार करने में दो बहुत बड़ी कठिनाइयां हैं। पहली कठिनाई तो व्याकरण संबंधी है। व्याकरण के नियमानुसार मुरा शब्द से, जो स्त्रीलिंग है, मौरोय शब्द बनेगा न कि मौर्य अर्थात मुरा की संतान मौरेय कहलायेगी, मौर्य नहीं। अतएव मौर्यों को मुरा नामक शूद्र वंश का वंशज बतलाना संस्कृत व्याकरण के नियम के विपरीत पड़ता है। मौर्यों को शूद्र–वंशीय स्वीकार करने में दूसरी कठिनाई यह कि यदि मौर्य साम्राज्य का संस्थापक अर्थात् चन्द्रगुप्त शूद्र–वंश का होता तो कौटिल्य, जो एक कट्टर ब्राह्मण था, उसकी सहायता न करता, और उसे राजा न स्वीकार करता।

"मौर्य" शब्द वास्तव में संस्कृत में पुल्लिंग शब्द 'मुर' से बना है जो महर्षि पाणिनी के कथनानुसार एक गोत्र का नाम था। अतएव इस व्याख्या के अनुसार वह लोग, जो 'मुर' गोत्र के थे अर्थात् जिनका 'मुर' गोत्र में जन्म हुआ था 'मौर्य' हैं, वे हैं कौन?

बौद्ध तथा जैन ग्रंथों के अनुसार मौर्य शब्द प्राकृत भाषा के 'मौरिय' शब्द का संस्कृत रूपांतर है। मौरिया एक क्षत्रिय–वर्ग का नाम था जो नेपाल की तराइ में 'पिप्पलिवन' नामक राज्य में शासन करता था। चूंकि इस प्रदेश में मयूर अर्थात मोर पक्षियें का बाहुल्य था, अतएव वहां के निवासी तथा उसके वंशज मौर्य कहलाये। कुछ बौद्ध–ग्रंथों से यह पता चलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य मयूर–पालकों के एक सरदार की कन्या का पुत्र था जो क्षत्रिय–वंश का था। संभवतः ये क्षत्रिय अपने शत्रुओं द्वारा अपनी जन्मभूमि से भगा दिये गये थे और छिप कर मयूर पालकों के रूप में पाटलिपुत्र के निकट अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। जब इस क्षत्रिय–वंश के एक व्यक्ति ने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया तो अपने मयूर पालक पूर्वजों की स्मृति में अपने नाम के आगे मौर्य शब्द जोड़ दिया।

सांची के पूर्वी फाटकों पर जो चित्रकारी की गई है उस पर मोर पक्षी के चित्र बने हुए हैं। इससे मार्शल महोदय ने यह निष्कर्ष निकाला है कि सम्भवतः मोर पक्षी मौर्य–वंश का राज्य चिन्ह था और इस राज्य चिन्ह के कारण ही इस वंश का नाम मौर्य–वंश पड़ा। चूंकि राज्य वंशों के चिन्ह प्रायः पशु–पक्षी हुआ करते थे अतएव मार्शल महोदय का यह अनुमान निराधार नहीं कहा जा सकता।

उपर्युक्त विवरण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार मौर्य लोग शूद्र तथा अकुलीन थे परन्तु बौद्ध तथा जैन ग्रंथों के अनुसार वे कुलीन तथा विशुद्ध सूर्यवंशी क्षत्रिय थे। इस मतभेद का कारण यह प्रतीत होता है कि चूंकि मौर्य शासक वर्णाश्रम व्यवस्था को नहीं मानते थे और ब्राह्मण विरोधी थे अतएव ब्राह्मणों ने उन्हें शूद्र वंश तथा अकुलनीय बतलाया है और चूंकि वे जैन तथा बौद्ध–धर्मों के आश्रयदाता थे क्योंकि चन्द्रगुप्त ने जैन–धर्म को तथा अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना आश्रय प्रदान किया था, अतएव बौद्ध तथा जैनियों ने उन्हें शुद्ध रक्त का कुलीन क्षत्रिय बतलाया है। अब इतिहासकार इसी सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं चन्द्रगुप्त क्षत्रि राजकुमार था और मौरिल क्षत्रियों का वंशज होने के कारण जो सम्भवतः दुर्दिन आ जाने के कारण मयूर पालक बन गये थे, यह मौर्य कहलाया। जिस राज–वंश की उसने स्थापना की वह मौर्य–वंश कहलाया। जिस साम्राज्य का उसने निर्माण किया वह मौर्य–साम्राज्य और जिस काल में उसने तथा उसके वंशजों ने शासन किया वह मौर्य–काल कहलाया।

मौर्य काल का महत्व – भारत के इतिहास में मौर्य काल अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। वास्तव में मौर्य साम्राज्य की स्थापना से भारतीय इतिहास में एक युग का अन्त और दूसरे युग का आरम्भ होता है। जिस युग का अन्त होता है उसे हम अनैतिहासिक युग और जिस नये युग का आरम्भ होता है उसे हम ऐतिहासिक

युग कह सकते हैं। स्मिथ महोदय ने इस युग की प्रशंसा करते हुए लिखा है ''मौर्य राज–वंश का प्रादुर्भाव इतिहासकार के लिए अन्धकार से प्रकाश के मार्ग का निर्देश करता है। तिथि–क्रम सहसा निश्चित, करीब–करीब सुनिश्चित हो जाता है, एक विशाल साम्राज्य का प्रादुर्भाव होता है जो भारत के विच्छिन्न असंख्य टुकड़ों को संयुक्त कर देता है; राजा लोग, जिन्हें वास्तव में सम्राट कहा जा सकता है, महान् व्यक्तित्व के तथा लब्ध–प्रतिष्ठ व्यक्तिथे जिनके गुणों का दर्शन यद्यपि समय के कुहासे में मन्द रूप में किये जा सकते हैं। इस नये युग की प्रधान विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

(१) श्रृंखलाबद्ध इतिहास का आरम्भ : मौर्य काल के पहले का इतिहास प्रायः अन्धकार तथा विश्रृंखलित है अर्थात इसका कोई क्रम नहीं है। इसके दो प्रधान कारण प्रतीत होते हैं। पहला तो यह कि काल की तिथियों का ठीक–ठीक निश्चय नहीं है और दूसरा यह कि इस काल के इतिहास को जानने के साधन बहुत कम हैं।

प्रधानतः धार्मिक ग्रंथ की सहायता से ही इस काल के इतिहास का निर्माण किया गया है। परन्तु मौर्य–काल के आरम्भ से हम अंधकार से प्रकाश में आ जाते है और भारत का क्रम–बद्ध इतिहास आरंभ हो जाता है। इसके दो प्रधान कारण हैं। पहला तो यह है कि मौर्य काल की तिथियां निश्चत है और दूसरा यह कि मौर्य काल के इतिहास को जानने के साधन बड़े ही ठोस तथा व्यापक हैं। इस काल का इतिहास जानने के लिए हमें धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त अन्य साधन भी अर्थात ऐतिहासिक ग्रंथ, विदेशी विवरण, अभिलेख आदि प्राप्त हो जाते हैं।

मौर्य काल के पूर्व हमें कोई विशुद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ प्राप्त नहीं होता जिसके द्वारा प्राचीन भारत के क्रम–बद्ध, प्रामाणिक इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जाय। परन्तु मौर्य काल में और उसके बाद अनेक ऐतिहासिक ग्रंथ लिखे गये जिसके आधार पर भारत का क्रमब; प्रमाणित इतिहास तैयार किया जा सकता है। इन ऐतिहासिक ग्रंथों में सर्व–प्रथम स्थान महर्षि कौटिल्य के ग्रन्थ अर्थशास्त्र को मिलना चाहिए। कौटिल्य को चाणक्य तथा विष्णुगुप्त के नाम से भी पुकारा गया है। यद्यपि कौटिल्य के इस ग्रंथ का नाम 'अर्थशास्त्र' है परन्तु इसमें अर्थ अर्थात् धम सम्बन्धी कोई बात नहीं लिखी गई। वास्तव में यह एक विशुद्ध राजनीतिक ग्रंथ है और इससे मौर्यकालीन इतिहास का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होता है। मौर्यकालीन इतिहास जानने का दूसरा साधन 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक है जिसकी रचना विशाखदत्त ने की थी। यह एक ऐतिहासिक नाटक है और मौर्य काल के प्रारंभिक इतिहास को जानने में बड़ा सहायक सिद्ध होता है। पुराणों से भी, जो एतिहासिक ग्रंथ माने जाते है, मौर्य–युग के इतिहास का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता है। कालिदास के ऐतिहासिक नाटक, काशमीरी लेखक कल्हण की राजतरंगिणी तथा महर्षि पतंजलि के महाभाष्य से भी मौर्य कालीन इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है।

विदेशी विवरण भी मौर्यकालीन इतिहास जानने के प्रामाणिक तथा विश्वसनीय साधन हैं, क्योंकि विदेशी लेखकों ने जो कुछ लिखा है वह स्वतंत्र तथा निष्पक्ष भाव से लिखा है और उनमें से अधिकांश ऐसे थे जो स्वयं भारतवर्ष आये थे और जो कुछ अपनी आंखों से देखा अथवा भारतीयों से सुना उसी को लिख दिया। विदेशी लेखकों में सबसे बड़ा स्थाान मेगस्थनीज को देना चाहिए जो यूनानी राजदूत था और चन्द्रगुप्त मौर्य की राजधानी पाटलिपुत्र में कई वर्ष तक रहा। कालांतर में जब भारत का चीन, तिब्बत आदि देशों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो गया तब इन देशों के यात्री भारत आये और उन्होंने यहां के विषय में लिखा। चीनी चात्रियों में फाहयान तथा हवेनसांग और तिब्बत के लेखकों में तारानाथ का नाम अग्रगण्य है।

अभिलेख भी मौर्यकालीन इतिहास जानने के अत्यन्त विश्वसनीय तथा प्रामाणिक साधन हैं। सम्राट् अशोक ने स्तम्भों, शिलाओं तथा गुफाओं की दीवारों पर अनेक लेख लिखवाये हैं जो आज भी उसकी कीर्ति का गान कर रहे हैं।

मौर्यकालीन इतिहास जानने के हमारे अन्तिम साधन बौद्ध तथा जैन ग्रंथ हैं चूंकि मौर्य कालीन शासक चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन धर्म को और अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना आश्रय प्रदान किया था अतएव इन दोनों धर्मों के आचार्यों ने जब ग्रंथ रचना की तब मौर्य कालीन इतिहास पर प्रकाश डाल कर उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

उपर्युक्त प्रचुर साधनों की सहायता से जिज्ञासु इतिहासकारों ने मौर्य काल का अत्यन्त प्रामाणिक तथा

विश्वसनीय इतिहास तैयार किया है। इस प्रकार ऐतिहासिक साधनों तथा इतिहास निर्माण की दृष्टि से मौर्य काल का बहुत बड़ा महत्व है।

२. साम्राज्यवाद प्रवृत्ति का प्रारम्भ : मौर्य काल का दूसरा महत्व यह है कि इस काल के प्रारम्भ से ही भारत में साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का प्रारम्भ होता है और यह प्रवृत्ति आगामी शताब्दियों में भी चलती है। भारत वर्ष के राजनीतिक इतिहास में यहीं से एक नये युग का आरंभ होता है जिसे हम साम्राज्यवाद तथा राजनीतिक एकता का युग कहते हैं। मौर्य काल के पूर्व भारतवर्ष में राजनीतिक एकता का सर्वथा अभाव था और सम्पूर्ण देश छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त था। यद्यपि साम्राज्यवाद तथा राजनीतिक एकता का स्वप्न भारतीय राजाओं ने मौर्यकाल के पहले ही आरम्भ कर दिया था, परन्तु इस स्वप्न को सर्व–प्रथम मौर्य–साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त ने ही चरितार्थ किया। उसने पंजाब तथा सिन्धु से विदेशी यूनानियों को और उत्तरी भारत के अन्य छोटे–छोटे राज्यों को समाप्त कर संपूर्ण उत्तरी भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बांधा और इस प्रकार प्रथम बार हमारे देश में राजनीतिक एकता की स्थापना हुई। राजनीतिक एकता का यह आदर्श भारत के भावी महत्वाकांक्षी सम्राटों को सदैव प्रेरित करता रहा और इसका क्रम निरन्तर आज भी चलता आ रहा है, आज भी हमारी राष्ट्रीय सरकार राजनीतिक तथा भावात्मक एकता पर बल दे रही है, और विघटनकारी प्रवृत्तियों को रोक रही है।

३. शासन की एकरूपता का प्रादुर्भाव : राजनीतिक एकता तथा शासन की एकरूपता में अटूट सम्बन्ध है। वास्तव में राजनीतिक एकता प्रशासकीय एकता की जननी है। अब मौर्य सम्राटों ने सम्पूर्ण उत्तरी भारत में राजनीतिक एकता स्थापित कर दी तब इस विशाल भू–भाग में अपने आप ही एक प्रकार के सुदृढ़ तथा सुव्यवस्थित केन्द्रीय शासन की स्थापना हो गयी क्योंकि उस राजनीतिक एकता को बनाये रखने के लिए बड़े ही प्रबल तथा सुसंगठित शासन की आवश्यकता थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने जिस शासन–व्यवस्था का शिलान्यास किया वही भावी शासकों के लिए आदर्श व्यवस्था बन गई और उसी में न्यूनाधि परिवर्तन करके आगामी प्रशासकीय प्रतिभासम्पन्न शासकों ने अपनी शासन–व्यवस्था का निर्माण किया। मौर्य–कालीन शासन व्यवस्था शान्ति बनाये रखने तथा सम्पन्नता प्रदान करने में इतनी सफल रही कि इसे हम शान्ति तथा सम्पन्नता का युग कह सकते हैं।

४. सांस्कृतिक एकता की स्थापना : राजनीतिक एकता सांस्कृतिक एकता की भी जननी मानी जाती है। चन्द्रगुप्त मौर्य ने विदेशियों को अपने देश से निष्कासित कर एक विशुद्ध भारतीय संस्कृति के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न कीं। उसने सम्पूर्ण उत्तरी–भारत में अपना एकछत्र, सुदृढ़ तथा सुव्यवस्थित शासन स्थापित कर सांस्कृतिक विकास के लिए अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को राज–धर्म बनाकर, उसके प्रचार की समुचित व्यवस्था कर तथा सम्पूर्ण भारत में उसका प्रचार कर और लोक साहित्य को प्रोत्साहन देकर और पत्थरों पर अपने अभिलेख लिखवाकर तथा अपने सम्पूर्ण राज्य में एक ही प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था कर एक ऐसी संस्कृति को जन्म दिया जिसमें एकरूपता थी।

५. विदेशों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध की स्थापना : जिस सभ्यता तथा संस्कृति का सृजन अशोक ने किया उसे उस ने न केवल भारत के कोने कोने में फैलाया वरन् उसका उसने विदेशों में भी प्रचार कराया और इस प्रकार अशोक विदेशों में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रचार का अग्रदूत बन गया। इस सभ्यता तथा संस्कृति के प्रचार की एक बहुत बड़ी विशेषता यह है कि सब कार्य बड़े प्रेम तथा सद्भावना से किया गया था जिसके अभाव का अनुभव आज भी संसार कर रहा है और जिसकी पूर्ति अशोक जैसे उदार तथा सहृदय राजनीतिज्ञ ही कर सकते हैं।

ऊपर मौर्य–काल के गौरव का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। अब उस व्यक्ति के जीवन का संक्षिप्त परिचय दे देना आवश्यक है जो इस गौरव का जन्मदाता था। वह व्यक्ति चन्द्रगुप्त मौर्य था। इस व्यक्ति के भारतीय राजनीति के मंच पर आने की ओर संकेत करते हुए डा० रमाशंकर त्रिपाठी ने लिखा है, "सिकन्दर के चले जाने के उपरान्त भारत के राजनीतिक गगन–मण्डल में एक नया तारा निकला जिसने शीघ्र ही अपने परम प्रकाश से शेष सभी को तिमिर–तिरोहित कर दिया है।

●●●

मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन

अबू मग़्रूब

यह सच्चा क़िस्सा अल्लाह तआला ने अपने महबूब और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को याद दिलाते हुए फ़रमाया:

उस वक़्त को याद करो : जब आप के रब ने मूसा (अ०) को आवाज़ दी कि ज़ालिमीन की क़ौम के पास जाइये, फ़िरऔन की कौम के पास, क्या वह (हमारे ग़ज़ब से) डरते नहीं हैं? (जो इस तरह का ज़ुल्म करते हैं)

मूसा (अ०) ने अर्ज़ किया :

मेरे रब मैं डरता हूं कि वह मुझे झुटला न दें, फिर (ऐसे मौक़ओं पर) मेरा सीना तंगी महसूस करने लगता है और मेरी ज़बान नहीं चलती पस (इस काम के लिए मेरे भाई) हारून को भी कहये, फिर मुझ से इस क़ौम में एक अहम गुनाह हो चुका है पस मैं डरता हूं किं कहीं मुझे क़त्ल न कर दें।

रब ने फरमाया : हरगिज (कदापि) नहीं। (ऐसा नहीं हो सकता) तुम दोनों फ़िरऔन के पास आओ और कहो हम लोग रब्बुल आलमीन के भेजे हुए हैं। (तू ने बनी इस्राईल पर बहुत ज़ुल्म किया, अब उस ज़ुल्म से बाज़ आ और) बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे।

फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम की पिछली बातें याद दिलाईं :

जब फ़िरऔन ने एअलान कर रखा था कि बनी इस्राईल में जो बच्चा पैदा हो वह क़त्ल कर दिया जाय। अलबत्ता बच्ची छोड़ दी जाए। यह एअलान इस लिये था कि नुजूमियों ने उसे बता रखा था कि बनी इस्राईल में एक ऐसा बच्चा पैदा होने वाला है जो तेरी तबाही का सबब बने गा चुनांचि इस ज़ालिमाना एअलान पर सख़्ती से अमल हो रहा था, रोज़ाना बनीइस्राईल के बच्चे क़त्ल हो रहे थे। उसी दौरान मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुए, अल्लाह तआला ने उनकी मां को इल्हाम किया कि एक सन्दूक़चे में मूसा को रख कर दरया में डाल दो उन्होंने इस पर अमल किया और अपनी बेटी को लगा दिया कि दूर दूर से देखती रहे कि सन्दूक़चे का क्या हश्र होता है, चुनांचि सन्दूकचा बहता हुआ फ़िरऔन के महल के सामने से गुज़रा उस का शान्दार महल दरया के किनारे बना हुआ था सन्दूक़चे को फ़िरऔन की बीवी ने देखा और नौकरों को हुक्म दिया कि सन्दूक़चा पकड़ लाओ, सन्दूकचा लाया गया उस में एक बहुत ही ख़ूबसूरत बच्चा था, फ़िरऔन ने मारना चाहा कि कहीं यह बनीइस्राईल का बच्चा न हो लेकिन उसकी बीवी ने कहा कि पता नहीं कहां से बह कर आया है इस को मारो नहीं हो सकता है हम इसे अपना बेटा बना लें। फ़िरऔन ने बात मान ली और बच्चे के लिए दूध पिलाई की तलाश हुई शाही इनआम की ख्वाहिश में एक से एक दूध पिलाने वालियां आईं लेकिन बच्चे ने किसी का दूध न पिया, मूसा (अ०) की बहन वहां मौजूद थी उसने इलाही राज़ समझते हुए और अपनी को राज़ में रखते हुए, अपनी मां को बुला लाई मूसा (अ०) ने उन का दूध पिया और वही मूसा (अ०) की दूध पिलाइ मुक़र्रर हुईं। मगर इस राज़ को लोग जान न सके कि बच्चा अपनी मां ही का दूध पी रहा है। इस तरह मूसा (अ०) की परवरिश फ़िरऔन के घर हुई।

मूसा (अ०) जवान हुए तो एक रोज़ सुबह को टहल रहे थे कि एक इस्राईली और एक फ़िरऔनी को लड़ते देखा, बीच बराव करने में फ़िरऔनी (क़िब्ती) को एक मुक्का मार दिया मुक्का ज़ोर से पड़ गया और उसका ख़ातिमा ही हो गया, जब यह ख़बर फैल गयी और मूसा (अ०) के क़त्ल के इरादे होने लगे तो मूसा (अ०) भाग कर मदयन चले गये, हज़रत शुऐब (अ०) की बेटी से शादी हुई वापसी के रास्ते में कोहेतूर पर नुबुव्वत मिली और अल्लाह के हुक्म से अपने भाई हारून (अ०) के साथ फ़िरऔन के दरबार में फिर आए और मज़कूर–ए–बाला (उक्त) बात चीत हुई इसी को फ़िरऔन ने याद दिलाया, अब फिर आइये ऊपर की बात चीत की तरफ़:

फ़िरऔन बोला क्या हम ने तुम को बचपन में पाला नहीं और क्या तुम एक उम्र तक हमारे यहां नहीं रहे? फिर तुम ने जो कुछ किया वह किया (क़त्ल की तरफ़ इशारा है) और तुम तो ना शुक्रों में से हो।

मूसा अलैहिस्सलाम ने जवाब

दिया वह जो कुछ मैं ने किया था वह तो मेरी बड़ी ग़लती थी, फिर जब मुझे तुम लोगों से बदले का ख़तरा हुआ तो मैं तुम्हारे यहां से भाग गया फिर मेरे रब ने मुझे हिकमत (ज्ञान) की बातें सिखाईं और मुझे अपने रसूलों में से बना लिया यअ़नी मुझे अपना रसूल बना लिया, और यह जो तुम अपनी निअ़मतों का मुझ पर इहसान रख रहे हो क्या यही इहसान है कि तुम ने बनी इस्राइल को ग़ुलाम बना रखा है?

(यह सुनकर) फ़िरअ़ौन (जो रब्बे अअ़्ला होने का दअ़वा करता था) बोलाः

यह रब्बुल आ़लमीन क्या हैं? मूसा (अ़०) ने फ़रमाया :

रब्बुल आ़लमीन वह है जो आसमानों का रब है, ज़मीन का रब है और इन दोनों के बीच में जो कुछ है उन सब का रब है।

फ़िरअ़ौन (इस जवाब से बौखला उठा और अपने दरबारियें से मुख़ातब हो कर) बोला :

क्या तुम लोग सुन रहे हो (कि यह क्या कह रहे हैं) मूसा (अ़०) ने और कहा :

रब्बुल आ़लमीन वह है जो तुम सब का भी रब है और तुम्हारे पहले के बाप दादाओं का भी रब है।

फ़िरअ़ौन (और तिलमिला कर हाज़िरीन से) बोला :

यह जो रसूल तुम्हारी तरफ़ भेजे गये हैं यह तो पागल है। मूसा (अ़०) ने अगला जुमला कहा :

रब्बुल आ़लमीन वह है जो पूरब का भी रब है और पच्छिम का भी रब है और पूरब पच्छिम के बीच जो कुछ है उस का भी रब है (यअ़नी रब्बुल आ़लमीन है) और तुम अ़क़्ल रखते हो तो इस बात को समझो।

फ़िरअ़ौन (को और ताव आया) बोला :

अगर तुम मेरे सिवा किसी और को इलाह (पूज्य) मानोगे तो मैं तुम को जेल भेज दूंगा।

मूसा (अ़०) ने कहा कि अगर मैं (अपनी नुबूवत की) खुली हुई निशानी दिखाऊं तो?

फ़िरऔन बोला दिखाओ अगर सच्चे हो?

पस मूसा (अ़०) ने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी बस वह अजगर सांप बन गई (फिर आप ने उसे पकड़ लिया तो लाठी बन गया। आप ने अपनी हथेली बग़ल में डाल कर निकाली तो वह तेज़ रौशनी देनी लगी फिर उसे बग़ल में कर लिया तो रौशनी ख़त्म हो गई (फ़िरअ़ौन की अ़क़्ल इस मुअ़्जिज़े को समझ न सकी)

उस ने अपने दरबारियों से कहाः

यह तो बड़ा जानकार जादूगर है यह चाहता है कि अपने जादू से तुम सब को तुम्हारे मुल्क से निकाल दे और बनी इस्राईल को बसा दे अब बताओ तुम लोग मुझे क्या मशवरा देते हो?

सब बोले कि मूसा और उसके भाई को मुहलत देकर अपने आदमियों को शहरों में भेजिये वह वहां से सारे जादूगरों को बुला लाएं। पस सारे जादूगर एक मुक़र्ररा वक़्त पर जमा हो गये।

फ़िरअ़ौन की जानिब से लोगों में एअ़लान हुआ कि तुम लोग भी जमा हो जाओ (और यह मुकाबला देखो) हो सकता है हमारे जादूगर ग़ालिब आजाएं उन की जीत हो जाए तो हम सब भी उनकी राह पर चलें।

जब जादूगर आए तो उन्होंने फ़िरअ़ौन से पूछा कि अगर हमारी जीत हो जाए तो हमारे लिये कोई अज्र है?

फ़िरअ़ौन बोला : हां हां फिर तो तुम हमारे मुक़र्रब (प्रिये) दरबारी बन जाओगे।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जादूगरों से कहा कि जो कुछ तुम को छोड़ना है छोड़ो।

पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां छोड़ दीं और कहा : फ़िरअ़ौन के जलाल की क़सम हम जीत जाएंगे। उनकी रस्सियां और लाठियां फ़ज़ा में सांप बन कर लहराने लगीं।

पस मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपना अ़सा छोड़ा पस वह अजगर बन कर जादूगरों के सांपों को निगल गया।

यह देख कर जादूगर सज्दे में गिर गये और कहने लगे।

हम मूसा और हारून के रब पर ईमान ले आए।

अस्ल में अल्लाह ने उन को हिदायत दी वह समझ गये कि मूसा (अ़०) की लाठी जो अजगर बनी यह जादू नहीं है, अल्लाह की निशानी है और मूसा (अ़०) अल्लाह के रसूल हैं।

यह हाल देखकर फ़िरअ़ौन लाल पीला हो गया उस ने अपने जादूगरों से कहा :

तुम लोग मेरी इजाज़त के बिना मूसा पर ईमान ले आए, बेशक इस बड़े ही ने तुम को भी जादू सिखाया था और यह तुम सब की मिली भगत थी, पस जल्द ही तुम को तुम्हारा नतीजा

(परिणाम) मअ़लूम हो जाएगा, हम तुम्हारे हाथ पांव इस तरह़ काटेंगे कि बांया हाथ तो दायां पांव फिर तुम सब को सूली पर चढ़ा देंगे। जादूगर जो अब अअ़्ला दर्जे के ईमान वाले थे बोले ।

कोई ह़रज नहीं हम अब ईमान से नहीं फिर सकते तुम सूली दोगे हम अपने रब से जा मिलेंगे, हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताएं मुआ़फ़ कर देगा और यह कि हम पहले ईमान वालों में हैं।

पस उन के हाथ पैर काट कर उनको सूली दे दी वह सब अअ़्ला दर्जे के शहीद हुए।

मज़ाहिब की तारीख़ में ईमान लाते ही ऐसी आज़माइश फिर उस पर इस्तिक़ामत की ऐसी मिसाल नहीं मिलती।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमने मूसा को वह़्य की कि तुम बनी इस्राईल को लेकर रातों रात निकल जाओ, लेकिन तुम्हारा पीछा किया जाएगा, आप ने इस पर अ़मल किया।

फ़िरऔ़न को मअ़लूम हुआ पस फिरऔ़न ने लोगों को जमा करने के लिए शहरों में आदमी भेजे और कहलाया कि थोड़ी सी जमाअ़त है, यह हम लोगों को ग़ुस्सा दिला रहे हैं हम तो भारी फ़ौज हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि फिर हम ने उन को (मूसा और बनी इस्राईल का पीछा करने के लिए) उन के बाग़ों से, चश्मों से, ख़ज़ानों से और उ़म्दा मकानों से बाहर निकाला, इस तरह़ से हम ने आगे चल कर उनकी चीज़ों का वारिस बनी इस्राईल को बनाया। पस सुब्ह़ को फ़िरऔ़नियों ने बनी इस्राईल का पीछा किया और जब दोनों जमाअ़तों ने एक दूसरे को देखा तो मूसा (अ़०) के साथियों ने कहा अब हम पकड़ गये। मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया हरगिज़ नहीं, मेरा रब मेरे साथ है वह जल्द ही कोई रास्ता निकालेगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : पस हम ने मूसा को वह़्य की कि अपना अ़सा (लाठी) समंदुर पर मारो, उन के मारते ही समंदुर फट गया, और हर टुकड़ा बड़े पहाड़ की तरह हो गया, (समुंदर में रास्ते बन गये) फ़िरऔ़न और उसका लश्कर भी क़रीब आ गया। (मूसा अ़० और उनके साथी उन समन्दुरी रास्तों में उतर गये) अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हम ने मूसा और जो उनके साथ थे उनको (समन्दुर पार करा के) नजात दे दी और दूसरा फ़रीक़ यअ़नी फ़िरऔ़न और उसकी फ़ौज (जब उन रोस्तों से गुज़रने लगी तो पानी जो फट गया था मिल गया इस तरह़ उन) को डुबा दिया। इस क़िस्से में अल्लाह की क़ुदरत की निशानी है, इ़बरत है, सबक़ है, फिर भी (इन मुशरिकीन में से) अकसर ईमान नहीं लाते। बेशक आप का रब बड़ा ज़बरदस्त है, बड़ा मेहरबान है।

अब बनी इस्राइल फ़िरऔ़न के मुल्क व माल के मालिक हुए और मिस्र के ह़ाकिम हुए तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने शाम जो बनी इस्राइल के बुज़ुर्गों का मुल्क था लेने के इरादा किया और बनी इस्राइल को लेकर शाम की तरफ़ कूच किया। जहां अ़मालिक़ा की हुकूमत थी, बनी इस्राईल ने शाम में दाख़िल होने से इन्कार कर दिया उस वक़्त मूसा (अ़०) ने जिहाद पर आमादा करते हुए तक़रीर की। अल्लाह तआ़ला अपने नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मुख़ातब फ़रमाते हुए उस तक़रीर और बनी इस्राईल के रवैये को याद दिलाते हुए फ़रमाता है कि वह वक़्त भी क़ाबिले ज़िक्र है जब मूसा (अ़०) ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुम अल्लाह की निअ़मतों को याद करो कि तुम में से अपने नबी बनाए, तुम को बादशाहते दीं और तुम को वह दिया जो आ़लम में किसी को नहीं दिया। ऐ मेरी क़ौम इस मुक़द्दस ज़मीन शाम में दाख़िल हो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है और पीठ न दिखाओ कि नुक़सान उठाने वालों में से हो जाओगे।

नाशुक्रे बनी इस्राईल बोले, ऐ मूसा इस में तो ताकतवर लोग मौजूद हैं अगर वह लोग निकल जाएं तो हम लोग दाख़िल हो जाएं।

दो आदमी जो ख़ुदा से डरने वालों में से थे और जिन पर अल्लाह का इनआ़म था बोले तुम लोग उन पर चढ़ाई कर के शहर के दरवाज़े में घुस जाओ, पस अगर तुम घुस गये तो यक़ीनन ग़ालिब आ जाओगे।

बनी इस्राईल ने फिर वही कहा: ऐ मूसा जब तक वह लोग उस में हैं हम हरगिज़ उस में दाख़िल न होंगे, पस ऐ मूसा तुम और तुम्हारा रब जाओ और लड़ो हम यहीं बैठे हैं।

मूसा (अ़०) ने अपने रब से अ़र्ज़ किया । ऐ मेरे रब मैं तो बस अपनी जान का मालिक हूं मेरा भाई भी मेरे साथ है, तू मेरे और इस ना फ़रमान क़ौम के बीच फैसला कर दे। रब ने फ़रमाया यह मुक़द्दस ज़मीन इन के लिए चालीस साल तक रोक दी गई, यह एक ख़ास इलाके में सर मारते फिरेंगे आप इस नाफ़रमान क़ौम के ह़ाल पर अफ़सोस न करें।

करेला

शमीमा बानो

करेले का स्वाद कड़वा होता है परन्तु यह स्वादिष्ट, रूचिकर तथा लाभदायक भाजी है। स्वभाव इस का उष्ण तथा शुष्क (गर्म व खुश्क) है। यूनानी तबीब (चिकित्सक) इसे काबिज (कोष्ठ बन्धक) और मुलय्यिन (कोष्ठबध निवारक) बताते हैं करेला कोष्ट बध निवारक (कब्ज कुशा) तथा पेशाब लाने वाला है।

विख्यात डाक्टर मार्डन का कहना है कि करेला बहुत ही लाभदायक है। मेअदे (आमाशय) के रोगों को दूर करने के लिए प्रकृति ने करेला पैदा किया है। करेला एक लाभ कारी आहार है। यह कोष्ठ (मेअदे) को हानि पहुंचाने वाले कीटाणुओं (जरासीम) को नष्ट कर देता है। करेला आमाशय (मेअदे) को शक्ति तथा बल प्रदान करता है। करेला नस रोगों तथा पित रोगों में भी लाभकारी है। करेला कोष्ठवायु (बादीपन) को दूर करता तथा कफ (बलगम) को बाहर करता है, भूख लगाता है। कफ रोगियों के लिए लाभदायक आहार है। रक्त रोगों में भी लाभ देता है। पेचिश (मिरोड़) इस्तिस्का (प्यास रोग) पीलिया (यरकान) तिल्ली की सूजन, जोड़ों की पीड़ा, लकवा (पक्षघात) तथा गठिया में भी लाभ देता है, पथरी को भी निकाल बाहर करता है। करेला शूगर के रोगियों के लिए एक निध कृपा (निअमत) है, पूर्व यूनानी वैद्य (तबीब) तो इसे शूगर में लाभकारी बताते ही थे, नव वैज्ञानिक अनुवेषण (जदीद साइन्सी तहकीक) में भी यह वास्तविकता स्पष्ट हो चुकी है कि करेला शूगर रोग में प्रभावकारी है। डाक्टर शूगर के रोगी को गोल्ड क्लोराइड के मिश्रण देते हैं और मूल्यवान इन्जिक्शन लगाते हैं, लेकिन इस के मुकाबले में करेला अधिक लाभदायक है।

करेला में प्रोटीन, फैट, कैलशियम और फास्फोरस है, इस में आइरन भी भारी मात्रा में पाया जाता है, एक छटाक करेले में १४ गिजाई हरारे (आहारिक शक्तियां) होते हैं। करेले की कड़वाहट दूर करने के लिए कुछ लोग उस का छिल्का उतार देते हैं वह बहुत ही गलत करते हैं, छिल्के में बड़े लाभदायक अंश होते हैं अतः कड़वाहट दूर करने के लिये छिल्का न उतारें खूब ठीक से नमक पानी से धो लें, और उसका लाभ नष्ट न करें।

शूगर वाले तो इसे कच्चा भी चबा कर खा जाते हैं। इस की लाभदायक भाजी इस प्रकार बनती है कि बारीक काट कर साथ में कुछ प्याज भी कतर कर मिला दें, फिर जरा बघार कर दूसरी भाजियों की भांति पका लें।

कुछ लोग इसे चिकनाई में फराई कर लेते हैं इस प्रकार उस के बहुत से विटामिन तथा लाभदायक अंश नष्ट हो जाते हैं। कुछ लोग इस में खटाई मिठाई (गुड़ या शकर) डाल कर पकाते हैं इस प्रकार उसकी कड़वाहट समाप्त हो जाती हैं। परन्तु चाहे जैसे पकाएं कुछ लाभ दायक अंश तो रहते ही है। कुछ शूगर के रोगी इस को कच्चा पीस निचोड़ कर इस का रस निकाल कर पीते हैं और लाभदायक बताते हैं। मुझे तो करेले का भरवा बहुत प्रिय है। (अनुवादक अब्दुर्रहीम सिद्दीकी)

नअ़त

शहीब अहमद, सलाम ग्लास स्टोर, कटरा, रूदौली

रसूल आकर बता गये हैं कि क्या तरीका है जिन्दगी का।
अगर न कोई अमल करेगा तो है खसारा उस आदमी का।
खिलाफे सुन्नत है जो इबादत नहीं है उससे हुसूले जन्नत।
नबी की जिसने न की इताअत मकाम पाये वह क्या वली का।
हुजूर मासूम थे सरापा उन्हें किसी शै की क्या जरूरत।
मगर यह उनका करम तो देखो खयाल हर दम है उम्मती का।
वह फर्श से अर्श पर गये हैं खुदा से मिलकर भी आ गये हैं।
किसे मिला है उरूज ऐसा जो मरतबा है मेरे नबी का।
है सादा खाना है सादा कपड़ा और उनका बिस्तर है बोरिया का।
कभी चटाई पे सो गए हैं यह हाल है उनकी सादगी का।
"शहीब" सबका फक़त खुदा है कोई न होगा न गर वह चाहे।
है रोजे महशर ही आज देखो कि कौन होता है कल किसी

कुछ रेलवे की जानकारी

इदारा

रिजर्वेशन

१. जियादा से जियादा दो महीना पहले रिजरवेशन कराया जा सकता है।

२. विदेशियों के लिए एक साल पहले भी रिजर्वेशन की गुंजाइश है।

३. एक वक्त में एक ही रिजरवेशन फार्म कबूल किया जाएगा।

४. एक फार्म में ६ लोगों की गुंजाइश होती है।

५. कम्प्यूटर वाले किसी भी स्टेशन से जहां से जहां तक जितनी भी सीटें चाहें बुक करा सकते हैं।

६. दूसरे स्टेशन से सवार होने की सूरत में इस का स्पष्टीकरण (वजाहत) जरूरी है। जैसे टिकट लखनऊ से देहली का है और आप सवार होना चाहते हैं हरदोई से तो लिखा जाएगा :

लखनऊ से देहली –बोरडिंग हरदोई (**From Lucknow to Delhi-Boarding Hardoi**)

७. इतवार को कम्प्यूटर काउन्टर ८ बजे से १४ बजे तक खुला रहता है। उसके बाद बन्द हो जाता है।

८. टिकट गुम होने पर फून या इन्टर नेट द्वारा पी.एन.आर. नम्बर देकर टिकट लाक करा सकते हैं ताकि दूसरा शख्स इस्तिअमाल न कर सके।

कुछ और जानकारियां

१. किसी के रिजर्वेशन टिकट पर दूसरे मुसाफिर का सफर करना कानूनी जुर्म (अपराध) है। इसे टी.ओ. टी. (**Transfer of Ticket**) कहते हैं। ऐसा टिकट लेने वाला और बेचने वाला दोनों सजा के भागी (मुस्तहिक) हैं। ऐसे अपराधी को बिला टिकट करार दिया जाएगा उसे तीन महीने की जेल या ५०० रूपये जुर्माना या दोनों और वास्तविक किराया भी देना होगा।

२. पूरा डिब्बा बुक कराने के लिए हेड क्वारटर में अपलीकेशन के साथ ५००० रू० जमा करना जरूरी है फिर डिब्बे की कैपेसिटी या सीट की संख्या के अनुसार किराया वसूल किया जाएगा।

टिकट सात प्रकार के होते हैं :

१. ए.सी. फर्स्ट क्लास
२. ए.सी. टू टायर
३. ए.सी. ३ टायर
४. स्लीपर
५. ए.सी. चियरकार
६. फर्स्ट क्लास
७. सिकन्ड क्लास सीट।

आर.ए.सी (Reservation Against Cancellation) अर्थात किसी का रिजर्वेशन रद होने पर मिलने वाला रिजरवेशन।

१. आर.ए.सी. का दर्जा कन्फर्म रिजरवेशन से कम का है। सब से पहले सीट मिलती है, फिर किसी का रिजरवेशन रद होने पर नम्बर वार स्लीपर बर्थ मिल सकती है। बर्थ यकीनी नहीं है।

२. कनफर्म रिजर्वेशन वाले पैसेंजर का नाम अगर किसी वजह से चार्ट में न हो तो उस को आर.ए.सी. वाले से पहले बर्थ मिलती है।

३. राजधानी, शताब्दी, अगस्त क्रान्ति दोनों में आर.ए.सी. सिस्टम नहीं है।

४. ए.सी. (**W.L.**) मुसाफिर अगर चार्ट में नाम आ जाने के बाद टिकट रद कराए तो उस से कैन्सीलेशन चार्ज भी लिया जाएगा।

५. आर.ए.सी. टिकट सिर्फ कम्प्यूटर वाले स्टेशन से बन सकता है।

६. कानूनी लिहाज से वेटिंग लिस्ट वाला सीट का हकदार नहीं, अलबत्ता कन्डक्टर की इजाजत से रिजर्व डिब्बे में दाखिल हो सकता है। कन्डक्टर को रोकने का भी अधिकार है।

तत्काल रिजर्वेशन

यह रिजर्वेशन सफर की ट्रेन के वक्त से पहले वाली सुब्ह को ८ बजे से शुरूअ होता है, रेलवे के नये कानून के अनुसार तत्काल रिजरवेशन के लिए किसी प्रकार के आई कार्ड की जरूरत नहीं है। यह रिजरवेशन पहले स्टेशन से आखिरी स्टेशन तक होता है, अलबत्ता मुसाफिर जहां से चाहे सवार हो सकता है जब कि टिकट पर लिखना जरूरी है कि बोर्डिंग स्टेशन फुलां। अब तमाम ट्रेनों में तत्काल की सुहूलत उपलब्ध है। रद कराने में रिफन्ड नहीं मिलेगा केवल कम्प्यूटर वाले स्टेशनों से यह रिजर्वेशन हो सकता है।

लेखकों से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें दो लाइनों के बीच फासिला रखें, सरल तथा स्पष्ट लिखें।

-संपादक

हिन्दी लिपी में उर्दू

इदारा

मैं उर्दू का आदमी हूं लखनऊ यूनीवर्सिटी से पी.एच.डी. किया है। उर्दू ज़बान हिन्दी लिपि (देव नागरी लिपि) में लिखी जाए इस का सख़्त मुख़ालिफ़ (घोर विरोधी) हूं, उर्दू रस्मुल ख़त (लिपी) दिल व जान से अ़ज़ीज़ है। उर्दू रस्मुल ख़त ख़त्म करने को उर्दू ख़त्म करना समझता हूं और यह सिर्फ़ मानना नहीं हक़ीक़त (वास्तविकता) है अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता उर्दू रस्मुल ख़त ख़त्म हुआ कि उर्दू रूख़्सत हुई। लेकिन इस के साथ साथ उर्दू का पैग़ाम हिन्दी भाषियों को पहुंचाना भी ज़रूरी है, ख़ास तौर से (विशेषकर) इस्लाम का पैग़ाम हिन्दी भाषियों को पहुंचाना फ़र्ज़ है, जो अब तक उर्दू फ़ारसी और अ़रबी में है, अगर कोशिश की जाए तो उर्दू फ़ारसी की दीनी इस्तिलाहात (धार्मिक परिभाषाएं) हिन्दी में मुन्तक़िल (परिवर्तित) कर दी जाएं जब कि इन को रिवाज देने में एक सदी (शताब्दी)लग सकती है। लेकिन अ़रबी से तो छुटकारा मिल ही नहीं सकता इस लिए इस की फ़िक्र ज़रूरी है। हमारे बहुत से भाइयों का ख़याल है कि हिन्दी लिखावट में कोई ऐसी तब्दीली (परिवर्तन) जो पहले से हिन्दी भाषियों में प्रचलित नहीं है नहीं लाना चाहिए लेकिन मैं और मुझ जैसे हज़ारों भाई इस बात से मुत्तफ़िक़ (सहमत) नहीं है और हम सब की दिल व जान से यह कोशिश है कि हिन्दी लिपी में कोई ऐसी तब्दीली लाई जाए जिस से उर्दू के वह अल्फ़ाज़ (शब्द) जो अ़रबी फ़ारसी से आए हैं उन का तलफ़्फ़ुज (उच्चारण) न बिगड़े। उन हिन्दी अदीबों का एहसान है जिन्होंने उर्दू अल्फ़ाज़ को अपने अदब (साहित्य) में जगह दी चाहे तलफ़्फ़ुज़ बिगाड़ कर सही या यों कहिये कि हिन्दिया कर जैसे वायदा, मायने वग़ैरह लेकिन हम उर्दू वालों का जिन को हिन्दी भी आती है, फ़र्ज़ है कि हम हिन्दी अदीबों (साहित्यकारों) को न सही अपने हिन्दी भाषी मुस्लिम स्कालरों को हिन्दी लिपि में ऐसी तब्दीली लाने की दअ़वत दें जिस में उर्दू के सहीह़ अल्फ़ाज़ सहीह़ तलफ़्फ़ुज़ की अदायगी की सलाहीयत (योग्यता) हो।

एक नौजवान बोल रहा था गजब हो गया, इज्जत खाक में मिल गई।

گجب ہوگیا اجت کھاک میں مل گئی

यह जुमले उत्तर प्रदेश का पढ़ा लिखा हिन्दू नवजवान भी बोलता है और उूर्द से ना बलद (अपरिचित) मुस्लिम नवजवान भी। इसी तरह सिर्फ़ हिन्दी पढ़े मुस्लिम नवजवान से सुना गया : अजान हो गई जुहर की नमाज को चलो।

اجان ہوگئی جہر کی نماز کو چلو

इस से आगे यह भी सुना गया: सुबहान रब्बियल अजीम, सुबहान रब्बियल आला, अल्लाहुम्मा अऊजुबिक मिन अजाबे जहन्नम यह भी सुना गया। न हुआ हजरत उमर का जमाना, कितना खैर व बरकत का था उमर बिन अब्दुल अजीज का जमाना।

سبہان ربیل اجیم، سبہان ربیل آلا

اللہم اوج بک من اجاب جہنم

نہ ہوا ہجرت امر کا جمانا،
کتنا کھیر و برکت کا تھا
اُمر بن ابدل اجیج کا جمانا

इसके आगे कुर्आने मजीद के अल्फ़ाज का ग़लत तलफ़्फ़ुज पेश करने की हिम्मत नहीं।

क्या इस के बअ़द भी हम दीनी काम करने वाले उर्दू दानों का (जो हिन्दी भी अच्छी तरह जानते हैं) फ़र्ज़ नहीं है कि हम हिन्दी में ऐसी तब्दीली लाएं जिससे हिन्दी भाषियों के दिमाग भी मुतअस्सिर न हों और हम अ़रबी फ़ारसी के अल्फ़ाज़ के सहीह़ तलफ्फुज की रहनुमाई कर सकें।

ऐसी तब्दीली की जा चुकी है, जो किसी हद तक रिवाज भी पा चुकी है लेकिन हमारे कुछ भाई अपनी गफ़लत से उसे नहीं अपनाए हुए हैं और कुछ भाई हिन्दी लिपी की महब्बत में इसे अच्छा नहीं समझते, हम दोनों भाइयों से दरख़्वास्त (अनुरोध) करते हैं कि वह मसअले की नज़ाकत को समझें और इस मअ़मूली (साधारण) तब्दीली को अपनाएं अगर्चि इस तब्दीली से लोग वाक़िफ़ हैं लेकिन वाक़िफ़कारों को याद दिलाने और ना वाक़िफ़ों को वाक़िफ़ (अवगत) कराने की ग़रज़ से इस तहरीर (लेख) में दुहरा रहा हूं।

यह तब्दीली सिर्फ़ नुक्तों (बिन्दियों) की है। ق क़, خ ख़, غ ग़, ف फ़, ز ज़ यह पांच हर्फ़ (अक्षर) तो एक ज़माने से हिन्दी अदब में मौजूद हैं और उत्तर प्रदेश ख़ास तौर लखनऊ और अवध के क़स्बात के पढ़े लिखे

मुआशरे (समाज) में अपने सहीह मख़रज़ के लिये राइज रहे हैं, अगर्चि बअ़ज़ मुतअ़स्सिब हिन्दी अदीबों ने उर्दू अल्फ़ाज़ तो अपनाए मगर लिखने में इन हुरूफ़ के नीचे नुक़्ते रखने को पसन्द न किया।

अब ज़रूरत पड़ी तो कुछ और ह़रफ़ों के नीचे नुक़्ते दिये गये जैसे : ह़ ح अ़ ع अब पांच के बजाए सात ह़र्फ़ नुक़्ते वाले हो गये।

उर्दू के ظ ض ز ذ के लिए ज़ ही का इस्तिअ़माल है, इस लिए कि उर्दू वाले अ़ुमूमन इन के मख़ारिज में फ़र्क़ नहीं करते। लेकिन हम को तो ज़रूरत पर अ़रबी अल्फ़ाज़ भी हिन्दी में लिखने हैं इस लिए अ़रबी ह़ुरूफ़ के सहीह मख़ारिज के लिए और भी तब्दीलियां लाना है। इस सिलसिले में शायद आप जानते हों और न जानते हों तो मैं बताऊं कि लखनऊ के एक पंडित आं जहानी नन्द कुमार अवस्थी ने उ़लमा से रहनुमाई लेकर हिन्दी ह़रफ़ों में नुक़्तों का इज़ाफ़ा करके पूरे क़ुर्आन मजीद का मत्न हिन्दी लिपी में छाप दिया, हर पेज पर एक कोने में अ़रबी अ़क्स भी दिया है, सामने के पेज पर मौलाना फ़तेह मुहम्मद खां जालन्धरी के उर्दू तर्जमे का हिन्दी तर्जमा (अनुवाद) भी है। इस क़ुर्आने शरीफ के १५ एडीशन छप चुके हैं। हम को उन की मेह़नत से फ़ाइदा उठाना चाहिए उन के अ़रबी हुरूफ़ हिन्दी लिपि में पेश किये जाते हैं –

ث स, ح ह़ خ ख़, ج ज,
ذ ज़, ص स़, ض ज़, ط त़, ظ ज़,
ع अ़ غ ग़, ف फ़ ق क़ उन्होंने
ع की सारी शक्लें अ़ ही से लिखी हैं इस तरह अ़ आ़ अ़ि अ़ी अ़ु अ़ू अ़े अ़ै अ़ो, अ़ौ, आप चाहें तो अ़ि अ़ी, अ़ू, अ़ु, अ़े अ़ै के बजाए इ़ ई़ उ़, ऊ़, ए़, ऐ़, लिखें, साकिन ह़र्फ़ बीच में आया है तो आधा लगाया है, लफ़्ज़ के आख़िर ह़र्फ़ के नीचे हलन्त न हुआ तो उसे ज़बर की आवाज़ से पढ़ा जैसे (अन्त) मद की उन्होंने जो शक्ल बनाई है वह कम्प्यूटर में नहीं है मैं कहता हूं इस के लिए आ की दो मात्राएं लगा दें। इस तरह हम ज़रूरत पर क़ुर्आने शरीफ़ के अल्फ़ाज़ लिख कर तह़रीर के ज़रीअ़े सिर्फ़ हिन्दी जानने वालों तक उनकी आवाज़ पहुंचा सकते हैं यह काम मजबूरी और ज़रूरत का है, फिर भी सिर्फ़ देख कर इनका सहीह पढ़ना मुम्किन नहीं जानकार से उन की आवाज़ सीखना ज़रूरी है। वैसे हम मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि जो क़ुर्आन पढ़ना जानते हैं वह न जानने वालों को कम से कम इतना ज़रूर सिखा दें कि वह नमाज़ अदा कर सकें।

हिन्दी लिपि में उर्दू लिखने में फारसी तरकीबों का मसअला भी अहम है, जैसे राहे खुदा अब इस को अगर راہے خدا पढ़ा जाए तो बिल्कुल ग़लत है, इस के लिये जान कार बताए कि राहे को कम खीचों, पढ़ कर बताए, या फिर राहि खुदा लिखा जाए, अवस्थी जी ने इस के लिए ए की मात्रा को टेढ़ा किया जब सीसे के हुरूफ थे तो उन्होंने ढाल लिया था, उसी से कम्पोज़ करवाते थे। उसकी शक्ल ' यह थी कम्प्यूटर में तो यह शक्ल फ़ीड है नहीं, अगर हिन्दी प्रोग्राम वाले इसे फ़ीड कर दें तो आसानी हो जाए। कुछ लोग इसे इस तरह लिख रहे हैं "राह–ए–ख़ुदा" यह तो बिल्कुल ग़लत है यह तरीक़ा फ़ारसी की ऐसी तरक़ीब में इस्तिअमाल किया गया है जिस के पहले लफ्ज़ का आख़िरी ह़र्फ़ हाए मुख़्तफ़ी है जैसे, ख़ान–ए–ख़ुदा गुर्ब–ए–मिस्कीन, रौज़–ए–अनवर वग़ैरह।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

को अच्छे प्रशिक्षित (तर्बियत याफता) अध्यापक ही दूर कर सकते हैं और तालीम के स्तर को बुलन्द उद्देश्ययुक्त (बामक्सद) बनाकर आज के चैलेंजों का मुकाबला करते हुए योग्य और तेज तर्रार नस्ल तैयार कर सकते हैं। अतः अरबी मदरसों से शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों के प्रशिक्षण की जरूरत को महसूस करते हुए उलमाए किराम, मिल्लत के बुद्धिजीवियों, अध्यापकों और शिक्षण संस्थाओं (तालीमी इदारों) के जिम्मेदारों को सर जोड़र कर पूरी गम्भीरता से गौर करने और योजना बनाने की जरूरत है ताकि मौजूदा परिस्थितियों में अरबी मदरसों की तालीम प्रभावशाली, लाभप्रद, उद्देश्य पूर्ण और उच्च स्तरी बनाकर हिन्दुस्तानी मुसलमानों की एक कर्मठ, तेज तर्रार, योग्य और बुद्धिमान नस्ल पैदा करने को यकीनी बनाया जा सके।

जहेज़ की लअ़नत

है आम हर समाज में लअनत जहेज़ की
बढ़ती ही जा रही है यह ज़हमत जहेज़ की
जिस घर में लड़कियां हैं वहां वालिदैन की
बेकल किये हुए है मुसीबत जहेज़ की
इस्लाम में निकाह़ इक आसान काम था
इस्लाम के मिज़ाज में दाखिल थी सादगी
लोगों ने उस पे रंगे तकल्लुफ़ चढ़ा दिया
ऐ मिल्लत और मुल्क के ज़ी होश वालिदैन
गर चाहते हो दिल से कि ये ख़त्म हो जहेज़
गर चाहते हो दिल से कि ये रस्मे बद मिटे
तो फिर न लो जहेज़ किसी से न दो जहेज़

अरबी मदरसों में अध्यापकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता

डा० एस० नसीम आजमी

१८५७ की पहली जंगे आजादी में हिन्दुस्तानियों की असफलता और हिन्दुस्तानी मुसलमानों की राजनीतिक, कल्चरल और माली बदहाली के नतीजे में हिन्दुस्तानी मुसलमानों में दो तरह के शिक्षा आन्दोलन की शुरूआत हुई, एक आधुनिक शिक्षा जिसका पथ प्रदर्शन सर सय्यद अहमद खां ने किया और अलीगढ़ कालेज (मौजूदा मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़) की स्थापना की। दूसरी मजहबी तालीम की तहरीक जिसका मार्गदर्शन मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानवतवी ने किया और दारूल उलूम देवबन्द की स्थापना अमल में आई। सर सय्यद अहमद खां की तहरीक अलीगढ़ तहरीक के नाम से हुई तो मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानवतवी की तहरीक ''तहरीके देवबन्द'' के नाम से जानी जाती है। सर सय्यद अहमद खां की अलीगढ़ तहरीक के नतीजे में हिन्द व पाक उप महाद्वीप में आधुनिक शिक्षा की बहुत सी शिक्षा संस्थानों की स्थापना हुई मौलाना मुहम्मद कासिम नानवतवी की तहरीके मदरसा स्थापना के अन्तर्गत पूरे अविभाजित भारत में अरबी मदरसों का जाल बिछने लगा जिस के नतीजे में आज हिन्दुस्तान में हजारों की संख्या में अरबी मदरसे कायम हैं और दिन प्रतिदिन उन की संख्या में इज़ाफ़ा होता जा रहा है जिनकी वर्तमान संख्या लगभग छियासी हजार (८६०००) है।

हिन्दुस्तान में अरबी मदरसों की इतनी बड़ी संख्या और उनमें पठन पाठन (दर्स व तदरीस) की सेवा के लिए रखे गये हजारों अध्यापकों के प्रशिक्षण (तर्बियत) का पूरे हिन्दुस्तान में कोई नियमपूर्वक (बाकाएदा) संस्था नहीं है जिस से इन मदरसों का तालीमी स्तर दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है। अतएव इन हालात में इस समय नये अरबी मदरसों की स्थापना से कहीं अधिक अरबी मदरसों में अध्यापकों की ट्रेनिंग संस्थाओं के स्थापना की आवश्यकता है। इसके अतरिक्त हिन्दुस्तान में फैले हुए इन अरबी मदरसों के एक केन्द्रीय बोर्ड की भी जरूरत है ताकि आए दिन मदरसों पर लगाये जाने वाले आरोपों व दोषारोपण का प्रभावी ढंग से जवाब दिया जा सके और इन मदरसों की तालीम व तालीमी स्तर, तालीमी तरीकों और तालीम के उद्देश्यों में यकसानियत के साथ–साथ एकता व सहयोग की फज़ा (वातावरण) भी कायम की जा सके।

अरबी मदरसे हिन्दुस्तानी मुसलमानों के मजहबी और अखलाकी (सदाचरण) और रूहानी तालीम का बहुत बड़ा साधन हैं लेकिन तालीम के इसी एक जरिये से हिन्दुस्तानी मुसलमानों की सभी तरह की तालीम उन्नति सम्भव नहीं है। इस लिए आज हिन्दुस्तान में जगह जगह बुनियादी और माध्यमिक (प्राइमरी और हायर सेकेण्ड्री) तालीमी संस्थाओं के स्थापना की भी जरूरत है ताकि मिल्लत (समुदाय) में मौजूद दीनी तथा जनरल शिक्षा के असंतुलन की दशा को दूर किया जा सके। इस के लिए अरबी मदरसों में बाज जरूरी जनरल विषयों को शामिल किया जाए और मुस्लिम अल्प संख्यक तालीमी संस्थाओं में मजहबी और अखलाकी (नैतिक) शिक्षा की तालीम का बन्दोबस्त किया जाए क्योंकि आज मुसलमानों के लिए एक संतुलित तालीम व्यवस्था की अति अधिक आवश्यकता है।

हिन्दुस्तान में हजारों की संख्या में कायम अरबी मदरसों में मजहबी, अखलाकी, ओरियन्टल और आंशिक तौर पर जनरल विषय पढ़ाए जाते हैं। इस प्रकार हिन्दुस्तानी संविधान (दस्तूर) के अनुसार हिन्दुस्तान की सब से बड़े मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय ने केवल अपने बलबूते पर एक मुतबादिल (समानान्तर) तालीमी व्यवस्था कायम कर रखी है जहां करोड़ो की संख्या में मुस्लिम बच्चे शिक्षा प्राप्त करके देश के शत प्रतिशत शिक्षित बनाने के राष्ट्रीय योजना को पूरा करने में बिना किसी सरकारी सहायता व प्रशंसा की तमन्ना के कार्यरत (मसरूफे अमल) हैं। लेकिन इन मदरसों में जो अध्यापक तालीम देते हैं वह अप्रशिक्षित (गैर तर्बियतयाफता) होते हैं जिस से यह शान्दार तालीमी व्यवस्था विद्यार्थियों के भविष्य को उज्जवल बनाने में असफल होती जा रही है और कौम व मिल्लत को उन से जितना और जिस अन्दाज

का तालीमी लाभ प्राप्त होना चाहिए उसमें दिन बदिन कमी होती जा रही है। अतः इन मदरसों में अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण संस्थाओं (तर्बियती एदारों) की स्थापना की जरूरत है जहां शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों की कम से कम दो साल की प्रभावी और नियमित ट्रेनिंग का बन्दोबस्त हो ताकि इन अरबी मदरसों में प्रशिक्षित अध्यापक पहुंच कर मदरसों के तालीमी स्तर को बुलन्द कर सकें वहीं मुस्लिम बच्चों में मौजूदा स्वाभाविक योग्यताओं को उभार कर हिन्दुस्तानी मुसलमानों की ऐसी योग्य और हौसलामन्द नस्ल तैयार कर सकें जिस की आने वाले समय में जरूरत पड़ने वाली है।

हिन्दुस्तान भर में फैले हजारों अरबी मदरसों के लिए प्रशिक्षित अध्यापकों की तैयारी का काम मुसलमानों के बड़े शिक्षा संस्थानों द्वारा भी किया जा सकता है। जैसे मुस्लिम यूनिवर्सिटी अलीगढ़, जामिया मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली, हमदर्द यूनिवर्सिटी नई दिल्ली, मौलाना आजाद नेशनल यूनिवर्सिटी हैदराबाद, दारूल उलूम देवबन्द नदवतुल उलमा, लखनऊ। समय और परिस्थितियों के अनुसार प्रशिक्षण की इस योजना को पूरा किया जा सकता है।

मुस्लिम अल्पसंख्यक स्कूलों और अरबी मदरसों के अध्यापकों के लिए अल्पकालीन (कलील मुद्दत) प्रशिक्षण कोर्स कई वर्षों से सैयिद हामिद साहब (चांसलर हमदर्द यूनिवर्सिटी दिल्ली) की देख रेख में चल रहा है। यह बहुत ही प्रशंसनीय है। इसे और भी विस्तार देने की आवश्यकता है। अरबी मदरसों और अल्पसंख्यक मुस्लिम स्कूलों के अध्यापकों को इस स्कीम से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए और स्कूल व मदरसों के प्रबन्धकों को भी इस प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए अध्यापकों को अवसर देना चाहिए तथा साथ साथ उनको उत्साहित करना चाहिए। बाज अरबी मदरसे के जिम्मेदारान इस प्रकार के प्रशिक्षण प्रोग्रामों में अपने अध्यापकों को न केवल शामिल होने की अनुमत नहीं देते बल्कि इसे समय और तालीम की हानि समझते हैं। इन की यह नकारात्मक सोच वास्तव में तालीम के असल उद्देश्य और शिक्षा और ज्ञान की रूह से अज्ञानता के कारण है। क्योंकि मदरसों के अध्यापकों का प्रशिक्षण आज मिल्लत की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

पठन पाठन का काम बहुत ही अहम काम है। यह नस्लों के निर्माण (तामीर व तशकील) का काम है। रचना और पैगम्बराना काम है। इस के लिए उचित योग्यता, व्यापक सोच, ज्ञान को स्थानान्तरित करने के मिज़ाज और हुनरमन्दी का होना ज़रूरी है जिसके लिए व्यापक ज्ञान व जानकारी के साथ साथ बेहतर प्रशिक्षण तथा जानकारी की जरूरत होती है। और जब तक अध्यापकों के अच्छा प्रशिक्षण का इंतजाम न होगा हिन्दुस्तानी मुसलमानों में शिक्षा प्राप्ति के लिए तालीमी जागरूकता नहीं पैदा की जा सकती और ना ही तालीम के स्तर को दिन प्रतिदिन गिरने से बचाया जा सकता है। अरबी मदरसों के स्तर के गिरने का एक बड़ा कारण यह भी है कि मदरसों के जिम्मेदारान अपने सगे संबंधियों सिफारिशी लोगों को पढ़ाने के लिए रख लेते हैं। जिससे गिरोह बन्दी और पठन पाठन से गैर दिलचस्पी, योग्य अध्यापकों की दिलशिकनी और उत्साह की कमी आम हो गई है।

अरबी मदरसों में आम तौर पर गरीब और निर्धन विद्यार्थी ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। जिनका घरेलू माहौल गैरतालीमी और मां बाप अशिक्षित होते हैं। बाज लोग जिनका घरेलू माहौल कुछ बेहतर होता है और खुद भी पढ़े लिखे होते हैं, वह अपने उन्हीं बच्चों को मदरसों की तालीम दिलाते हैं जो उनकी नजर में नाकारा, मंद बुद्धि, झगड़ालू और जिस्मानी तौर पर कुरूप होते हैं और जो बच्चे बुद्धिमान, मेहन्ती होते हैं उन्हें अधिकतर स्कूल और कालेजों में दाखिला दिलाते हैं। इस तरह अच्छे घरों के जो बच्चे मदरसों में आते हैं वह भी अधिकांश मंदबुद्धि, बदमिजाज़ और झगड़ालू होते हैं। अतः अरबी मदरसों के अध्यापकों के प्रशिक्षण (तर्बियत) की योजना बनाते समय इन बातों को भी ध्यान में रखना चाहिए ताकि इन तर्बियती मदरसों से जो अध्यापकों की टीम तैयार हो वह बुनियादी और माध्यमिक (सानवी) तालीम को प्रभावशाली बनाने के साथ साथ विद्यार्थियों को पढ़ाने में जो कठिनाई पेश आए उस को सफलता से हल किया जा सके और नई नस्ल योग, हौसला मंद बन सके।

अरबी मदरसों के लिए अच्छे और योग्य अध्यापक की आज सबसे अधिक जरूरत है क्योंकि मुसलमानों की बुनियादी और माध्यमिक (सानवी) तालीम का सबसे बड़ा और अहम जरिया यही अरबी मदरसे हैं और इन मदरसों में पैदा होने वाली तालीमी कमजोरियों

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के
आख़िरी हज का खुतबा (व्याख्यान)

१. लोगो ! मैं ख्याल करता हूं कि मैं और तुम फिर कभी इस मजलिस में नहीं होंगे।

२. लोगो! तुम्हारे खून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तें एक दूसरे पर ऐसी ही पवित्र हैं जैसा कि तुम आज के दिन के इस शहर को इस महीने को पवित्र समझते हो। लोगो तुम्हें जल्द खुदा के सामने हाजिर होना है और तुम से तुम्हारे आमाल (कर्मों) के बारे में सवाल फरमाएगा। खबरदार मेरे बाद गुमराह (पथ भ्रष्ट) न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें काटने लगो।

३. लोगो! जाहीलियत (अज्ञानता) की हर एक बात मैं अपने कदमों के नीचे पामाल (पद दलित) करता हूं। जाहिलियत के कत्लों के तमाम झगड़े मलियामेट करता हूं। पहला खून जो मेरे खानदान का है अर्थात इब्ने रबीआ बिन हारिस का खून जो बनी सअद में दूध पीता था और हजील ने उसे मार डाला था, मैं छोड़ता हूं।

जाहिलियत के जमाने का सूद मलयामेट कर दिया गया। पहला सूद अपने खानदान का जो मैं मिटाता हूं। वह अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है, वह सारे का सारा छोड़ दिया गया।

४. लोगो ! अपनी बीवियों के मुतअल्लिक अल्लाह से डरते रहो। खुदा के नाम की जिम्मेदारी से तुम ने उन को बीवी बनाया और खुदा के कलाम से तुम ने उस का शरीर अपने लिए हलाल बनाया है।

तुम्हारा हक़ औरतों पर उतना ही है कि वह तुम्हारे बिस्तर पर किसी ग़ैर को (कि उस का आना तुम को नागवार है) न आने दें लेकिन अगर वह ऐसा करें तो उन को ऐसी मार मारो जो ज़ाहिर ने हो जोर से न मारो। औरतों का हक़ तमु पर यह है कि तुम उन को अच्छी तरह खिलाओ अच्छी तरह पहनाओ।

५. लोगो! मैं तुम में वह चीज छोड़ चला हूं कि अगर उसे मजबूत पकड़ लोगे तो कभी गुमराह न होगे – वह कुर्आन अल्लाह की किताब है।

६. लोगो ! न तो मेरे बाद कोई पैग़म्बर है और न कोई नई उम्मत पैदा होने वाली है। खूब सुन लो कि अपने पालनहार की इबादत (उपसना) करो और पांचों वक्त नमाज अदा करो। साल भर में एक महीना रमजान के रोजे रखो। मालों का जकात निहायत खुशी के साथ दिया करो। खान–ए–खुदा का हज बजा लाओ।

और अपने हुक्काम की इताअत (आज्ञापालन) करो जिस का बदला यह है कि तुम जन्नत में दाखिल होगे।

तुम जानते हो कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। तुम सब बराबर हो। किसी को दूसरे पर बड़ाई हासिल नहीं है सिवाए तक़वा के (नेक अमल करने वाले के)।

७. अगर क़ियामत के दिन तुम से मेरे बारे में पूछा जाएगा मुझे बताओ तुम क्या जवाब दोगे?

सबने कहा हम इस की गवाही देते हैं कि –

आपने अल्लाह के अहकाम (आदेशों) हम को पहुंचा दिये।

आपने रिसालत व नबूवत का हक अदा कर दिया आपने हम को खोटे खरे की बाबत अच्छी तरह बता दिया।

(उस समय) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी शहादत की उंगली (अंगूठे के बाद वाली उंगली) को उठाया। आसमान की तरफ उंगली उठाते थे और फिर लोगों की तरफ झुकाते थे (फरमाते थे) ऐ खुदा सुन ले तेरे बन्दे क्या कह रहे हैं। ऐ खुदा गवाह रहना कि यह लोग क्या गवाही दे रहे हैं। ऐ खुदा गवाह रहना कि यह लोग क्या गवाही दे रहे हैं।

८. देखो ! जो लोग मौजूद हैं वह उन लोगों को जो मौजूद नहीं है इस की तबलीग (प्रचार) करते रहें। मुम्किन है कि बाज सुनने वालों से वह लोग अधिकतर इस कलाम (व्याख्यान) को याद रखने और हिफातज करने वाले हों जो फिर तबलीग की जाये।

> अपने रब की राह की ओर लोगों को हिक्मत और अच्छी नसीहत के ज़रिऐ बुलाओ।
>
> (पवित्र कुर्आन)

जामुन

इदारा

जामुन एक मशहूर फल है, अपने मजे और साइज के लिहाज से इस की कई किस्में हैं, उर्दू लुगत वाले इस को जामन लिखते हैं और मुअन्नस (स्त्री लिंग) बताते हैं, जब कि हिन्दी लुगत वाले इस को जामुन लिखते और मुजक्कर बोलते हैं। हम खुद जामुन बोलते हैं और मुअन्नस इस्तिअमाल करते हैं।

बड़ी जामुन खाने में खुशगवार और मीठी होती है, लखनऊ में इसे खाने से पहले एक मिट्टी के बरतन (मेलिया) में रख कर जरा नमक डाल कर हिलाते हैं इस को वघारना कहते हैं। बड़ी जामुन को फलेन्दा भी कहते हैं और फलेन्दा मुजक्कर इस्तिअमाल करते हैं। छोटी जामुन आम तौर से जामुन ही कहलाती है। बहुत छोटी जमुनी कहलाती है। बअज जामुन बड़ी मीठी और कुछ कसैली होती है, बअज जामुन या जमुनी खट्टी और कसैली होती है। कहते हैं नहार मुंह जामुन न खाएं कि नुक्सान करती हैं खाना खाने के बअद खाएं, जामुन या फलेन्दा जियादा मिक्दार में न खाएं कि कभी मेअदे में जम कर खतरा पैदा कर देती है। तजरिबा है कि जामुन खाकर एक, दो आम खा लें तो जामुन आसानी से हज्म हो जाती है, इसी तरह आम खा कर चन्द जामुनें खा लें तो आम हज्म हो जाता है।

जामुन दवा के तौर पर भी काम आती है। इसका मिजाज सर्द व खुश्क है। दस्त में जामुन की गुठली का गूदा ५ ग्राम पीस कर पिलाएं फाइदा होगा। जामुन के दरख्त की छाल पानी में उबाल कर दान्तों की तक्लीफ में कुल्ली कराएं फाइदा होगा। जामुन की लकड़ी का कोइला बारीक पीस कर शीशी में रख लें और बतौर मंजन इस्तिअमाल करें दान्तों के लिए मुफीद है। शकर का मरीज जामुन और आम रस बराबर बराबर मिलाकर पिये फाइदा होगा। जामुन की छाल बारीक पीस कर गुनगुने पानी में घोल कर गरारा करने से गले की तक्लीफ दूर हो जाती है, मसूढ़ों को भी फाइदा पहुंचता है। जामुन का सिर्का मेअदे और आन्तों के अमराज में मुफीद है। लेकिन याद रहे बाजार का सिर्का आमतौर से दवाओं से तैयार किया जाता है, लिहाजा सिर्का वही तलाश कीजिए जो दीहात में तैयार किया गया हो। आप खुद तैयार कर सकते हैं। चार पांच किलो जामुन खरीद कर उस में थोड़ा पानी मिला कर मल डालें, गुठलियां अलग कर दें या गुठली समेत एक घड़े में भर दें, घड़े के मुंह पर कपड़ा बांध कर रोजाना दो घण्टे धूप में रख दें एक हफ्ते के बअद उसे देखें झाग उठ रही होगी। फिर धूप में उसी तरह रखें, अब खोल कर देखें उस में कीड़े पड़ गये होगे उसे छान कर बोतल में रख लें यह अस्ली सिर्का है। पेट के दर्द में जरा नमक मिला कर २५ ग्राम पिलाएं। चाहिए कि शूगर वाले जामुन की फस्ल में पाबन्दी से रोजाना ५० ग्राम जामुन खाएं आराम मिलेगा। शूगर की यूनानी दवाओं में जामुन की गुठली जरूर पड़ती है। जामुन अल्लाह की निअमत है,अल्लाह की इस निअमत पर हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं।

(पृष्ठ ४० का शेष)

के दो रोजा अधिवेशन में पत्रकारों से अलग से बात करते हुए कही। सिक्रेटरी जनरल ने कहा कि यह शान्ति सेना ओ०आई०सी० की कमान में रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि शान्ति सेना इराक जैसी हिंसक समस्याओं को हल करने में प्रभावी भूमिका अदा कर सकती है।

टेलीवीज़न

शमीम बहराएची

चलन जब से टीवी का घर घर हुआ है
बुराई का बाढ़ हर तरफ आ रहा है
ये निष्पाप बच्चे थिरकने लगे हैं
थिरकने लगे हैं मटकने लगे हैं
हैं अक्सर ही बच्चों में फिल्मी अदाएं
कहो इन से कुछ तो ये आंखें दिखाएं
है माहौल गन्दा बहुत ही घरों का
बुराई के पुत्ले जिला पा रहे हैं
हया लड़कियों में हर अंग दिखला रही है
है फैशन की चाहत दिलों में समाई
नहीं सूझती अब भलाई बुराई
जवां साल लड़के हैं आजाद बिल्कुल
हैं अख्लाक उन के तो बरबाद बिल्कुल
खड़े हो के करते हैं पेशाब वो तो
नहीं टोकते उन के मां बाप उनको
तुम्हें उन का चेहरा सफा चट मिलेगा
लिबासों में उनके नया कट मिलेगा
न इल्मों हुनर है न दौलत है पल्ले
मिलेंगे मगर उन की जुल्फों में छल्ले
हैं मां बाप उन से परेशान हर दम
सवार उन पे रहता है शैतान हर दम
है सब मशगलों में पसन्दीदा किरकट
बदलते हैं रग यूं कि जैसे हों गिरगट
नहीं अक्ल उन की लगी है ठिकाने
महब्बत के पढ़ते हैं झूठे फसाने
वही मैगज़ी उनको दिल से है भाती
हो तस्वीर औरत की जिस में बला की
है मजहब से अपने उन्हें खुद अलर्जी
शरीअत में अपनी चलाते हैं मर्जी
जो गोदी में टीवी के बच्चे पलेंगे
तुम्हीं खुद बताओ वो कैसे बनेंगे

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी

● आश्चर्यपूर्ण बीमारी से हर दिन इराक में तीन अमेरिकी फौजियों की मौत :

इराक की राजधानी बगदाद में अमेरिकी फौजियों में आवश्चर्य पूर्ण बीमारी की महामारी फैल जाने से प्रतिदिन अवसतन तीन फौजियों की मौत हो रही है। अलमुजतमअ पत्रिका ने यह समाचार प्रकाशित किया है कि बगदाद के ग्रीन ज़ोन में स्थित इब्नुल नफीस नामी अस्पताल के डा० के कहने के अनुसार यह महामारी विभिन्न क्षेत्रों में ठहरे हुए अमेरिकी फौजियों के दर्मियान फैलती जा रही है। इस अस्पताल के डाक्टर ने स्पष्ट करते हुए कहा कि इस बीमारी में रोजाना औसतन तीन फौजी की मौत हो जाती है। अलमुजतमा पत्रिका के अनुसार पहले दिन फौजियों में सख्त किस्म की खांसी आती है। फिर उन का आमाशय (मेअ़दा) खान पान को स्वीकार नहीं करता, दूसरे दिन काले रग का दस्त और पेचिस शुरू हो जाती है। जिस में खून के लोथड़े भी पाये जाते हैं जिस की वजह से फौजियों में कमजोरी पैदा हो जाती है और वह बेहोश हो जाते हैं।

बीते पांच दिनों में साठ से अधिक फौजी अस्पताल में भरती हो चुके हैं जिन में चार की मौत हो चुकी है और शेष मरीजों को तुरंत इलाज के लिए जर्मनी में स्थित फौजी अस्पताल को रेफर कर दिया गया है।

● अमेरिका का इरान पर हमला करने की कोई याजना नहीं

अमेरिकी रक्षा मंत्री राबर्ट गैट्स ने एक बार फिर कहा कि अमेरिका का इरान पर हमला करने की कोई योजना नहीं है। इस से पहले इरान ने कहा था कि अगर उसके विवाद ग्रस्त ऐटामिक प्रोग्रामों पर हमला होता है तो वह अमेरिकी प्रतिष्ठानों को निशाना बनाएगा। मिस्टर गैट्स ने एक प्रेस कानफरेंस में कहा " वह कभी कभी ऐसी धमकी देते रहेते हैं लेकिन इरान पर हमला करने का हमारा कोई इरादा नहीं है।

● बुश अरब देशों के नापसन्दीदा नेताओं की सूची में सबसे ऊपर:

वाशिंगटन के एक ताजा सर्वे से पता चलता है कि अमेरिका से अरबों की नाराज़गी गहरी हो गयी है। यदि अमेरिका अब इसराईल समझौता कराने में सफल हो जाता है तो बिगड़ी हुई बात ठीक हो सकती है। इस सर्वे में छः अरब देशों के ३८५० लोगों से पूछा गया था जिस के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज वाकर बुश इंतिहाई नापसदीदा नेता हैं और इसराईल और अमेरिका ईरान से कहीं अधिक बड़ा खतरा है। ६७ फीसद लोगों ने कहा अमेरिका मध्यपूर्व में एक मुकम्मल सन्धि करके अपनी इमेज ठीक कर सकता है। ३५ फीसदी लोगों का विचार था कि अमेरिका की इमेज उस समय ठीक होगी जब उसकी फौज इराक से चली जाएगी। सर्वे के अनुसार बुनियादी तौर पर लोग अरब इसराईल विवाद की रोशनी ही में अमेरिका को आंकते हैं मिस्र, सऊदी अरब, उर्दुन, लिबनान, मराकश और संयुक्त अरब अमीरात में लोगों से पूछा गया था कि वह अपने देश के बाहर विश्व के किस लीडर का सबसे अधिक नापसन्द करते हैं। ३८ फीसदी लोगों ने बुश का नाम लिया। ११ फीसदी लोगों ने कहा कि इसराईल के पूर्व प्रधान मंत्री ऐरिल शेरोन विश्व का सबसे नापसन्दीदा व्यक्ति हैं। सात प्रतिशत लोगों के नजदीक वर्तमान प्रधानमंत्री यहूद अलबर्ट सबसे अधिक ना पसन्दीदा हैं। तीन फीसद लोगों ने ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर का नाम लिया।

● इस्लामी देशों को अपनी शान्ति सेना बनाने की सलाह:

इस्लामी कान्फ्रेन्स के जनरल सिक्रेटरी अकलमुद्दीन ने मुस्लिम देशों की एक शान्ति सेना बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि जो मुस्लिम देश बदअमनी या खाना जंगी का शिकार हों वहां उसे ताएनात किया जा सके। उन्होंने कहा कि मुस्लिमदेशों के पास ऐसा कोई मैकनिज़्म मौजूद नहीं है। और मुझे लगता है कि वर्तमान परिस्थितियों में शान्ति सेना की सख्त जरूरत है। उन्होंने यह बात यहां मुस्लिम देशों के पार्लियामेंट सदस्यों

(शेष पृष्ठ ३६ पर)